ISSN : 2436-5017

हिंदी साहित्य की अंतरराष्ट्रीय त्रैमासिक ई-पत्रिका

हिंदी की गूँज

वर्ष 2, अंक -6 (अक्टूबर-दिसंबर 2021)

हिंदी कल्चर सेंटर, जापान की पहल

हिन्दी की गूँज

संरक्षक

रमा शर्मा जापान

इंद्रजीत शर्मा (अमेरिका)

प्रधान संपादक

रमा शर्मा (जापान)

संपादक

विनोद पाण्डेय

सह संपादक

उपासना सियाग

प्रबंध सम्पादक

कपिल कुमार (बेल्जियम)
शामलाल पुरी (लंदन)

वरिष्ठ परामर्श दाता

डॉ हरीश नवल जी(प्रसिद्ध व्यंग्यकार)

विदेश प्रतिनिधि

कपिल कुमार (बेल्जियम)
शामलाल पुरी(लंदन)
श्वेता सिंह उमा (रशिया)

भारतीय प्रतिनिधि

पूनम माटिया (नई दिल्ली)
डॉ मोनिका देवी (यू पी)
डॉ दिप्ती गौर (मध्य प्रदेश)

सहयोगी प्रतिनिधि

आलोक रंजन पांडेय (लोक बात टी वी)
डॉ पुष्पा रानी(कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी)
डॉ परम प्रकाश (बोध गया यूनिवर्सिटी)

ज्योतिषाचार्य

डॉ विनय भारद्वाज
बोध गया विश्वविद्यालय

तकनीकी सहयोग

जे पी द्विवेदी
गाजियाबाद

संपादकीय कार्यालय

त्सुकुबा सिटी, टोक्यो ,जापान

व्हट्सअप नंबर -00818038529320
00818042417303

ईमेल hindikigoonj.jp@gmail.com
hindikeegoonj@gmail.com

Twitter

@hindikigoonj

यू ट्यूब चैनल-

https://youtube.com/channel/UC2XvCU6zq0FKYqVsQsSONkA

संपादन, संचालन, प्रकाशन एवं सभी सदस्य पूरी तरह अवैतनिक, अव्यवसायिक !

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं ।संपादक तथा प्रकाशक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं ।प्रकाशित रचनाओं के मौलिक होने का उत्तर दायित्व लेखक पर होगा । पत्रिका ISSN (जापान) नंबर के साथ जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्टूबर में प्रकाशित होगी।
विशेषांक ISBN (जापान) के साथ प्रकाशित होंगे

हिन्दी की गूँज

अनुक्रम

संपादकीय

- डॉ रमा शर्मा /5
बदलाव के साथ स्वयं को समायोजित करने का गुण हर परिस्थिति में कारगर-पूनम माटिया/6
अपनी बात- विनोद पाण्डेय/7

आलेख /निबंध /शोध लेख

खुसबु-नीविया/21-22
काव्य श्री-दिव्या माथुर-डॉ मुकेश कुमार मिश्र/30-32
बौद्ध कालीन भाषिक परिवेश एवं भाषागत विशेषताएँ-डॉ जयशंकर शुक्ल/33-35
हौसलों की उड़ान भरने दो बेटियों को-डॉ दीप्ति जोशी गुप्ता/36
मेरा अपना कमरा-नीलू गुप्ता/37-38
थाईलैंड में हिन्दी-श्रीमती शिखा रस्तोगी/48-49
विश्वनाथ त्रिपाठी विवाद : 'व्योमकेश दरवेश' और 'पाखी' का संदर्भ- डॉ. परम प्रकाश राय/55-56

गीत /गजल /कविता

गजल-विज्ञान व्रत/10
अमन के वास्ते-डॉ रामवृक्ष सिंह/11
गजल-प्रशांत उपाध्याय/13
गजल-हर्ष वर्धन आर्य/15
युद्ध से है ज्यादा जरूरी-मुकेश कुमार सिन्हा/15
कोरोना-राकेश छोकर/20
करवाचौथ-डॉ श्वेता सिन्हा/20
एक दिन तू आयेगा जरूर-श्वेता सिंह उमा/21
यह शहर-जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/23
विवाहिता-सुनीता चाँदला/23
संवादों की अवसन्नता-निधि अग्रवाल/25
एक सपना है मेरा-स्मृति चौधरी/25
बारिस में भींगे हाइकु-नीलम वर्मा/26
माँ-डॉ सुनीता गौड़/26
दोहे-डॉ शरद नारायण खरे/29
गीत-मनीषा जोशी मनी/37
याद तुम आए-पूनम पंडित/38
तुम्हारे नाम की माला-सुनीता सिंह सरोवर/38
मैंने भी उनको पापा पापा कहकर खूब पुकारा था-रमा नीलदीप्ति/39
छप्पन व्यंजन-विनय विक्रम सिंह/40
अभिनेता सुशांत-डॉ दिग्विजय कुमार शर्मा/41
मन का क्या, वो तो बातें करता है-मीनाक्षी सुकुमारन/41
पर्यावरण संरक्षण-डॉ शंभू पँवार/42
बेटी-प्रतिभा गुप्ता/44
रचना खुद रचती है कवि को-संतोष कुमार 'प्रीत'/45
अनमना-सन्नी भारद्वाज/46
एक लप्पड़ मार के तो देख-कविता रावत/49
बारिस का मौसम-सूर्यदीप कुशवाहा/52
टिकने ना देंगे हम हिंदुस्तान में-डॉ नरेश कुमार 'सागर'/52
नारी- डॉ. मीरा त्रिपाठी पाण्डेय/57
आज कहूँ मैं-शोभना श्याम/57

लघुकथा /कहानी /रम्य रचना

शून्य-कपिल कुमार/8
घात लगाती बिल्ली-डॉ हरीश नवल/9
फुटबाल नहीं फिटबाल बन-डॉ प्रेम जनमेजय/9-10
हिन्दी रत्न-इंद्रजीत शर्मा/14
आपबीती- पूनम माटिया/16-17
संवाद-रोहित कुमार हैप्पी/17
नई सरहद का अनुभव-डॉ अनीता कपूर/17-19
कलमुहीं-डॉ शिप्रा शिल्पी सक्सेना/19
उपहास- डॉ नैना डेलीवाला/24
चेयर पर्सन-विनय पँवार/24
परवरिस-केशव मोहन पाण्डेय/33
गाय दुहाई-रोचिका अरुण शर्मा/40
मर्दों की शान में चंद शब्द-भावना ठाकर/42
मुक्ति का दीया-कल्पना मनोरमा/43
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ-राजीव तनेजा/46-47
अस्पताल और ठाने में बाढ़-अरविंद तिवारी/50
किताबों की अंतिम यात्रा-डॉ सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'/51
जीव्हा ,नैना, कर्ण चाहते हैं तखलिया-सौम्या दुआ/53
मीना अरोरा की दो लघुकथाएँ- मीना अरोरा/39
प्रतीक्षा- तरुणा पुण्डीर 'तरुनिल'/56
जूही की कली- डा.मधु आंधीवाल/57

पुस्तक चर्चा/समीक्षा

धूप ही धूप-सुधांशु शुक्ल/11-13
मारीसस हिन्दी साहित्य पर आधारित नई पुस्तकें-डॉ रमेश तिवारी/27-29
'कुछ मैं कहूँ,कुछ तुम कहो' काव्य संग्रह-वीणा अग्रवाल/56

इस अंक के चित्रकार

डॉ स्नेह सुधा नवल /16

जिस प्रकार हम आम का पेड़ लगाते ही हम उसका फल नहीं खा सकते,उसे रोंपना, सींचना पड़ता है और फिर समय आने पर ही वो फल देता है उसी तरह किसी भी पत्रिका की सफलता को हम एक दिन में नहीं अर्जित कर सकते, उसके लिये हमें बहुत से परिश्रम करने पड़ते हैं।आज के इस डिजिटल युग में पत्रिका से पाठकों को जोड़कर रखना बहुत चुनौतीपूर्ण कार्य है ।इसके लिए रचनाओं का चयन ,हर विधाओं की उपस्थिति ,लोकप्रिय और प्रतिष्ठित रचनाओं का समावेश इत्यादि बातों का ध्यान रखना बहुत आवश्यक होता है द्य पत्रिका में रचनाएँ किस तरह की हैं, आपके पाठक उसमें क्या पढ़ना चाहते हैं, उन्हें आप की पत्रिका से क्या आशाएं है, यह सब पूरा होने के बाद जब हर एक की जुबान पर जब आपकी पत्रिका का नाम आये, आप की पत्रिका की गूंज चारो ओर सुनाई पड़े तो ही आपकी पत्रिका सफल मानी जाती है । पिछले एक वर्षों में हिंदी की गूँज की उड़ान से हम सब संतुष्ट तो नहीं किन्तु बहुत आशान्वित हैं । आप सभी पाठकों और रचनाकारों का प्यार इस पत्रिका को निरंतर मिल रहा है ,जिससे हमें उम्मीद है कि हम जल्द ही विश्व के श्रेष्ठ हिंदी की साहित्यिक पत्रिकाओं में अपना नाम दर्ज कराने में सफल होंगे ।

मुझे यह बताते हुए बहुत खुशी और गर्व का अनुभव हो रहा है कि हमारी यह पत्रिका 'हिंदी की गूँज' एक साहित्यिक पत्रिका होने के साथ-साथ जापान से निकलने वाली पहली हिंदी पत्रिका भी है । मुझे ये कहते हुए एक सुखद अनुभूति होती है कि इस पत्रिका के लिए मुझसे तो जो बन पड़ा वो मैंने किया किन्तु मेरे साहित्यिक मित्रों ने भी इसे आगे ले जाने में बहुत सहयोग दिया । उन मित्रों का सहयोग , मार्गदर्शन मुझे सदैव मिलता रहे यही कामना है । मुझे याद है कि जब-जब मैं थकी या हताश हुई , मेरे मित्रों ने, मेरी सखियों ने मुझे हिम्मत दी, मुझे आशा की ओर अग्रसर किया।इस पत्रिका के लिए सबने अपना बेहतर सहयोग दिया । हर अंक को बेहतर से बेहतर बनाने के लिए हिंदी की गूँज के संपादक विनोद पाण्डेय दिन-रात मेहनत करते रहते हैं द्य इस पत्रिका को ऊँचाइयों तक ले जाने में विनोद का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है ।

कुछ ही समय में पत्रिका सफलता की ऊँचाइयों को छूने लगी है । मुझे अब फेसबुक पर या कहीं ओर पोस्ट डाल कर ये नहीं कहना पड़ता कि हिंदी की गूंज पत्रिका के लिए रचनाएं आमंत्रित हैं, बल्कि अब तो अनगिनत रचनाएं आती हैं। अब तो ये हो गया है कि पत्रिका में सब की रचनायें आ ही नहीं पाती और सब प्यार से उलाहना देते हैं कि रमा जी हमारी रचना क्यों नहीं आई पत्रिका में, क्या आपको पसंद नहीं आई । मैं क्या कहूँ कि नहीं नहीं आपकी रचना तो बहुत अच्छी थी पर पत्रिका के पृष्ठ संख्या की सीमाओं में आ नहीं पाई। मैं आप सब से निवेदन करना चाहती हूँ कि ये आपकी अपनी पत्रिका है, इसे जापानी ISNN नंबर मिल चुका है ।पत्रिका अपनी पहचान के झंडे गाड़ रही है । हिंदी की गूंज पत्रिका की ओर से पहला कलम के सिपाही सम्मान डॉ हरीश नवल जी, अंतरराष्ट्रीय व्यंग्यकार जी को देना निर्धारित हुआ है । फेसबुक पर घोषणा हो चुकी है, ई सम्मान पत्र दिया जा चुका है । बहुत से सदस्यों को हिंदी की गूंज ई सम्मान पत्र दिये गये हैं, जब मैं भारत आऊंगी तब हम विधिवत कार्यक्रम कर के सम्मान पत्र देंगे । हिंदी की गूंज यूट्यूब चैनल और हिंदी की गूंज इंस्टाग्राम पर जिनकी रचनायें अपलोड होती हैं उनके में जिस के सब से अधिक व्यूअर होंगे उस सदस्य को भी सम्मानित किया जायेगा। हिंदी की गूंज अब बुंगाकू पब्लिकेशन की भी शुरुआत कर रहा है ।ब.ुंगाकू जापानी भाषा का शब्द है । बुंगाकू का अर्थ है साहित्य, सानि साहित्यिक पब्लिकेशन । बुंगाकू पब्लिकेशन में छपी पुस्तकें जापान में हर जगह हर बुक स्टोर पर विक्रय के लिये रखी जायेंगी । आप अपनी पुस्तकों को जापान में बेच सकते हैं बुंदाकू पब्लिकेशन के द्वारा । कुछ मित्रों की पांडुलिपियाँ आ भी गईं हैं और उन पर काम शुरू हो चुका है।

हिंदी की गूंज अंतरराष्ट्रीय ई पत्रिका के साथ साथ अब पत्रिका बनने जा रही है । कुछ ही दिनों में हिंदी की गूंज अंतरराष्ट्रीय पत्रिका का खेल विशेषांक आपके हाथों में होगा। बहुत सी रचनाएँ आ चुकी हैं।हिंदी की गूंज पत्रिका को आप सब के प्यार और स्नेह की सदा आशा है । आप सब अपना स्नेह ऐसे ही बनाये र खें,अपने सुझाव जरूर दें। क्योंकि जो चलता है वो ही ठोकर खाता है, उसी तरह हम लोग कितनी भी मेहनत करें पर सुझावों से हम और परिपक्व और सुदृढ़ होंगे ।आपके सुझाव, स्नेह सदा सदा चाहिए ।

रमा शर्मा
जापान

रमा शर्मा
मुख्य संपादक एवम संरक्षक

बदलाव के साथ स्वयं को समायोजित करने का गुण हर परिस्थिति में कारगर

भारतीय मूल का व्यक्ति विश्व में कहीं भी, किसी भी देश में होदृएक अलग पहचान रखता है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति की झलक व्यक्तित्व को एक अलग आभा प्रदान कर एक विशिष्ट पहचान देती है। उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम, दिशाएँ महत्त्व नहीं रखती, महत्त्व होता है जड़ों का। भारत की मिट्टी से जुड़ाव, फिर वह जुड़ाव चाहे कितने ही वर्षों पुराना हो जैसे एक परिवार के विभिन्न लोग अपना वैशिष्ट्य बनाये हुए भी एक-दूसरे से मिलते-जुलते-से लगते हैं वैसे ही विश्व के किसी कोने में रहने वाला भारतीय मूल का व्यक्ति एक विशेष आभा लिए इस बात में गर्व अनुभव करता है कि उसका जुड़ाव-लगाव भारत से रहा है।

जापान जैसे विकसित देश में रहते हुए डह्र रमा पिछले दो दशकों से जापान के प्रति अपने राष्ट्रप्रेम और नागरिक होने के कर्त्तव्यों को बखूबी निभाते हुए अपने मन में गहरे बसी भारतीयता को अपने लेखन के जरिये व्यक्त करती आ रही हैं।

कोरोना काल में जब सम्पूर्ण विश्व कोविड की विभीषिकाओं से जूझ रहा है तब अवसाद को अवसर में परिणित कर 'हिन्दी की गूँज' त्रैमासिक अन्तर्राष्ट्रीय अह्नलाइन पत्रिका ने जापान, भारत और विश्व के अन्यान्य देशों को हिन्दी साहित्यिक रचनाओं द्वारा आपस में जोड़ा हैद्य गीत, गजल, कविता, आलेख, निबंध, शोध पत्र, व्यंग्य, संस्मरण, कथा-कहानी, समीक्षा तथा डायरी-लेखन एवं साक्षात्कारों के माध्यम से इस काल की साहित्यिक सम्पदा को शब्दांकित कर वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों को उपलब्ध करा रही है 'हिन्दी की गूँज' पत्रिका ।

वैज्ञानिक आधार है, मधुर बहुत रसधार/ तुलसी, सूर, कबीर ने, लिख डाला संसार
लिख डाला संसार कि दुनिया अब तक बाँचे/ढाल रहे सब भाव, लिये हिन्दी के साँचे

हिन्दी की ध्वनि और उसकी प्रतिध्वनि वैश्विक पटल पर गुंजायमान है । सरल, सहज, सैद्धांतिक हिन्दी में वर्तमान का संकट, उसके परिणाम, उससे उभरने के उपाय, उसमें व्यवधान डालने वाले कारणों के साथ-साथ शारीरिक, मानसिक व सामाजिक बदलावों को अनुभव के स्तर पर एक कवि, लेखक , कहानीकार, व्यंग्यकार कैसे देखता है, वर्तमान साहित्य उसी का आईना है । पिछली सदी या फिर उससे पिछली सदी में फैली इस तरह की वैश्विक महामारी का लिपिबद्ध साहित्य यदि विपुल मात्रा में उपलब्ध होता तो अवश्य इस चुनौती के समय हमारा पथ-प्रदर्शन कर हमें समय से पूर्व ही चेताता और इस घडी का सामना करने में भी अधिक सहायक हो पाता ।

प्रत्यक्ष व् परोक्ष रूप से कोविड ने परिवारों को गहरा प्रभावित किया है सोचने-समझने का दायरा और नजरिया ही बदल डाला है । सब कुछ होते हुए भी अपने ही परिवारजनों, रिश्तेदारों, मित्रों से दूर हो कर जहाँ थे वहीं 'कैद' हो कर एक लम्बी अवधि तक रह जानाय कामकाज, रोजगार का सिमट जाना या लगभग समाप्त ही हो जाना, अपरिहार्य किन्तु अनिवार्य-सी बात हो गयी जन-जन के साथ।आर्थिक रूप से संपन्नता या सामाजिक रुतबा भी किसी काम का नहीं रहा या कहें नगण्य हो गयाद्य मानसिक शिथिलता, ठहराव और खालीपन के साथ बीमारी से जूझते हुए कई अपनों को खो देने का दुःख नकारात्मकता का कारण बनता है इसमें कोई दो राय नहीं। साधारण व्यक्ति का ऐसे टूट कर बिखर जाना कोई असाधारण बात नहींद्य ऐसा होते देखा भी हमने अपने आसपास। किन्तु कलम का धनी व्यक्ति अपनी ऊर्जा का सकारात्मक प्रयोग करते हुए अपनी पीड़ा को, अपने एहसासों को कागज पर उतार पाता है और यही कारण है कि साहित्य हर स्थिति में, हर युग में समाज के लिए उपयोगी शस्त्र भी साबित हुआ है शास्त्र होने के साथ-साथ। नैतिक बल प्रदान करती है रचनात्मकता। प्रेरित करती हर कठिन स्थिति से उभर कर आगे बढ़ने के लिएद्य मार्ग प्रशस्त करती है, दिशा दिखाती है। सही दिशा में उठाया हर सही कदम लक्ष्य प्राप्त करने में सहायक होता है।

सोशल मीडिया के इस दौर में अंतर्जाल के माध्यम से साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन करने वालों को खोज निकालना और उनसे संपर्क स्थापित करना भी तुलनात्मक रूप से सरल हो गया है।इस माध्यम का अत्युत्तम उपयोग हमने इस काल में किया भी है। जहाँ अपरिचित, अन्जान वस्तु को छूना ही प्रतिबंधित-सा हो गया हो वहाँ पुस्तकें, पत्रिकाएं, समाचारपत्रों का अह्नलाइन उपलब्ध होना किसी दैवीय वरदान से कम साबित नहीं हुआ है इन पिछले डेढ़ वर्षों मेंद्य साथ ही कवि-सम्मेलन, मुशायरे और गोष्ठियाँ भी यथार्थ के धरातल से सिमट कर वर्चुअल/ आभासी पटल का उपयोग करके होने लगे। वैसे भी मनुष्य का बदलाव के साथ स्वयं को समायोजित करने का गुण हर परिस्थिति में उसके काम आता है और ऐसे में कोरोना काल कोई अपवाद नहीं लगाद्य लोग घर बैठ गए, सड़कें वीरान और आकाश भी हवाई जहाजों से रिक्त हो गया। इस बदली परिवेश ने प्राकृतिक वातावरण को कुछ ही समय में प्रदुषण मुक्त कर इतना स्वच्छ और सुरक्षित कर दिया था पिछले वर्ष कि पशु-पक्षियों की विलुप्त और हमसे दूर होती हुई प्रजातियाँ भी अचानक दिखाई देने लगीं, शहरों में पत्तों और फूलों के रंग चमक उठे क्योंकि हवा स्वच्छ व् निर्मल हो गयी और नभचरों को आकाश में हवाई यात्रा करने वाले जहाजों से दुर्घटना का भय कम हो गया था।खैर! ऐसा कब तक रहता? अर्थव्यवस्था को भी तो संभालना था। वैक्सीन भी बहुत जल्दी निर्मित हो गयीं। भारत जैसे विकासशील देश में ये चमत्कार से कम नहीं था। युद्धस्तर पर टीकाकरण व् अन्य सुविधाओं ने जन-जीवन बहुत हद तक सामान्य कर दिया यद्यपि आक्रामक तीसरी लहर के अंजाने डर का काला बादल अभी भी छटा नहीं है। लेकिन कहते हैं- डर के आगे जीत है।विजय की इसी छत्रछाया में 'हिन्दी की गूँज' का यह अंक जब आपके हाथों में आ रहा है जब अक्टूबर, नवम्बर और दिसंबर के ये तीन महीने भारत में और भारत से बाहर भारतीयों के लिए विभिन्न पर्व लिए हर्षो-उल्लास के हैं। गाँधी-शास्त्री जयंती, नवरात्रि, दशहरा, दीपावली, गोवर्धनपूजा, भैया दूज ईद, गुरुनानक जयंती और क्रिसमस इत्यादि विभिन्न त्योहारों की शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के सम्पादन व प्रकाशन मंडल को धन्यवाद देना चाहूंगी कि मुझे आप सरीखे सुधि, सहृदय पाठकों को संबोधित करने का सुअवसर प्रदान किया।अपनी और अपनों की खुशियों का ध्यान रखियेगा। कोविड-संबधित सभी नियमों का सतर्कता से पालन करते हुए त्योहारों और साहित्य का आनंद लीजियेगा।

पूनम माटिया
अतिथि संपादक ,
अध्यक्ष, अंतस

अपनी बात

समस्या कोई ऐसी नहीं जिसका समाधान न हो लेकिन मनुष्य का चंचल मन जल्दी छुटकारा पाना के लिए कभी-कभी ऐसी गलतियाँ कर बैठता है जिससे वो समस्या में उलझता ही जाता है । समस्या आने पर सबसे पहला कार्य तो यह है कि खूब अच्छे से शांत मन से उस पर विचार करें कि यह क्यों आया और इसके संभव समाधान क्या हो सकते हैं फिर अपने सामर्थ्य ,बुद्धि और विवेक से इसके समाधान पर कार्य प्रारम्भ करना चाहिए । मन को शांत रख कर जीवन में खुशी प्राप्त करने के उपाय को कई लोगों ने बताया जिसमें एक नाम सिख धर्म के प्रथम गुरु गुरुनानक जी का भी है । गुरु नानक जी की वाणी भक्ति, ज्ञान और वैराग्य से ओत–प्रोत है। उन्होंने अपने अनुयायियों को जीवन की दस शिक्षाएँ दीं यदि उन्हें अपने जीवन में उतार लिया जाए तो जीवन सचमुच धन्य हो जाता है।गुरुनानक जी ने हमेशा जीवों पर दया और आप में सद्भाव -भाईचारा रखने के लिए प्रेरित किया ,उन्होंने बताया कि इस संसार में इंसान को इंसान से प्रेम भाव रखना चाहिए , नफरत की कहीं की जगह न हो । आज के समय में गुरु नानक जी की शिक्षाएं , बहुत प्रासंगिक और आवश्यक हैं । आज हम स्वार्थ ,लोभ में जनसेवा भूल रहे हैं ,ऐसे में सिख धर्म के अनुयायियों का अनुसरण करके हम बहुत कुछ सिख सकते हैं । क्योंकि आज के जो हालत हैं उसको सुधारने के लिए मानवता का प्रचार-प्रसार अति आवश्यक है । गुरु पर्व आने वाला है ,महान संत को स्मरण करते हुए अपने पाठकों से यहीं कहना चाहूँगा कि प्रेम सबको एक करता है और नफरत सबको बाँटता है इसलिए ज्यादा से ज्यादा प्रेम का प्रसार करें ,इससे मनुष्य का जीवन , परिवार ,समाज और देश सब जगह सकारात्मक परिवर्तन दिखेंगे ।

युग प्रवर्तक,मार्गदर्शक ,कवि ,सुधारक ,संत थे
भाईचारे के समर्थक , सहृदय सरदार थे
प्रेम की आराधना को श्रेष्ठ कहते ही रहे
श्री गुरु जी ज्ञान के और बुद्धि के भंडार थे

एक है ईश्वर सभी के नाम बस केवल अलग है
हर जगह रहते प्रभु जी और उन्हीं का सारा जग है
जो बताया है उन्होंने वो बहुत अनमोल है
वो दया के ,आसरा के ,सच के पैरोकार थे

हक किसी का छीन लेना है गलत कहते रहे वो
नेक दिल को कष्ट देना है गलत कहते रहे वो
अंधविश्वासों को हरदम ही गलत कहते रहें
प्रेरणा के श्रोत थे वो , लक्ष्य के आधार थे

बात उनकी मानता जो वो सुखी इंसान है
दर्द सबका कम करे जो वो बड़ा धनवान है
गुरु नानक देव जी ने ज्ञान बाँटे ज्ञानियों को
आम जन के बीच उनके सर्वप्रिय व्यवहार थे

दान और उपकार से बढ़कर नहीं कुछ भी यहाँ
दुःख वहाँ निश्चित मिलेगा, मोह ,लालच है जहाँ
सीख उनकी नेक है जो सीख पाया बन गया
बन गए सरकार वो जो कल तलाक बेकार थे

वो अकेले ही चले थे आज पीछे कारवाँ
आज भी गुरु हैं वहाँ गुरु ग्रन्थ साहिब है जहाँ
आओ हम सजदा उस सद्गुरु ,परमेश का
थे नहीं सामान्य जन वो अलौकिक अवतार थे

विनोद पांडेय
गाजियाबाद

शून्य

आँखे खुली थी और साँसे भी अपने अंतिम चरणों मे थी मगर यादों ने अभी साथ नही छोड़ा था वो एक एक करके चलचित्र की तरह उसके सामने चल रही थी,
दो बच्चों का हाथ पकड़े वो अपनी पत्नी के साथ नए जीवन की तलाश में एक अंजान देश में एयरपोर्ट से बाहर आ रहा था ,सभी अंजान चेहरे, अंजान भाषा ,

उसने जल्द ही अपने को विदेशी परवेश में ढाल लिया,बच्चो को विदेशी विधालय में डाल दिया और खुद भी पत्नी सहित काम की तलाश में जुट गया ,मगर जहाँ भी जाता भाषा की समस्या , इंग्लिश को जानने वाले तो थे मगर सिर्फ अपनी भाषा के सिवा किसी और भाषा में बात करना पसन्द ही नही करते थे , अब उसको समझ आ गया था कि इनकी भाषा सीखना जरूरी है इसलिए उसने दिन में दोनों पति पत्नी ने छोटा सा काम ढूँढ़ लिया और शाम के विद्यालय में भाषा सीखने जाने लगे ,वक्त पँख लगाकर उड़ने लगा ,भाषा का ज्ञान भी हो गया ,पति पत्नी को अच्छी नोकरी भी मिल गई ,बच्चे भी पढ़ाई में आगे जाने लगे ,विदेशी साथियों के साथ इतना घुल मिल गया कि उसे वो मुल्क अपना सा लगने लगा , उसका एक खास अंग्रेज मित्र था जो शादी शुदा था मगर कोई बच्चा नहीं था क्योंकि जवानी में उन्होंने इसकी उन्हें जरूरत महसूस नही हुई मगर अब देर हो चुकी थी ,उम्र ढलाव पर थी ,याद आ रहा है ऐसे ही जब बातों बातों में एक दिन जब उसने कहा था ,तू किस्मत वाला है बच्चे हैं ,कोई तो पास होगा जब तुम रिटायर्ड होंगे ,कोई तो देखने वाला है तुम्हे, हमारा क्या एक दिन एम्बुलेंस आएगी और हस्पिटल ले जाएगी,या तो वहाँ अकेले दम तोड़ देंगे या फिर ओल्ड ऐज होम में आखिरी साँसे ले रहे होंगे ,संपत्ति भी सरकार के पास चली जाएगी, और मैं उसको दिलासा देता था,और दिल ही दिल में अपनी किस्मत पर नाज करता था,

बच्चे बड़े हो गए ,अच्छी नोकरी भी मिल गई ,मुझे याद आ रहा है बड़े बेटे की शादी पर मैने अपने अंग्रेज मित्र को भी बुलाया था ,वो अपनी पत्नी के साथ रिसेप्शन पर आया था और उसने बहुत तारीफ की थी मेरी किस्मत की और मेरी संस्कृति की ,दूसरे बेटे की शादी से पहले मैं और मेरा अंग्रेज मित्र रिटायरमेंट ले चुके थे ,मैने उसका पता किया तो पता चला कि उसकी पत्नी का देहान्त हो चुका था वो अकेला ओल्ड ऐज होम में रहता था फिर भी ढूँढ़ कर उसे बुलाया,बहुत ही खुश थे हम एक दूसरे से मिलकर और वो खुश था मुझे परिवार के साथ देखकर, याद आ रहा है उसने कहा था कि आपकी संस्कृति और हमारी संस्कृति में ये ही फर्क है मै अकेला हूँ आप सब इकठ्ठे हैं,

शादी हुई बच्चों ने अपने अपने घर ले लिए ,पहले तो बहुत आना जाना रहा,धीरे धीरे कम होता गया,कब दिन हफ्ते में बदले कब महीनों मे कब सालों में ,बच्चो के पास वक्त नही रहा क्योंकि उनके बच्चे हैं उनको देखना है नोकरी करनी है हमें क्या देखते ,धीरे धीरे शरीर भी साथ छोड़ रहा था,सात जन्म का साथ भी छूट गया पत्नी भी ईश्वर में लीन हो गई, बच्चे आए सबने मिलकर यही निर्णय लिया कि मुझे ओल्ड ऐज होम में शिफ्ट होना चाहिये ,मुझे ओल्ड एज होम भेज दिया गया, मगर अभी मेरा अंग्रेज मित्र से मिलना बाकी था क्योंकि किस्मत ने मुझे उसी ओल्ड ऐज होम में भेजा जहाँ वो था ,अब न वो अकेला था न मैं, मगर कब तक, कल ही उसे दफना के आया हूँ ,आज मेरी साँसे साथ छोड़ रही हैं ,न संस्कृति नजर आ रही है न सँस्कार और न ही कोई आवाज, सिर्फ एक शून्य है सिर्फ शून्य.

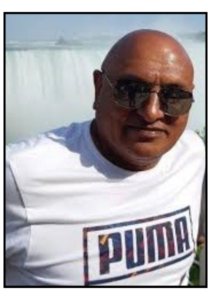

कपिल कुमार
बेल्जियम

घात लगाती बिल्ली

घात,घातक,विश्वासघात और प्रतिघात शब्दों को हम पढ़ते सुनते रहे हैं । वृहत हिंदी कोश में स्त्रीवाची संज्ञा में इसका अर्थ कार्य सिद्धि का अच्छा अवसर,ताक ,दाँव-पेंच,छल,चाल और तौर-तरीका अर्थ उपलब्ध होते हैं । पुल्लिंग संज्ञा में घात का अर्थ चोट,आघात,प्रहार ,हत्या,अहित,गुणनफल,बाण और एक अशुभ नक्षत्र अर्थ दिये गए हैं ।

शेर की मौसी कही जानी वाली बिल्ली ने संभवतः वृहत हिंदी कोश नहीं पढ़ा किंतु घात लगाने में उसका कोई सानी नहीं है । इच्छित शिकार की उपस्थिति अथवा उसके उपस्थित होने की आशा या प्रतीक्षा में बिल्ली कई घंटे घात लगा सकती है । घात लगाने की कृपया में वह अपने पंजो व सिर को अपने शरीर में छिपाने की क्रिया करती हुई लक्षित स्थान पर अपनी पैनी दृष्टि लगाए रखती है,न हिलती है , न डुलती है,मूर्तिवत दिखती है । जब लक्षित शिकार नजर आ जाता है ,साँस रोके धीमे-धीमे उसकी ओर इस भाँति बढ़ती है कि शिकार को तब तक उसके होने का भान नहीं हो पाता जब तक वह उसे दबोच नहीं लेती ,यह क्रिया घातक कही जाती है वास्तव में घातक एक विशेषण है जो हानिकारक होने का ही परिचय देता है ।

समाज में हमारे आस-पास इस प्रकार की बिल्लियाँ घूम रही होती हैं जिनका शिकार हम हैं । हमें ज्ञात नहीं हो पाता द्य ये बिल्लियात्मक व्यक्ति,सम्बन्धी,मित्र,पड़ोसी अथवा आम जन भी हो सकते हैं ,जो दबोचने के लिए धीमे-धीमे अपनी लक्ष्यपूर्ति हेतु कार्य करते रहते हैं । दूसरों की सीढ़ी इनकी आँखों में चुभती है इनके हाथ में एक अदृश्य रंदा होता है जिससे वे सीढ़ी काटने का प्रयोजन भी सिद्ध करते हैं । अपने पंजे छिपाये मासूम बने अपने मनोभाव प्रदर्शित नहीं करते ।

कई बार ये रूप बदल लेते है और सरकते सरकते लक्षित शिकार की आस्तीनों में घर बना लेते हैं द्य और ऐसे आस्तीन में घुसे साँप न जाने कितना दूध पी जाते हैं ,पिलाने वाले को तब पता चलता है जब दूध विष बन जाता है । ऐसे रूप रंग बदलने वाले गिरगिट को भी मात देने की अपूर्व क्षमता रखते हैं ।

अब अधिक क्या कहें सावधान रहें इन बिल्लियों से और देखते रहें आस-पास आपको आघात पहुँचाने के लिए घात तो नहीं लगाया जा रहा ।

डॉ हरीश नवल ,
दिल्ली

फुटबाल नहीं फिटबाल बन

पिता, नहीं नहीं डैड, अपना मन पसंद टी वी शो देख रहे थे। वैसे सोफा बैठने के काम आता है पर वे अधलेटे थे, विष्णु भगवान की तरह। दफतर में वे सेक्शन ऑफिसर हैं, छोटे अफसर । दफतर में बैठने के लिए उनके पास केवल कुर्सी हैं। उनके विष्णु भगवान के पास सरकारी सुविधाओ से लैस कमरा है। सरकारी दफतरों में पद के अनुसार फर्नीचर, चपरासी आदि की सुविधाएं मिलती हैं। चपरासी को कभी चपरासी नहीं मिलता। साहब के कमरे में सोफा है जिसपर साहब अक्सर अधलेटे दिखाई देते हैं। सांप भी जब डंक मारने को कर्मशील होता है, तो कुंडली मारकर बैठ जाता है अन्यथा अधलेटा या लेटा रहता है। और संसदीय कुर्सियों पर भी तो सांप...

डैड के सन ने, हाईकमांड के दुर्वासा रूप में, प्रवेश किया। उसने हाथ में पकड़ी फुटबाल को गुस्से में फर्श पर पटका और श्राप सी चेतावनी दी - अब मुझे फुटबाल खेलने के लिए कहा तो ... मुझे नहीं खेलना फुटबाल।' श्रवणकुमार ने बिना आज्ञा के रिमोट झपटा और स्पोर्ट चौनल लगा दिया। चौनल फुटबाल मैच दिखा रहा था।

पिता के लिए यह घोषणा दुर्वासा के श्राप जैसी ही थी। पिता ने बेटे को नवाब बनाने के लिए खेल के मैदान में भेजा था पर उसने तो अर्जुन की तरह युद्ध के मैदान में हथियार डाल दिया था। वो तो किसी नपुंसक-सा, टी वी पर, दूसरों की फुटबाल क्रीड़ा का आनंद लेने लगा था।

एक समय था जब खेलने-कूदने वाले खराब होते थे और पढ़ने वाले नवाब होते थे। आजकल नवाब बनने के लिए खेलना कूदना पड़ता है। पहले खेल के मैदान, मैदानों में होते थे, आजकल संसद के गलियारों, न्यायालय, मंदिर-मस्जिद, मॉल-शॉल,साहित्य -वाहित्य, अफतर-दफतर, कंक्रीट्स के जंगल में जहां,तहां और वहां हैं। केवल 'खेल' खेलना ही नहीं होता उसे जीतना भी पड़ता है। जो जितना 'दंगई खेल'(रफ गेम) खेलता है उतना ही जीतता है। जीतने वाले को नवाब कहते हैं। नवाब कभी हारा नहीं करते। आजकल के नवाब तो पूरा खेल खरीद लेते हैं। एक बार नवाब बन जाएं तो बिन खेले जीत सकते हैं।

पिता ने क्रोध मिश्रित जिज्ञासा प्रकट की- तुम्हें क्यों नहीं खेलना फुटबाल ?

पुत्र ने भी क्रोध मिश्रित उत्तर दिया - मुझे कोई खेल नहीं खेलना, टाईम वेस्ट हैं, ओनली टाईम वेस्ट।

- और ये जो तूं देख रहा है ? तुझे फुटबाल देखकर टाईम वेस्ट करना है, खेलकर नहीं! तुझे क्या मेरी तरह कलम घसीटू बनना है?

- यस। दिस इज वट आई लाईक...दिल को अच्छा लगता है।''

बेटे ने इतनी सख्ती से 'यस' कहा कि पिता का इंद्र- सिंहासन डोल गया। उसने पुत्र की तपस्या भंग करने के लिए सुंदर और मुलायम शब्दों में कहा - माई डियर सन! दिल को अच्छा लगना इंपार्टेंट नहीं होता, इंपार्टेंट होता है कैरियर बनाना। खेलोगे नहीं तो अच्छा कैरियर कैसे बनेगा? इस उम्र में अपना गोल तय करना होता है। खेलोगे नही तो गोल कैसे करोगे? दर्शक बने रहोगे तो जिंदगी भर पैसे लुटाते रहोगे। लंबी लाईन में खड़े होकर टिकट खरीदोगे। भरी धूप में पसीना बहाकर खेल दे खोगे। दूसरे की उपलब्धि पर ताली बजाओगे,हार पर गमगीन होओगे। खेल खत्म होने पर कपड़े झाड़ोगे। मिलेगा क्या, ठेंगा? कोरे आश्वासन। रेफरी बने तो प्रजातंत्र के वोटर बनकर रह जाओगे-दूसरे के भाग्य बनाने बिगड़ने का दम्भ पालोगे। अपना भाग्य बदलने के लिए चरण ढूंढोगे तो बस ढूंढते रह जाओगे। तुम्हारा भाग्य कभी नही बदलेगा, हां बदलने के सपने हर पांच साल में मिलेंगें।

तुम्हें तय करना है कि बनना क्या है- दर्शक, रेफरी, कोच, खिलाड़ी या फुटबाल?खेल को खिलाड़ी ही जीतता है , रेफरी, कोच या निरीह फुटबाल नहीं। चुनाव में करोड़ों लोग वोट डालते हैं, चुनाव आयोग के सैंकड़ों कर्मचारी वोट डलवाते हैं पर संसद में, जीतने वाले ही बैठते हैं, हारने वाले गलियारों के इर्द-गिर्द भटकते रहते हैं। जीतने वाले ही देश चलाने का खेल खेलते हैं। वोट डालने वाले संसद के आसपास फटक नहीं पाते, फुटबाल बने इधर-उधर किकियाए जाते हैं। जो ज्यादा किक नहीं सह पाता वो किसान की तरह आत्महत्या कर लेता है। लात पे लात खाओ तुम और शहीदी का तमगा पहने वो , 'खिलाड़ी'!

चार -पांच साल बढ़िया खेल लिया तो खूब पैसे में खेलोगे। म्यूजम में पुतला लगेगा, पद्मश्री मिलेगी। यहां हम, तुम्हारे बाप,जिंदगी भर किताबों में सर मारते रहे, कागज काले करते रहे। भ्रम पालते रहे कि समाज के आगे चलने वाली मशाल हैं। हमें क्या, प्रेमचंद जैसों को क्या मिला? एक मूर्ति जिसपर कबूतर बीठते हैं। एयरकंडीशन में पुतला लगा? हम पुतले देखने जाएं तो लाइन में लगा दिए जाते हैं, टिकेट अलग खरीदना पड़ता हैं। कलम घसीटू इतिहास तो बन सकते हैं, नवाब नहीं।

बेटा पिता के, हरि अनंत हरि कथा अनंता टाईप, अंतहीन लेक्चर से पक गया। चुनाव में भी तो आप आश्वासनो से पकते हैं। इस बार बेटे ने, फुटबाल की जगह हाथ में पकड़े रिमोट को दे मारा और बोला- इनफ डैड इट्स इनफ नाउ। आपकी लेक्चरबाजी से पक चुका हूं। आपके चक्कर में अर्जनटीना पर गोल हो गया है। आपने तो मेसी का फयूचर बर्बाद कर दिया। नाउ लिसन, ध्यान से सुनो, मुझे फुटबाल नहीं खेलना है। अंडरस्टैंड।"

पिता ऐसी श्रवणकुमारीय भाषा पहले भी सुन चुके हैं । इस लहजे और युवा आक्रोश को अनेक बार अंडरस्टैंड कर चुके हैं। करत- करत अभ्यास के जड़मति सुजान होता है तो संतान के पड़त-पड़त प्रहार के बाप ढीठ हो जाता है। इसी ढीठता के साथ पिता ने फिर संक्षिप्त लेक्चर दिया- और भी खेल हैं इस जमाने में फुटबाल के सिवा। फुटबाल नहीं खेलना तो मत खेल , पर फुटबहल मत बनना, फिटबाल बनना । किसी भी खेल में फिट होने वाली बहल बनना। मास्टर ऑफ ट्रेड नहीं बनना तो जैक ऑफ आल ट्रेड बन। खिलाडी बन।

डॉ प्रेम जनमेजय

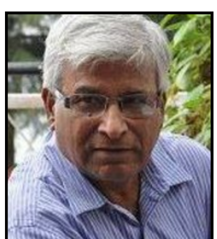

गजल

1

आपका का ये मुस्कुराना
और आँखें डबडबाना

आपका सोचा हुआ ना
आपको मैं मिल गया ना

आप पहले जो मिले थे
क्या वही हो सच बताना

देखते हैं वो कहीं पर
और मुझ पर है निशाना

लो बताता हूँ तरीके
आप मुझको यों हराना

2

सुन लो जो सय्याद करेगा
वो मुझको आजाद करेगा

आँखों ने ही कह डाला है
तू जो कुछ इरशाद करेगा

एक जमाना भूला मुझको
एक जमाना याद करेगा

काम अभी कुछ ऐसे भी हैं
जो तू अपने बाद करेगा

तुझको बिल्कुल भूल गया हूँ
जा तू भी क्या याद करेगा

विज्ञान व्रत

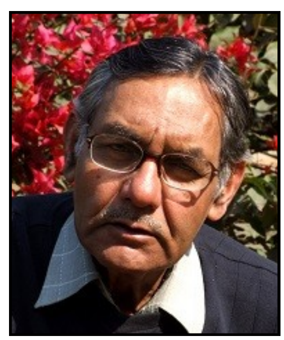

अमन के वास्ते खेलो

अमन के वास्ते खेलो, चमन के वास्ते खेलो।
चलो ऐ दोस्त थोड़ा-सा, वतन के वास्ते खेलो।।

जवाँ है प्यार का जज्बा, भुजाओं में अभी बल है।
निगाहों में तो जन्नत है, भले नीचे धरातल है।
हमें आगे निकलना है सितारों से भी ओ यारो।
चलो आओ इसी भोली लगन के वास्ते खेलो।।

इन्हीं बाँहों ने तोड़ा है पहाड़ों की शिलाओं को।
इन्हीं कदमों ने रौंदा है जहाँ की आपदाओं को।।
इन्हीं सीनों में धड़के हैं कभी दिल आरज़ूओं से।
उसी इक पाक हसरत की छुअन के वास्ते खेलो।।

कभी हमको विजय मिलती, कभी मिलती पराजय है
है सच्चा खेल का जज्बा, फतह जिसकी सदा तय है
जमाना सब हमारा है, जमाने के हैं हम यारो
चलो इस प्यार की उजली किरन के वास्ते खेलो।।

सुना करते हैं सदियों से कि सेहत इक नियामत है।
हैं जब तक खेल दुनिया में समझना सब सलामत है।
हमें इन्सान की हस्ती बचानी है अगर यारो।
चलो बीमार होते तन औ मन के वास्ते खेलो।।

डॉ. रामवृक्ष सिंह,
भारत

धूप ही धूप

साहित्यकार को प्रजापति क्यों कहा जाता है यह बात विशिष्ट लोक संस्कृति के चितेरे अर्थात जिनका साहित्य जीवन जीने की दिशा और उनका लेखन व्यक्तिगत होने पर भी जन-जन का हो जाता है। जिनकी लेखनी पाठक को आनंदित ही नहीं करती है उसकी बुद्धि को भी तरसती है। ऐसे विशिष्ट साहित्यकार से आपका मेल हो जाए और आप उनके साहित्य को पढ़कर यह आपका सौभाग्य ही होगा। ईश्वर कृपा से मुझे ऐसे साहित्यकारों को पढ़ने लि खने का शुभ अवसर भी प्राप्त हुआ है। डह निशंक और बी एल गोल्ड के साहित्य को पढ़ने के उपरांत डह कृष्ण कुमार प्रजापति जी से मुलाकात हुई और उनके साहित्य को पढ़ने का भी सौभाग्य मिला। हिंदी उर्दू भाषा की गंगा जमुनी तहजीब को आत्मसात किए हुए डह कृष्ण कुमार प्रजापति किसी परिचय के मोहताज नहीं है। उर्दू की गजल को हिंदी भाषा में लाने का श्रेय दुष्यंत जी को जाता है। दुष्यंत जी की परंपरा को बढ़ाने में गजल कारों में विशिष्ट स्थान डॉक्टर कृष्ण कुमार प्रजापति जी का भी है।

ूप ही धूप गजल संग्रह में 92 शीर्ष को में प्रजापति जी ने जीवन दर्शन को ही समेट लिया है इनके शेर गजल बिहारी की तरह गागर में सागर भरने का काम करते हैं। कम शब्दों में बहुत कुछ कह देना दोहे में संभव होता है या फिर गजलों में। इनकी पुस्तक को पढ़ने के उपरांत प्रजापति जी के व्यक्तित्व को समझा जा सकता है। यह कहना अतिशयोक्ति ना होगा की गजल का अपना परिचय अपनी मूल वृत्ति को करें स्पष्ट करता है हुए हैं जब से शायर और कुछ करते नहीं देखा

कुमार अब हर किसी से शायरी की बात करते हैं दूसरा शेर देखिए मेरी पहचान अब सिर्फ और सिर्फ मेरी गजलें हैं

प्रजापति जी ने कठिन संघर्ष के बाद आज वह मुकाम पाया है जिसमें केवल केवल उदार चरित्र नाम वसुधैव कुटुंबकम का भाव छिपा हुआ है। साहित्य दर्शन और जीवन दर्शन को बहुत सुंदर तरीके से बयां किया है। इनकी पुस्तक धूप ही धूप सकारात्मक दृष्टिकोण को ध्वनि करता है। धूप सुखद आशा का प्रतीक है। कहने का भाव यह है कि लाख मुसीबतें आए कितना ही संघर्ष में जीवन हो उसे सकारात्मक ढंग से जीना चाहिए। ऐसा भाव रखने वाला साहित्यकार विशिष्ट ही कहा जाएगा। माधवी ने इनके संदर्भ में लिखा है इनकी गजल के प्रत्येक शेर में उनके जीवन का संघर्ष उत्साह दुख सुख हर्ष विषाद जिजीविषा इत्यादि शामिल है इनकी गजलें सामाजिक सरोकार की गजलें हैं जिनको पढ़कर ऐसा लगता है कि डह कुमार ने जन-जन की पीड़ा को अपने अनुभव की नजर से झांकने के बाद उनके मन में उपजे भावों को गजल के सांचे में डाल दिया है।

प्रजापति जी सबसे महत्वपूर्ण मां को मानते हैं
परवरिश करने कराने में बड़ा फर्क है
नाक से मां का अधिक गुणगान होना चाहिए
प्रजापति चारों धाम मां की पूजा में मानते हैं मैं अपनी मां को सूरत देख लेता हूं यह काफी है

बला से जो कभी देखा नहीं भगवान का चेहरा
एक पिता के लिए बेटी का होना बेटी गर्व है बेटी को घर की रौनक कहना प्रशंसनीय है-
मेरी गुड़िया के कदम से हर तरफ थी रौनकें
हाथ पीले कर दिए तो सूना आंगन हो गया

रामधारी सिंह दिनकर के निबंध हिम्मत और जिंदगी का भाव आंखों के सामने आने लगता है। हिम्मत ए मर्दा तो मदद ए खुदा कहावत को सच करने वाले गजलकार प्रजापति की पंक्तियां देखें-
वह अपनी जिंदगी में फायदे क्या खाक देखेगा
जो हिम्मत हार बैठा देखकर नुकसान का चेहरा
जिंदगी के जंगल में होना अगर है कामयाब
बुजदिली आने ना पाए हौसलों के दरमियां

डॉक्टर प्रजापति जी जीवन में हार मानने वाले नहीं है। जीवट ताकि साथ जीते हैं। थक्कर हार नहीं मानते उनकी इच्छाशक्ति और कर्मठता उन्हें रुकने नहीं देती है। जीवन के संघर्ष पथ पर लगातार चलते रहना उनके जीवन का ध्येय है-
कार्टून कर दिए मेरे तलवे लहूलुहान
घुटनों से चल रहा हूं कि ठहरा नहीं हूं मैं

आज के समय में राजनीति इतनी गंदी हो गई है कि नेता भोली-भाली जनता का दोहन करते हैं फोन मिला केवल कोरे वादे करते हैं उन्हें मूर्ख बनाते हैं सिद्धांत हीन राजनीति केवल स्वार्थ से भरी होती है। यह सिद्धांत ही राजनीति केवल वोटों की और सत्ता पाने भर के लिए होती है। देश की जनता को धर्म जाति के नाम पर बांटा जाता है। सांप्रदायिक दंगे करवाए जाते हैं। शायर का दर्द देखिए
वोटों की राजनीति चलाने के वास्ते
भाषण था उसका आग लगाने के वास्ते
फासले बढ़ जाएंगे लोगों दिलों के दरमियां
मजहबी झगड़े में डालो दोस्तों के दरमियां

आज का इंसान दोहरी जिंदगी जी रहा है लोग सामने मुस्कुराते हैं और अपना गम छुपाते। ऐसे लोगों के बारे में भी लिखा है।
खुल के हंसना मुस्कुराना आ गया
हमको भी अब गम छुपाना आ गया

कबीर का फक्कड़ पन बेबाक शैली और जीवन दर्शन को बहुत ही सुंदर ढंग से वर्णित किया है-
माटी कहे कुम्हार से तु क्या रौंदे मोय
1 दिन ऐसा आएगा मैं रो दूंगी तोय
यह भाव अब आप इन शेरों में देखिए
किस बात की अकड़ है किस बात पर तना है
माटी है मूल तेरा माटी से तुम बना है

साहिबे दिल साहिबे में लिखा है-
साहिबे दिल साहिबे ईमान होना चाहिए
हर किसी इंसान को इंसान होना चाहिए

गरीब जनता के दर्द को पहचानना उस को अभिव्यक्त करना बहुत बड़ा काम होता है
किसी गरीब की ख्वाहिश कहां की ताज मिले यही है फक्र
गुजारे को कामकाज मिले
मैं हूं गरीब यह सरकार से तलब है कुमार
जरूरतों के मुताबिक मुझे अनाज मिले

वृद्ध विमर्श को केवल एक शेर में ही आईना दिखा दिया है-
बुजुर्ग चाह रहे हैं बस इतना बच्चों से
हमारा पेट भरे वक्त पर इलाज मिले

इंसान को इंसान बना रहना चाहिए इंसान अपनी इंसानियत को भूल चुका है देखिए-
आदमी ने आदमी अब छोड़ दी है आजकल
जानवर सहमे हुए हैं जंगलों के दरमियां

शायर ने इश्क की बात की है इश्क को शारीरिक ना मानकर इश्क का महत्व बढ़ा दिया है।
तुमसे मिलकर इतना हम इतरा गए
हां कहां जाना कहां हम आ गए
यह करम यह मेहरबानी आपकी
मेरी आंखों को झलक दिखला गए
उसको हासिल हो गई सच्ची खुशी
दौलत दुनिया को जो ठुकरा गए

मैं ईमानदार हूं का ढोंग पीटने वालों पर दो लाइन देखिए-
सबको यह दावा था हमें मान वाले हैं मगर
वक्त पर ईमान सबका ताक पर रखा मिला
देख कर हालात को अक्सर बदल देता है रंग
आजकल तो आदमी गिरगिट से भी होशियार है

अनिरुद्ध सिन्हा की दृष्टि में कुमार प्रजापति की गजलों में जीवन की गहरी बौद्धिक समझ के साथ भाषाई तराश और टटकापन, खुलापन, गहरी संवेदना और पाखंड हीन सृजनात्मकता है।

रमेश तिवारी की मान्यता है कि कुमार बेमकसद गजलकार नहीं है बल्कि मकसद लिखना इनकी पहचान है। जीवन को इतनी गहराई से देखना और जीना साधारण व्यक्ति का काम नहीं हो सकता प्रजापति जी जीवन के विविध आयामों इंद्रधनुषी रंग से भर देते सकारात्मक सोच के साथ जीने का नाम ही प्रजापति है यह जनसंवेदना की बात ही नहीं करते अभी तो इनकी लेखनी जन-जन की वेदना 30 को ऐसे व्यक्त करती है जैसे ही अपनी ही कहानी बयां कर रहे हैं। शांति सुखाई के लिए लिखना गया इनका साहित्य साहित्य बन जाता है। इनका साहित्य लोकमंगल के देगा लक्षित करता है तो यही कारण है कि तमाम कवियों और शायरों ने इनकी मानवतावादी साहित्यकार कहा है जो शत प्रतिशत सही है।
लोगों का दिल जितना जीवन में रंग भर देना नए-नए ख्यालों से आशावादी दृष्टिकोण को जीवन में लाने की आचरण पद

अगर सितारों से भी आगे तुमको जाना है कुमार
रास्ते को निकालो मुश्किलों के दरमियां
अपने कद से मत जानू उनका कद
देख रहे हो तुम जिनको ऊंचाई से

अगर यह कहां जाए की संस्कृति की व्यापक व्याख्या को आत्मसात किए प्रजापति जी ने सरदार पूर्ण सिंह की याद दिला दी है तो यह अनुचित नहीं है। संस्कृति को आचरण बंद कहना ही नहीं कर्म में लाना विशिष्ट साहित्यकार का काम होता है। यही कारण है कि इनका आचरण मौन कर्म को धारण किए हुए हैं। इनकी गजलों में काव्यशास्त्र की रस अनुभूति का आनंद पाठक साधारणीकरण की तादात में स्थिति में लाकर खड़ा कर देता है। हर गजल कार का अपना अंदाज होता है खास विषय होते हैं हर विषय को संजीदगी से उठाने वाले गजल का प्रजापति जी है देखिए-

नूर आंखों से दिल से लहू ले गई
मेरे बेटे को मेरी बहू ले गई
हुजूर आप की अक्ल मारी गई है
जमाने में सब को भला जानते हैं

जिंदगी को कैसे जीना है जिंदगी में नयापन कैसे आएगा देखिए-

जीने का अभ्यास किसे है
कुछ करने की प्यास किसे है
हर कोई झेल रहा है गम
सुख से जीना राशि किसे है

इंसान भौतिकवादी सोच के कारण मशीन बनाते बनाते खुद मशीन बन गया है। अतीत को याद करते करते वर्तमान को भी बर्बाद करता जा रहा है। आगे लिखा है-

जिंदगानी का नया कोई हवाला चाहिए
धुंध बढ़ती जा रही है अब उजाला चाहिए
चाहिए हमको नहीं जो नफरतों का बे जुनून
जो महल मोहब्बत को बढ़ाएं वह सिलसिला चाहिए
भूख से जो बिल भी लाते हैं हमारे गांव में
कब वह मांगे चांद तारे बसने वाला चाहिए

गजलकार ने केवल कविता के नाम कुछ भी लिख देने वाले को भी नसीहत दे डाली कुछ लिखना है बस लिख दिया ऐसी कविताओं और कवियों के संदर्भ में लिखा है

साख कविता की रहे इसके लिए तो दोस्तों
अब हमारे दरमियां फिर एक निराला चाहिए।

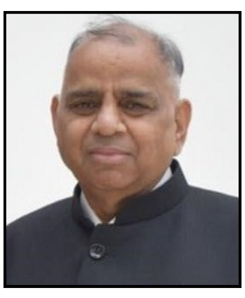

डॉ सुधांशु शुक्ल
(पौलेंड)

गजल

निकली बुढ़िया घूँघट में
बन गये उल्लू फोकट में

मैसेंजर में प्यार किया
जान फँसी है झंझट में

दया कर रही जीवों पर
लटकाये जूँए लट में

कैसा-कैसा प्यार लिखा
बिस्तर की हर सलवट में

कितने पैसे खर्च हुए
रैली के इस जमघट में

सीख गया अंग्रेजी वो
पैग डाल कर दो घट में

दीवारें ही हासिल हैं
घर के अन्दर खटपट में

गजल हमारी खत्म हुई
दाद हमें दो झटपट में

प्रशान्त उपाध्याय

हिंदी रत्न :- इंद्रजीत शर्मा

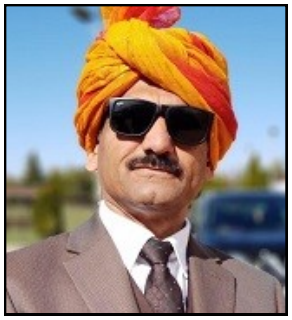

इंद्रजीत शर्मा

श्री इंद्रजीत शर्मा 1 अक्टूबर 1960 को जन्मे श्री इंद्रजीत शर्मा अपने पिता स्वर्गीय पंडित तिलक राज शर्मा की विरासत को आगे बढ़ाते हैं, जिनका सामाजिक, धार्मिक और परोपकारी व्यक्तित्व था। इंद्रजीत शर्मा को उनके पिता ने केवल आध्यात्मिकता, धर्मनिरपेक्षता और मानवतावाद को अपने स्प्रिंग बोर्ड के रूप में जीवन जीने के महत्व के बारे में बताया। एक छात्र के रूप में इंद्रजीत शर्मा का एक बहुआयामी और गतिशील व्यक्तित्व था जिसने उन्हें एन.सी.सी. उन्होंने कई एनसीसी शिविरों का आयोजन और सहायता की। एनसीसी कैडेट के रूप में इंद्रजीत शर्मा को सरकार द्वारा सम्मानित किया गया है। नेपाल का उच्च शिक्षा के लिए उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और वहीं से स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। उनके पिता पंडित तिलक राज शर्मा ने उन्हें अपनी मेहनत की कमाई दी जो नई दिल्ली और न्यूयॉर्क में एक बड़े पेड़ की तरह विकसित हो गई है। इंद्रजीत शर्माअपना बिजनेस एम्पायर चला रहे हैं। श्री इंद्रजीत शर्मा १९८४ में यूएसए में उतरे और तब से वे न्यूयॉर्क शहर में रह रहे हैं। उन्होंने 1991 में शादी की और उनके एक बेटा और एक बेटी है। अपने उज्ज्वल बेटे के साथ, इंद्रजीत शर्मा ने ऑटोमोबाइल उद्योग से बड़े हार्डवेयर निर्माण उद्योग तक अपने व्यवसाय का विस्तार किया।

जीवन में कई बाधाओं के बावजूद श्री इंद्रजीत शर्मा न केवल जीवन की यात्रा में आगे बढ़े बल्कि उन्होंने जरूरतमंद लोगों की मदद भी की। श्री इंद्रजीत शर्मा भारत के दिल यानी दिल्ली में एक गर्वित व्यक्तित्व में से एक हैं। उन्होंने विभिन्न धर्मार्थ संस्था. ानों, ट्रस्ट और शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की है। वह वंचित बच्चों को मुफ्त शिक्षा और युवाओं को नौकरी के अवसर प्रदान करने वाले सामाजिक कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे हैं। स्थानीय जेवेल में श्री इंद्रजीत शर्मा समाज में बुजुर्गों और महिलाओं की अज्ञानता, गरीबी और खराब स्थिति जैसे कुछ गंभीर मुद्दों की दिशा में काम कर रहे हैं। इन बुराइयों के खिलाफ लड़ाई के लिए उन्होंने अपने जाट पिता पंडित तिलक राज शर्मा के नाम पर एक ट्रस्ट की स्थापना की, यह ट्रस्ट जनता के लिए एक पुस. तकालय, युवाओं को मुफ्त कंप्यूटर शिक्षा प्रदान करने के लिए एक कंप्यूटर केंद्र, महिलाओं के लिए एक सिलाई केंद्र बनाने के लिए चलाता है। उन्हें आत्म-निर्भर और एक मुफ्त औषधालय। इसके अलावा ट्रस्ट द्वारा संचालित एक फिजियोथेरेपी क्लिनिक उल्लेखनीय कार्य कर रहा है। यदि कोई रोगी अपनी फिजियोथेरेपी के लिए केंद्र पर नहीं आ पाता है, तो बिना कोई शुल्क लिए उन्हें उनके ही स्थान पर उपचार दिया जाताहै। इस ट्रस्ट के तहत वरिष्ठ नागरिकों के लिए एक मनोरंजन केंद्र भी काम कर रहा है जहां बुजुर्ग लोग अपना समय बिताने आते हैं। वे ताश या शतरंज खेल सकते हैं या टेलीविजन पर अपना पसंदीदा कार्यक्रम देख सकते हैं या बस बात कर सकते हैं और एक दूसरे के साथ अपने अनुभव साझा कर सकते हैं, 200 से अधिक वरिष्ठ नागरिक सदस्य क्लब द्वारा उन्हें मुफ्त में प्रदान की जानेवाली सुविधाओं का आनंद ले रहे हैं। इस क्लब में हर शाम रामचरित मानस का पाठ होता है। श्री इंद्रजीत शर्मा करुणा के व्यक्ति हैं। उनका दिल और हाथ हमेशा वंचितों के लिए खुले हैं। हर साल वह ऐसे वर्गों से आने वाली लड़कियों की शादी का आयोजन और प्रबंधन करता है। श्री इंद्रजीत शर्मा के आशीर्वाद और प्रयास से 100 से अधिक लड़कियों ने अपने मैचों में शादी के बंधन में बंधी हैं। इंसानों के लिए प्यार को पार करते हुए, श्री इंद्रजीत शर्मा का करुणामय हृदय जानवरों और पक्षियों के लिए महसूस करता है। अपनी सुबह की रस्में और प्रार्थना करने के बाद वह रोजाना पक्षियों को खाना खिलाना नहीं भूलते। श्री इंद्रजीत शर्मा हिंदुओं के लिए सबसे शुभ पशु गाय की सेवा करने में दृढ़ विश्वास रखते हैं। उन्होंने ''गौ-शाला'' (गायों के लिए शेड) बनाई है और उन्हें स्वयं भोजन और पानी के साथ परोसना पसंद है। एक पवित्र पिता के पुत्र होने के नाते श्री इंद्रजीत शर्मा का आध्यात्मिकता के प्रति स्पष्ट झुकाव है। उन्होंने भगवान का एक मंदिर बनाया है दिल्ली में शिव और न्यूयॉर्क में भगवान कृष्ण का मंदिर। वह गुरुद्व ारा साहिब के नियमित आगंतुक हैं और वहां समर्पित 'सेवादारों' (जो गुरुद्वारा और उसके आगंतुकों की सेवा के लिए कुछ भी करते हैं) में से एक हैं।

एक परोपकारी व्यक्ति के रूप में श्री इंद्रजीत शर्मा की उच्च प्रतिष्ठा है। भारत के सबसे धार्मिक स्थानों में से एक, हरिद्वार में, उन्होंने एक 'धर्मशाला' बनाई है जहाँ कोई भी यात्री या तीर्थयात्री रह सकता है और मुफ्त भोजन कर सकता है। 1995 में उन्होंने न्यूयॉर्क के मेयर से न्यूयॉर्क पब्लिक लाइब्रेरी के लिए किताबें दान करने की अनुमति प्राप्त की। उन्होंने भारतीय संस्कृति पर हजारों किताबें दान की और इस तरह दो देशों और दो अलग-अलग संस्कृतियों के बीच एक सेतु बनाने की कोशिश की। इस दिशा में जबरदस्त प्रयासों के अलावा, वे अपने खर्च पर हिंदी भाषा को बढ़ावा देने की दिशा में भी काम कर रहे हैं, उन्होंने विभिन्न विषयों पर अनगिनत हिंदी पुस्तकों का वितरण किया। उन्होंने हिंदी में 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' की प्रतियां दान और वितरित की हैं जो धर्म के प्रति उनके व्यापक दृष्टिकोण को दर्शाती हैं। श्री इंद्रजीत शर्मा ने एनवाईपीएल को पुस्तकों के लिए 100 से अधिक रैक दान किए। इंद्रजीत शर्मा को समाज और मानव जाति के कल्याण के लिए उनकी स्पष्ट भूमिका के लिए कई सम्मान और पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। श्री इंद्रजीत शर्मा की बढ़ती उम्र से विचलित हुए बिना, समर्पण के साथ और बिना किसी अपेक्षा के मानवता की सेवा करते हुए उनके भीतर बहते युवाओं के फव्वारे की तरह अपने प्रयासों को जारी रखते हैं।

गजल

1-

गरदनों में जब समय की डोरियाँ आने लगी ।
तब शरीफों की ,पकड़ में चोरियाँ आने लगी ॥

जिन गुनाहों की गवाही दब गई थी घूस में
फाइलें उस केस की बरजोरियाँ आने लगी ॥

देख तरकारी चढ़ा करती थी जिनकी त्यौरियाँ
लंच में उनके भी उबली तोरियाँ आने लगी ॥

ना को ना मैंने कहा , झूठी मिलाई हाँ नहीं
सामने उनकी सभी ,कमजोरियाँ आने लगी ॥

ना बिका ईमान मेरा छल कपट के हाथ जब
तब डराने मुफलिसी की त्यौरियाँ आने लगी ॥

एक दीए की तरह जब-जब लड़ा तूफान से
माँ मुझे फिर याद तेरी लोरियाँ आने लगी ॥

2-

सब लोग पर्दे गलतियों पर टांकने लगे ।
दुनिया को मरते देख बगलें झांकने लगे ॥

पहले उगाए खूब जंगल कंकरीट के ।
कितने बचे हैं पेड़ अब यह आंकने लगे ॥

कैसे जिएगा आदमी पेड़ों को काटकर ।
नजरें चुरा इस प्रश्न से मुंह ताकने लगे ॥

ताजा हवा जब फेफड़ों को मिल नहीं सकी ।
गोली , दवाई जो मिला बस फांकने लगे ॥

रखकर सिलेंडर ऑक्सीजन के कतार में ।
जीवन की गाड़ी लोग अपनी हांकने लगे ॥

हर्षवर्धन आर्य
ओंकार नगर, त्रिनगर, दिल्ली-35

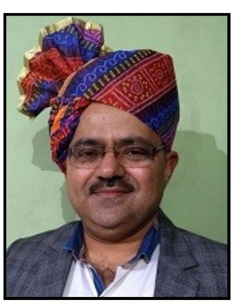

युद्ध से है ज्यादा जरुरी

युद्ध से है ज्यादा जरुरी
कि/गुलाबों की हो खेती
ताकि
लाल के बदले बहे गुलाबी बयार
प्रेमसिक्त चिट्ठियां/ और नजरों के रुमानीपन से
देश/नहीं बन सकता क्या ?

युद्ध से है ज्यादा जरुरी
कि / सुने जाएँ
"सन्देशे आते हैं....."
आखिर सैनिक के मन में भी
धड़कती है कोई दिल वाली/ उसे भी चाहिए
मदहोश करने वाली बाहों का सहारा

युद्ध से है ज्यादा जरुरी
कि/बचा रहे प्रेम
और प्रेम को बचाये रखने के लिए
बेशक बने रोमियो स्कॉयड
आखिर गुलाबी पतंगों के साथ
गुलाबी होती धड़कनों का सुख
बचाये रखेगा
देश /मान लीजिये !

पर चाहतें बदल रही हैं
शांति समझौते से नहीं चलती दुनिया
है युद्ध ज्यादा जरुरी/ क्योंकि बढ़ रही हैं फौजें
और हो रही हैं बर्बर
है सक्षमता बढ़ाने की कोशिश
ताकि बरपे कहर

आखिर तभी तो
दुनिया पर राज करने वाली
हुकूमतें/प्रेम के बदले चुनती है
घृणा

काश की सीमाओं का बंधन
तोड़ पाता प्रेम/ लेकिन नहीं है संभव
चलो प्रेम कविता से बेहतर है
कि लिखी जाए/वीर रस और सुर्ख लाल रंग में डूबी
एक कविता !

मुकेश कुमार सिन्हा

इस अंक के चित्रकार

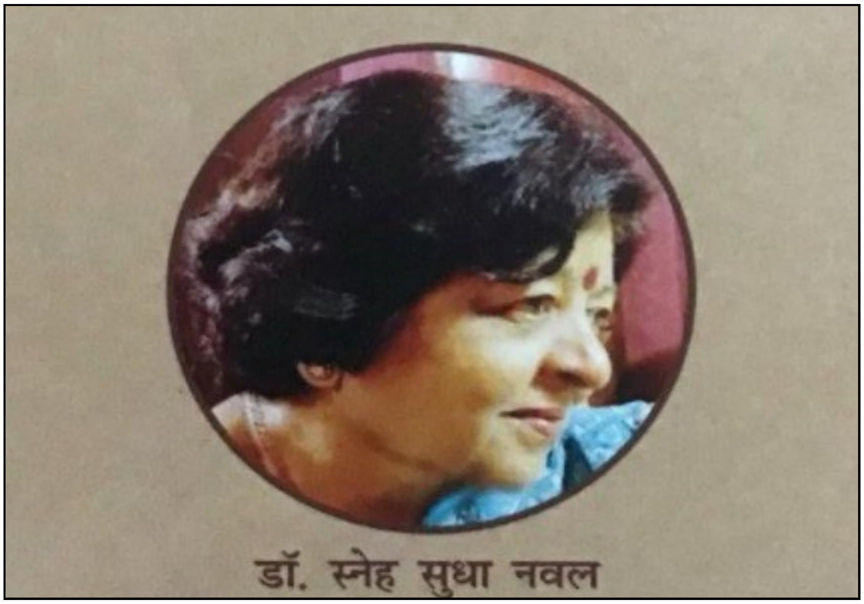

अंतर्राष्ट्रीय ई–पत्रिका हिंदी की गूँज के कवर पृष्ट पर सुशोभित पेंटिंग आदरणीया डॉ स्नेह सुधा नवल जी द्वारा बनाया गया है । डॉ स्नेह सुधा नवल बालपन से ही चित्रकला से जुडी हुई हैं । शौकिया चित्रकार के रूप में उनका जाना–माना नाम है । डॉ स्नेह सुधा नवल के चित्रों की एकल प्रदर्शनियाँ ,जागृति मंच ,दौलतराम कॉलेज,साक्षरा में आयोजित हुई और सहयोगी चित्रकार के रूप में रोटरी क्लब,दिल्ली अपटाउन ,साहित्य कला परिषद् ,ताशकंद में मेरीन होटल ,अमेरिका के होटल हरंडन ,हिंदी अकादमी दिल्ली में आयोजित हुई । डॉ स्नेह सुधा नवल एक प्रतिष्ठित कवयित्री भी हैं ।कला और साहित्य जगत के कई पुरस्कार उन्हें प्राप्त हुए हैं जिनमे अलाइंस क्लब , रोटरी क्लब ,पूर्व राष्ट्रपति जैल सिंह द्वारा कबीर सेवा सम्मान ,कादम्बिनी क्लब गाडवारा ,मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी,विदर्भ नागपुर और विश्व हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा प्रदत्त कला भारती व साहित्य भारती भी सम्मिलित है । 43 वर्ष दिल्ली विश्वविद्यालय के दौलतराम कॉलेज में प्राध्यापिका और कार्य प्रिंसिपल रहने के बाद अब अवकाश प्राप्त कर कला और साहित्य सेवा में संलग्न हैं ।

आपबीती

बिटिया ऑफिस के लिए निकल चुकी थी । पतिदेव भी नाश्ता कर चाय पी रहे थे । मैं अपने लिए हल्की सब्जी बना रही थी रसोई में। 'बड़ी बीमारी' की तो दवा ले चुकी थी बस शुगर(मधुमेह) की दवा लेने की सोच ही रही थी कि साहब बोले, "अच्छा जा रहा हूँ" । गैस की लौ मंदी कर पकती सब्जी छोड़, उन्हें 'सी–ऑफ' करने के लिए सीढ़ियों तक आ गई। जाते-जाते वे कुछ बोले पर समझ नहीं आया तो फिर से पूछा- क्या कह रहे हो जी!

"अरे भाई सब्जी वाला आ रहा है तुमने एक-दो सब्जी लेनी हो तो ले लो, मैं जा रहा हूँ ।" फिर क्या था! दवाई ले नहीं पाई । बालकोनी में गई । सब्जी वाले को आवाज लगाकर बुलाया- भैया! तनिक रुको, नीचे ही आ रही हूँ ।

ज़्यादा भारी सामान उठाना मना था तो बस सौ रुपल्ली साथ लेकर सीढ़ियाँ उतर गई ।

पाँच मिनट ही लगे होंगे, एक पॉलिथीन मैंने पकड़ा, बाकी, सब्जी वाले भैया को बोला, ऊपर घर तक छोड़ दो। सीढ़ियाँ चढ़ने लगी तो मन में कुछ खट्का-सा लगा । और ये लो! अनहोनी तो हो ही गई!!!!

दरवाजा ऑटोमेटिक लॉक वाला था । जाते समय याद ही नहीं रहा कि उसे खुला रहने दूँ या चाबी साथ लेकर उतरूँ । याद भी कैसे रहता! मैं तो उतरती ही नहीं नीचे । करोना-काल में बाहर के सब काम तो 'ये' ही करते हैं ।

घबराहट के मारे पूरा शरीर पसीने में भीग गया । दरवाजा लॉक! हाथ में सब्जी की थैलियाँ। सब्जी वाले को बोला- भैया अब क्या करूं??????? न चाबी, न मोबाइल! ताला भी कैसे खुले, कैसे टूटे! उसी से 'इनको' फोन करवाया । पतिदेव का नंबर था न उसके पास । हर दो-तीन दिन बाद सुबह आकर फोन करता है इनको कि 'नीचे आ गया हूँ कुछ लेना हो तो ले लो'

अभी 'ये' कुछ ही दूर पहुँचे होंगे । बोले, 'सब्जी वाले से ही कहो-चौक से जाकर चाबी वाले को बुला लाए' पर उसने तो साफ इंकार कर दिया- कहाँ जाना है मुझे तो मालूम नहीं । वैसे भी अपना ठेला छोड़कर काम के समय कहाँ जाता बेचारा!

कोई सोचे तो इस समय सबसे बेचारी तो मैं ही थी । गैस पर सब्जी जल के सड़ जाती, बारह बजने को थे! कुछ खाया भी नहीं था, यह तो शुक्र था कि शुगर की दवा भी नहीं खा पाई थी नहीं तो आज तो किसी के घर ही कुछ खाना पड़ता । बीस-तीस मिनट से अधिक भूखा भी कैसे रहती दवा लेकर ।

पसीने से भरी, घबराहट में पड़ोसियों की 'बेल' बजा दी। दोनों, मम्मी-बेटी भी मेरी हालत देखकर घबरा गयीं । पंखा खोलकर बिठाया, पानी लाने गयीं, सब्जियों की थैलियाँ अपने घर रखीं। पर! मुझे कहाँ चैन था ।

ताला तुड़वाना कोई आसान काम था क्या? वैसे भी दिनदहाड़े चोरियां होती हैं यहाँ । सब्जी के जल जाने का डर और!

इतनी देर में वह सब्जी वाला भैया वापस आया कि सर का फोन है । बात की तो कहने लगे- नीचे से तरुण को बुला लो, उससे कह दो कि चाबी वाले को बुला लाए ।

पंखे की हवा से कुछ पसीने सूखे, पानी पीया । पड़ोसियों की बिटिया ने कहा- भाभी आप बैठो, मैं तरुण को बुला लेती हूँ ।वह नीचे उतरी । मैं आंटी के पास बैठी पर मन में खलबली-बेचैनी बहुत हो रही थी । बैठकर आराम करने का टाइम ही कहाँ था ।

खुद सीढ़ियाँ उतरने लगी तो एक खयाल जेहन में कौंधा!

'क्यों न किसी को अपनी बालकनी से घर में चढ़वाया जाए, दरवाजा तो लक्कीली मैं खुला ही छोड़ आयी थी जब सब्जी वाले को रोकने गई थी । दिमाग की बत्ती जली । बस फिर क्या था...... अभी नीचे तरुण भैया से कहने की सोच ही रही थी कि भैया कहीं से सीढ़ी का इंतजाम करवा दो, बालकोनी से चढ़कर कोई घर में घुस सके तो बस फिर अंदर जाकर कुण्डी ही तो खोलनी है ।

और फिर!!! चमत्कार हुआ! हाँ चमत्कार ही तो था ।

तरुण भैया के घर की तरफ मुँह करके उनसे कह ही रही थी कि तभी 'पोल' से इंटरनेट-केबल ठीक करने वाले दो लड़के अचानक दिखाई पड़े, एक लंबी-सी स्टील की सीढ़ी हमारे पोल पर लगाए!

मेरा दिल बल्लियों उछल गया । मां भगवती का नाम रट रही थी अब तक । एक ही पल में लाखों प्रणाम भेज दिए उन दोनों देवदूतों के लिए ।

इसे कहते हैं न! एक दरवाजा बंद होता है तो दूसरा खुल जाता है और साथ ही साथ मां भगवती परेशानी देती है तो उसका हल भी उनकी कृपा से मिल ही जाता है बस कुछ देर माया अपना रंग जरूर दिखाती है और ऐसे में दिन में तारे नजर आ जाते हैं ।

चुप हैरान से वे दोनों लड़के मुझको देख रहे थे कि क्यों यह महिला चोरों की तरह बालकनी से अपने ही घर में चढ़ने की बात कर रही है ।तब तरुण भैया ने ही कहा- भाभी मैं जाता हूँ और उन्होंने यह कहकर सारी परेशानियां हल कर दीं ।

देखते ही देखते सीढ़ी पर चढ़ने लगे और देखिए सीढ़ी का आखिरी पायदान बिल्कुल छज्जे को छूता हुआ! जैसे नाप कर ही सीढ़ी भिजवाई हो माता रानी ने ।

भैया भीतर से दरवाजा खोल कर खड़े थे जब मैं साँस थामे घर तक पहुँची ।साँस में साँस आई भीतर जाकर बात कर ।

सबसे पहले गैस बन्द की ।

भगवान का शुक्र है कि सब जल्दी हो गया और सब्जी जलने से बच गई! अपना मोबाइल हाथ में उठाया और पतिदेव का नंबर घुमाया तो यूँ लगा जिंदगी पटरी पर लौट आई ।

डॉ पूनम माटिया
(कवयित्री-शायरा-लेखिका)
अध्यक्ष, अंतस(साहित्यिक, सांस्कृतिक व सामाजिक संस्था)

संवाद

पिंजरे में बंद दो सफेद कबूतरों को जब भारी भरकम लोगों की भीड़ के बीच लाया गया तो वे पिंजरे की सलाखों में सहम कर दुबकते जा रहे थे। फिर, दो हाथों ने एक कबूतर को जोर से पकड़ कर पिंजरे से बाहर निकालते हुए दूसरे हाथों को सौंप दिया। मारे दहशत के कबूतर ने अपनी दोनों आँखे भींच ली थी। समारोह के मुख्य अतिथि ने बारी-बारी से दोनों कबूतर उड़ाकर समारोह की शुरूआत की, तालियों की गड़गड़ाहट जोरों पर थी।

एक झटका-सा लगा फिर उस कबूतर को एहसास हुआ कि उसे तो पुन उन्मुक्त गगन में उड़ने का अवसर मिल रहा है। वह गिरते-गिरते संभल कर जैसे-तैसे उड़ चला। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा जब बगल में देखा कि दूसरा साथी कबूतर भी उड़कर उसके साथ आ मिला था। दोनों कबूतर अभी तक सहमें हुए थे। उनकी उड़ान सामान्य नहीं थी।

थोड़ी देर में सामान्य होने पर उड़ान लेते-लेते एक ने दूसरे से कहा, ''आदमी को समझना बहुत मुश्किल है। पहले हमें पकड़ा, फिर छोड़ दिया! यदि हमें उड़ने को छोड़ना ही था तो पकड़ कर इतनी यातना क्यों दी? मैं तो मारे डर के बस मर ही चला था।''

''चुप! बच गए ना, आदमी से! बस उड़ चल!''

रोहित कुमार 'हैप्पी'
न्यूजीलैंड

नई सरहद का अनुभव

अपने अमेरिका में विगत वर्षों में प्रवासकाल के दौरान हुए एक खास अविस्मरणीय अनुभव को आपसे सांझा करने से पहले एक बात बताना चाहूंगी, कि 'वर्ल्ड गिविंग इंडैक्स' के मुताबिक किसी अजनबी की मदद करने में अमेरिकियों का स्थान दुनिया में पहला है। ऐसी कितनी ही बातें हैं, जो अमेरिकी मानसिकता को भारतीयों से भिन्न बनाती हैं। ज्यादातर भारतीयों की तरह वे मेहनती होते हैं पर आसान रास्ता नहीं अपनाते। नए आईडियाज नई सोच डैवलप करने, नई सोच सामने रखने या फिर चीजों को नए तरीके से करने का प्रयास करने में अमेरिकी नहीं हिचकते और अक्सर परिणाम आश्चर्यजनक निकलते हैं। आपको जानकर हैरानी होगी कि अमेरिका में आज जिन्हें श्वेत या व्हाइट अमेरिकन कहा जाता है वो अमेरिका के मूल निवासी नहीं हैं। अमेरिका के मूल निवासियों को अमेरिकन

इंडियन्स या रेड इंडियन्स कहा जाता है। वर्षों पूर्व पहले फ्रांस फिर ब्रिटेन के लोग (अंग्रेज लोग) वहाँ बसने आयें और यहीं रह गए। वोही स्थानीय अमेरीकन कहलाते हैं। काम के प्रति उन का जनून और सकारात्मक प्रवृत्ति देखते ही बनती है। साथ ही आम धारणाओं के विपरीत अमेरिकी लोग स्वभाव से काफी विनम्र होते है। लेकिन कोशिश करें कि आप उनसे कोई व्यक्तिगत सवाल न पूछें। जब तक आप उनके साथ या वो आपके साथ बेहद सहज न हों, तब तक आप उनके साथ प्रोफेशनल रवैया अपनाए रखें और बेवजह ही अगर उनके साथ कोई बात शेयर करेंगे तो मिश्रित प्रतिक्रिया आपको मिल सकती है। और स्थानीय अमेरिकियों की यही बात से मैं अवगत थी। इसीलिए अपने पड़ोसी निकोल पीटरसन से इसी सोच की पटरी पर चलते हुए हाय-हैलो तक ही सीमित रही। हाँ कभी लिफ्ट में या कार पार्किंग में एक साथ आमना सामना हो गया तो हमारी बातचीत का अगला पड़ाव होता था उस दिन का मा.ैसम या कुछ और सहज और पर्सनल हुए तो "आज क्या खाया"। इसके आगे और व्यक्तिगत न हो इसके लिए अमेरिकी लोग आपको मौका ही नहीं देते...इसी के चलते मुझे भी अब सरहद में रहना आ गया था। चूंकि मैं अकेली रहती हूँ यह वे जानती थी और मुझे हमेशा कहती थी की "कभी भी किसी चीज की जरूरत हो तो अवश्य बताना"....और मैं मन ही मन उसके अनकहे को समझ हँसती थी....जैसे वो कह रही हो की हाँ, सिर्फ खास एमरजेंसी में ही बताना, पर वैसे अपनी सरहद में ही रहना। यहाँ के स्थानीय लोग रिश्तों में करीबी होने पर भी ज्यादा व्यक्तिगत नहीं होते, और हम भारतीय...हमें तो पहली मुलाकात में ही सामने वाले की पूरी जन्म-कुंडली जब तक खंगाल न लें तब तक मुलाकात अधूरी सी लगती है। और फिर अगली मुलाकात में और जानने हेतु सवालों की लिस्ट भी मन ही मन तैयार होने लगती है। खैर मैं अपने उस अनुभव को आपसे पहले बाँट लूँ जिसमे मेरा दिल छू लिया और मुझे पुनर्जन्म मिला।

कुछ दिन से मैं काफी बीमार सा, थका सा कमजोर महसूस तो कर रही थी, पर हालत ऐसी हो जाएगी...सोचा न था। सुबह से बेहद चक्कर आ रहें थे साथ ही छाती में भारीपन था। अपने देसी टोटके सारे आजमा चुकी थी, पर हालत सुधरने का नाम नहीं ले रही थी....सब देवी-देवताओं को भी याद कर चुकी थी। अपनी एक दो सहेलियों को भी फोन मिलाये फिर अपनी बिलि.डंग के ऑफिस में भी फोन किया की शायद कोई फोन उठा लें, तो अपनी स्थिति से अवगत कराऊँ, शायद कोई सहायता आ जाए। पर उस दिन तो जैसे शनि की साढ़ेसाती ही लगी हुई थी। हर फोन सिर्फ वॉइसमेल पर ही जा रहा था। जैसे-तैसे खुद को सम्हालने की कोशिश में यह याद ही नहीं रहा की एम्बुलेंस बुला सकती थी। एक अनजाने भय के कारण और पराये देश में अंतिम समय आने जैसे खौफ में, दिमाग और सोच ने काम करना ही बंद कर दिया था। इसी बीच अचानक साथ वाले अपार्टमेंट का दरवाजा खुला तो यकायक निकोल पीटरसन की याद आई, सोचा इसी से बात करती हूँ। पर अगले ही क्षण लगा की यह तो सिर्फ हाय-हैलो ही करना जानते हैं, बस उतने तक ही सीमित रिश्ता रखते है यह मेरी क्या मदद करेगी। काश कोई अपना भारतीय होता यहाँ। उस पूरी बिलि.डंग में कोई भी भारतीय परिवार नहीं रहता था....थे तो बस स्थानीय, एशियन और मेक्सिकन लोग।

अब तक मुझे साक्षात काल सामने दिखने लगा था....पर मन को समझाया की अरे यमलोक तो हमारे शास्त्रों और धर्म में बताया गया है....यहाँ अमेरिका में, इनका भी तो कोई मृत्युलोक होगा ही और वहाँ के यम को शायद मुझ पर तरस आ जाए क्योंकि मैं भी अमे.रीकन सिटिजन हूँ न। और अगर वो मुझे इस धरती पर और कुछ जीवन दान देना चाहे तो यकीनन मेरी गोरी पड़ोसन के दिल में मेरे पुकारने पर सरहद के पार भेज ही देगा। और ऐसा ही हुआ। जैसे ही मैंने गिरते पड़ते अपना दरवाजा खोल बाहर झाँका तो निकोल को बाहर खड़े देखा और तुरंत बिना हैलो किए सीधा उससे मेडिकल मदद के लिए पुकारा। तब तक मेरी सोचने समझने की शक्ति जवाब दे चुकी थी ...मैं सिर्फ उस सरहद की लकीर को ही देख पा रही थी की वो उसे पार करेगी या नहीं। और मैं बेहोश हो गयी।

अगले दिन जब आँखें खुली तो स्वयं को अस्पताल के बिस्तर पर पाया। अभी डॉक्टर से पूछ ही रही थी मुझे यहाँ कौन लाया और मुझे क्या हुआ....इतने में निकोल को अस्पताल के कमरे के दरवाजे से अंदर आते हुए देखा उसके हाथ में जूस भी था। और इधर मेरे आँखों में बहते आंसुओं ने उसे बिना कुछ बोले ही कृतज्ञता के भाव दिखा दिये थे। निकोल ने तुरंत नजदीक आ कर मेरे हाथों को सहलाया और सांत्वना दी। उसके हाथों में मेरे घर की चाबियाँ भी थी। उसने बताया की कैसे तुरंत मेरे बेहोश होने के बाद उसने तुरंत अस्पताल से एम्बुलेंस बुलाई और इसी समय दौड़ कर मेरे बेडरूम में जा कर मेरे बैग से घर की चाबियाँ और मेरा पर्स निकाला...जरूरत की दो-चार वस्तुएँ इकठ्ठा कर मेरे साथ अपनी कार में एम्बुलेंस के साथ-साथ यहाँ आ कर सारी औपचारिकता पूरी कर मुझे एड्मिट कराया। डॉक्टर के हाथ सौंप कर अपने पति को फोन कर हालत बताए और पति को घर जा कर बच्चों को खाना दें उनका खयाल रखने को कह दिया। मैं निकोल की इस आकस्मिक पर अनुभवी दक्षता को आँखों में अश्रु लिए निहारती ही रह गयी... और उन दिन पहली बार उसके परिवार और बच्चों के बारे में जाना तो सरहद की लकीर मिटने लगी....मुझे महसूस हुआ, मेरी अकस्मात बीमारी ने एल ओ सी, की लकीर को हल्का करने में खूब रोल निभाया हो। मुझे अपनी बीमार हालत से जैसे प्यार होने लगा था। मुझे एक सप्ताह अस्पताल में रहना पड़ा। इस बीच निकोल बराबर प्रतिदिन मेरा हाल-चाल पूछने आती रही।

अस्पताल से छुट्टी होने पर जब मैं घर वापस पहुंची, तो अंदर घुसते ही मेज पर मेरे पूरे आठ दिनों की डाक पड़ी दिखी। मेरी आँखों में सवाल देख निकोल ने तुरंत बताया की मेरे चाबी के गुच्छे में लेटर-बहक्स की चाबी देख वो रोज डाक निकलती रही थी। वो जानती थी हमारे लेटर- बहक्स अनुपात में छोटे हैं और दो-तीन में खाली करने ही पड़ते हैं। वरना उसके भरे होने पर, डाकिया फिर उसमे

और डाक नहीं डाल पाने के कारण डाक बाहर ही रख जाता है। उसकी इस सोच के पार मुझे सिर्फ मनुष्यता ही दिख रही थी, न की अमेरिकी और भीरतीय होने का अंतर। पर यहाँ यह तो कहना ही होगा की अगर, कोई मेरा अपना भी इस समय यहाँ होता तो यह सब इतनी दक्षता से न कर पाता।

घर आने पर मुझे पूरी तरह से स्वस्थ होने में पंद्रह दिन लग गए। इन पंद्रह दिनों में निकोल लगातार मेरे खाने पीने, मेरी डाक और दवाइयों का बराबर खयाल रखती रही। धीरे-धीरे बिल्डिंग के बाकी निवासी जो एशिया और मेक्सिकन मूल के थे, पर अब तो वे भी स्थानीय निवासियों की श्रेणी में आते थे, जिनमे से कुछ ग्रीन-कार्ड होल्डर और कुछ अमेरीकन सिटिजन बन चुके थे.... मिलने आते रहे...पर निकोल उन्हे भी मेरे पास ज्यादा देर बैठने और बोलने नहीं देती थी...अब वो मेरी सरहद के अंदर आ चुकी थी।

मेरे स्वस्थ होने तक मैं इसी गुमान में रही की सरहदें मिल चुकी हैं....पर मैं यहाँ भारतीय होने के कारण बहुत संवेदनशील हो, गलत सोच बैठी थी। जैसे ही निकोल ने महसूस किया कि मैं अब स्वस्थ हो कर अपनी पुरानी दिनचर्या में लौट रही हूँ...वैसे-वैसे ही उसकी तरफ की सरहद की धुंधलाई रेखा वापस अपने रूप-रंग में लौटने लगी थी। सरहद की लकीर के उस गहरे होते हुए रंग को मैं अपने अंदर वापस समाहित कर दोबारा ही पहले वाली निकोल को देखने चाहती थी और उस पुराने हाय-हैलो तक सीमित वाली अपनी पहचान को पुनर्जीवित रखने की चाहत में, एक मानसिक यंत्रणा से गुजर रही थी...जिसका अहसास निक. ोल तक नहीं पहुँच रहा था। कहीं पढ़ा था कि "अपेक्षा दु ख-तकलीफ की जननी है" पर हम भारतीय बस ऐसे ही होते हैं न।

पहले बार एक नए मजबूत एहसास के साथ रिश्तों के बारे में, एक नए दृष्टिकोण से यह सीखा कि......अकेलेपन के साथी, उन तमाम बिना सरहदों वाले रिश्तों से तो, यह सरहद वाले रिश्ते ही बेहतर है। जिन्हे अमेरिका के स्थानीय निवासी खूब निभाना जानते हैं।

डॉ अनिता कपूर
कैलिफोर्निया, अमेरिका

कलमुँही

हाँ!! यही तो नाम था उसका, बचपन से बस इसी नाम से तो पुकारा जाता था उसे, नानी भी यही कहती थी 'अरी कलमुँही! बहरी है क्या, अरे कलमुँही! पैदा होते ही मर क्यों न गयी, उनके ये शब्द सदा ही जिन्दा होने के एहसास को मार देते थे। लगता था कोई पुतला है वो, जिसमे रोबोटिक शक्ति आ गयी हो और नाना उसे देखकर जाने क्यों सर घुमा लेते थे। सच कहूँ तो कभी समझ नहीं पायी वो, कि ये घृणा थी या शर्मिंदगी, पर जो भी थी बहुत सच्ची थी।
ये तो है जब भी जिसने भी उसके प्रति अपनी भावना दर्शायी, बिलकुल सोलह आने सच्ची थी।
हाँ!! ये बात अलग है उसमे नफरत, घृणा, कड़ुवाहट ही उसके हिस्से आई। कहते है न कोई बात बार - बार कही जाये, तो वो ही अच्छी लगने लगती है, बस बहुत प्यारा लगने लगा उसे उसका नाम ''कलमुँही''।
कई बार जानना चाहा क्यों है कलमुँही वो।
रंग तो गोरा था उसका, शुक्लपक्ष के चाँद जैसा, उजला। कहा तो किसी ने कभी नहीं मुँह से, पर दर्पण कहता था रात के अँधेरे में चुपके से जब वो उसे देखती थी, अंतर्मन दर्पण की आवाज बनकर चीत्कार करता था ''बहुत सुन्दर है रे तू कलमुँही''।

हँस पड़ती थी वो खुलकर, एक रात और अंधेरा ही तो उसका अपना था। पर तब भी जाने क्यों आँखे कभी उसकी खुशी का साथ नहीं देती थी, जलनखोट्टी भर जाती थी नीर से और कर देती थी धुंधला, अधूरे पूरे सच को। कहती थी वो दीदी!! दुश्मन अखियाँ ! मेरी सुन्दरता से जलकर आँसू बहाती है ।यौवन आया तो सपने भी आये सोचा कोई तो अपना होगा जो उसके रूप को सराहेगा कम से कम कलमुँही नहीं कहेगा। पर कलमुँही ! कलमुँही ही रही, क्या सास, क्या पति बस परिवेश और घर बदल गए थे। भावनाएं वही चित-परिचित। यूँ तो उसे आदत थी अपने प्रति लोंगों की उपेक्षा और तिरस्कार के व्यवहार की। पर स्वप्न टूटे थे वो भी यौवन के प्रेम और अनुराग से पूर्ण। बचपन से यही व्यवहार उसके लिए सामान्य व्यवहार रहा था इसलिए बुरा लगने की भावना से कोसों दूर थी। पर प्रेम जिसकी लालसा थी उसे, जो कल्पना मे था उसके, पति से उपेक्षा असहनीय क्यों होने लगी थी। सुना था मिट्टी की दीवारों के पीछे से उसने जब नाना ने कहा था जमीन जाती है तो जाये बस इस कलमुँही को निकालो यहां से। प्रश्न तो ये भी था क्या वो दहेज के नाम पर बेची गयी थी पर उससे भी विकट प्रश्न प्रेम का न होना था। उम्र के सोलहवें दौर मे प्रेम से बड़ा कोई प्रश्न नही होता है। क्यों नही करते मेरे अपने मुझसे प्रेम, जिज्ञासा ने मन को झकझोर दिया, माना गड़े मुर्दे उखाड़ने से सडांध ही फैलती है, पर जानना था और जान भी गयी, निशानी थी कलमुँही, किसी की मानसिक विकृतता की, वहशी पन, तन की भूख की।

उसकी माँ तो पुरुष के दंभ, भूख, हविश का शिकार हो गयी पर उसे छोड़ गयी जीते जी मरने के लिए।सोच में थी और पीड़ा में भी ...द्वन्द - अंतर्द्वंद सा उठा था मन में ''कलमुँही वो कैसे'' ??
उसका तो दोष भी नहीं था, फिर आप उन्हें क्या कहेंगे जो कर्म काला करते है????
प्रश्न! प्रश्न! प्रश्न!
उत्तर अनुत्तरित
कलमुँही।

डॉ शिप्रा शिल्पी सक्सेना
कोलोन, जर्मनी

तन्हाइयो का घेरा हैं

आज फिर...
आज फिर
तन्हाइयों का घेरा हैं

काली घनघोर रात
और दूर कहीं सवेरा हैं
आज फिर
तन्हाइयों का घेरा हैं

ये कैसा जिंदगानी का दस्तूर
बरसात में, झुलसा रहीं धूप
मौसम का कोई रंग गहरा हैं
आज फिर
तन्हाइयो का घेरा हैं

उड़ा रही वक्त की आँधी
अब न जानें
किस शाख पर बसेरा हैं
आज फिर
तन्हाइयों का घेरा हैं

जिंदगी का अजब दस्तूर
जो अब तक था अपना
वो अब पराया सा है
आज फिर
तन्हाइयों का घेरा हैं....

दामन में पनाह ए मंजर देख
सिसक रही साँसे
आज फिर
तन्हाइयों का घेरा हैं...

ये फरेब हैं या किस्मत
रूह ये काँप रहीं हैं
आज फिर
तन्हाइयों का घेरा हैं..

राकेश छोकर

करवाचौथ

देखो आयी अखंड सौभाग्य वाली करवाचौथ की रात,
किया दुल्हन जैसा श्रृंगार और मेहंदी रचाई पूरे हाथ,
पिया की लम्बी उम्र मांगू कर के निर्जला उपवास।

सातों जनम हम रहें संग -संग यही व्रत से है आस,
सजा पूजा की थाल, करवा और दीप लेकर के हाथ,
छलनी के पीछे से देखूं चौथ का चाँद
और मेरा चाँद दोनों एक साथ।

पिया के हाथ से पी कर पानी पूर्ण करूँ ये त्यौहार।
ऐसे में प्रियतम तुमने जो रखा काँधे पर हाथ ,
फिर से याद आ गयी वो मिलन की पहली रात।
नीले-नीले आसमान में सज गयी तारों की बारात।
घुल गयी हवा में खुशबू ,महक गए मेरे ख़्यालात।

कहता मन मेरा खास होती हीं है करवाचौथ की रात ,
चन्द्रमा सोलह कलाओं से सुशोभित हो नील गगन में करता राज।
सर्द चाँद है निखरा- निखरा , चांदनी भी शरमा रही।
शीतल- शीतल चांदनी दिल में अगन सुलगा रही।

स्नेह- प्रीत की बूंदों संग निशा दे रही अब निमंत्रण ,
चाँद-तारों की छाँव में हो अब अपना मधुर मिलन।
आओ सपनों के आकाशगंगा में अपना एक संसार बसाएं ,
इस श्वेताकाश चांदनी रात के आगोश में दो पावन मन मिल जाएँ।

डॉ.श्वेता सिन्हा
पीएचडी (पर्यावरण विज्ञान),
आईआईटी, धनबाद.
वर्तमान निवासः आईयोवा, यूएसए

WORLD HUMAN RIGHTS ORGANIZATION
WHRO

एक दिन तू आएगा जरूर

तू तो अलग ही मिट्टी का बना था
वतन परस्ती के इश्क में रमा था
तेरी तो बस इतनी सी दास्तान है
तेरे महबूब का नाम हिन्दुस्तान है

ऐशो आराम ,रेशमी लिबास कहाँ
तूने तो बस चुना तिरंगे का कफन
वतन की शान जिसकी पहचान
उस वीर को हमारा शत शत नमन

एक सवाल२
तेरे बलिदान से मुल्क में क्या बदला?
सब कुछ तो अब भी पहले जैसा है
चौराहे की मूर्ति बन तू रह गया
सबसे कीमती आज भी बस पैसा है

माँ तो आज भी तेरी राह तकती है
बाप की आँखों से उदासी झलकती है
बहन ससुराल गई फिर भी वो उदास हैं
राखी से तेरी कलाई सजाने की आस है

तेरी सोहनी आज भी खूब सँवरती हैं
उसे आज भी तेरे आने का इंतजार है
लौटकर वापस कभी ना आएगा तू
मानने को ये बात कतई न तैयार है

तू तो जमीनी रिश्तों से मुँह मोड़ गया
अपनों को दिया हर वादा तोड़ गया
कभी वहाँ से जरा झाँक के तो देख
सिक्के के दूसरे पहलू को आंक के तो देख

माँ ने अभी अभी चूल्हा जलाया है
तेरे हिस्से की रोटी प्यार से पकाया है
छोटी सी इल्तजा है एक बार तो आजा
माँ के हाथों से दो निवाला तो खा जा

मोतियाबिंद बाप की आँखे निगल रही है
उसे अपना वर्दी वाला रूप तो दिखा जा
सोहनी आज भी लाल जोड़ा पहने बैठी है
सूनी माँग उसकी एक बार तो सजा जा
वतन का हर फर्ज तो अता किया तूने
बाकी रह गये इन कर्जों को भी चुका जा

मुझे यकीन है २
तेरा गाँव तुझे बुलाएगा जरूर
तू अपनों से मिलने आएगा जरूर

हवा के झोंके संग, ओस की बूंदें बन
खेतों की हरियाली में, शाम की लाली में
घटाओं में ढल, बारिश की बूंदों में बदल
अपने गाँव में बरस जाने
खेतों की मिट्टी में समा जाने
अपनों की प्यास बुझा जाने
मुझे यकीन है तू आएगा
बारिश की बूंदों संग जरूर आएगा

श्वेता सिंह 'उमा'
मास्को, रुस

खुशबू

एकांत की क्या कहूँ ,बरसों से भीड़ के साथ रहते हुए भी मन का एक कोना अकेला है लेकिन उदास कभी नही रहता था । खुल कर ठहाके लगाना मेरी आदतों में शुमार था शायद मेरे ठहाकों को मेरी ही नजर लग गयी । उस दिन किसी ने कहा तुमने अपनी कहानी की किताब का नाम ''कोई खुशबू उदास करती है ' क्यों र खा । आजकल तुम उदास लिखती हो तुम उदास लगने लगी हो, ज्यादा उदास रहने से उदासी की आदत बन जायेगी बस तब से सोच में हूँ ...

उदास होना तो प्रकृति ने सबकी नियति में लिखा है।हर कोई किसी न किसी क्षण में उदास होता है, लेकिन अवसाद को हावी नही होने देता । मैंने तो कई बार उदासियों के महासागर देखे है लेकिन मेरे मन की छोटी सी नाव उम्मीद की पतवार के सहारे वास्को डी गामा बनकर अपनी बाकी बचीकुची जिंदगी की तलाश में है ।मन की यात्राएँ मुझे बहुत पसंद है और हर बार सामने वाले को उदास देखकर अपनी जिन्दगी की खुशियों के लिए ईश्वर का शुकराना भी अदा करती हूँ।

आजकल मूड़ी हो गयी हूँ ,यस(चाहे तो) आप बूढ़ी भी पढ़ सकते है । आजकल कार की पिछली सीट पर बैठे बैठे मोबाइल में सर घुसाए रहती हूँ । शहनाज ओर सिद्धार्थ के वीडियो देखती रहती हूँ। परिजनों से 'कोई कंपनी मेरे बिना लहस में नही जायेगी' के ताने उलाहने सुनती रहती हूँ । बार बार सबके कहने पर फोन को कुछ देर के लिए चार्जिंग रूपी अहक्सिजन का मास्क पहनाती हूँ तो नजरें बाहर घूमती है कि ''ओह यह तो दिल्ली है मेरी जान'' । मुझे पता ही नही चलता कि दिल्ली है देहरादून ,मुजफ्फरनगर है या मेरठ । हवाओ की ठंडक कभी कभार ही अहसास दिलाती है कि जिस शहर में आजकल तुम रहती हो न वहाँ का मौसम थोड़ा नम है, खुश्क है या सर्द क्योंकि मन का मौसम तो आजकल खोया खोया रहता है ।

खैर बात हो रही थी कार के बाहर झाँकने की । कल दिल्ली कैंट की एक सड़क पर रेड लाइट पर ट्रैफिक काफी ज्यादा था ।कारें धीरे धीरे सरक रही थी ।अचानक एक काली बाइक आगे आयी । हेलमेट पहने कोई मध्यम कद काठी का लड़का (या आदमी) ड्राइव कर रहा था। एक मोटी लड़की (मुझसे कम) बाइक पर उसके पीछे बैठी थी । झटके से एकदम मेरी विंडो के साथ बाइक रुकी थी तो नजर जाना स्वाभाविक ही था । पाकिस्तानी लहन प्रिंट का पलाजो सूट पहने उस लड़की का हाथ उस लड़के की कमर पर था और आगे से उसकी शर्ट को मुठ्ठी में हल्का पकड़ा हुआ था। लड़के ने बड़े प्यार से उस हाथ को थामा और अपने होठों तक ले जाकर हौले से चूम लिया । हेलमेट की वजह से उसका चेहरा नजर नही आया लेकिन लम्बी सी नाक हेलमेट के आगे शीशा ६ प्लास्टिक न लगे होने से बाहर तक नजर आ रही थी ।

न जाने वो दोनो कौन थे लेकिन उनको देख कर एक प्यारा सा अहसास हुआ । हर रेडलाइट पर फेविकॉल के जोड़ की तर्ज पर चिपके लड़के लड़कियां नजर आ जाते है लेकिन यह तो .... मौसम सुहाना सा लगने लगा था ।

फिर तो नजर उस बाइक के साथ साथ चलती रही ।कभी कार के आगे कभी कहीं पीछे बाइक हमारे साथ साथ रही ।वेगास महल के फूड कोर्ट में उस प्रिंट सूट को फिर मैंने अपने से आगे वाली टेबल पर बैठे देखा। अकेली बैठी वो चुपचाप फोन में एक तस्वीर देख रही थी। एक लड़के के साथ तस्वीर, लेकिन तस्वीर वाला लड़का साथ आये लड़के से अलग था । मेरे बच्चे भी मेरे लिए खाना लेने के लिए गए थे ।हर कोई आता और हम खाली कुर्सी ले सकते है कहकर झुकने लगता । हर बार मना करती मेरी नजर उस महिला के सामने रखी खाली कुर्सी पर थी ।जिसपर जारा का शहपिंग बैग था।तभी अचानक किसी का कहल उसके फोन पर आया

मंद स्वर से फुसफुसाती सी वो बोली.. '' आहो बीजी आज मैनू महल लेके आये ने,पिज़्जा लेण गए ने , मैं नही रहणा एथ्थे, मैं काके नू मिस कर रहिया। उन्ने रोटी खादी आज ? नही प्रशांत चंगा हेगा लेकिन देव वर्गा तां नही हो सकदा न। बीजी जे कोरोना न होंदा ते आज देव मेरे नाल हौंदा ।'' उसकी खामोश सिसकियां सिर्फ मुझे सुनाई दी । मैंने उसके कंधे पर हाथ रखा और वो भीगी आँ खों से मुस्कुरा दी ।

आप नही समझे न माजरा ?

नामुराद कोरोना ने कितने घरों के चिराग बुझा दिए । कितने तकिये अंदर तक आँसुओं की सीलन से भीगे हुए है। लेकिन कुछ ऊँची दीवारों के बीच मंद बुझती आँखों ने उम्मीद नहीं छोड़ी । जिन्दगी की उम्मीद, आने वाले कल की उम्मीद , अमावस की रात में जुगनुओं की रोशनी की उम्मीद, सुबह के आने की उम्मीद । उन बुझती उम्मीदों ने अपने बड़े बेटे के जाने के बाद छोटे बेटे की शादी बड़े की पत्नी से कर दी । छोटे ने मेरी लाइफ मेरा रूल मेरे सपने न कहकर उस जिम्मेदारी को प्यार से सम्हाल लिया । (है न हमारी परिवार संस्था महान)

नया उनका नया नया रिश्ता है। अचानक जुलाई में ही उनदोनो के रिश्ते ने नाम और रंग बदला है । उनके रिश्ते की खुशबू बदल गयी है सो लड़की के ४ साल के बच्चे को दादी ने साथ रख लिया कि अब यह दोनो आपस मे एक दूसरे को समझें। फिर बाकी सब अबकि बार साथ रहेंगे। पंजाब के गाँव में जमीन बेचने की तैयारी चल रही है ।खेती करने वाला किसान बेटा अब नही रहा। बूढ़ा बाप कब तक माफियाओं से जमीन बचायेगा। द्वारका में फ्लैट खरीदने की बात चल रही है । अब जितनी जिंदगी बची है सब साथ साथ बिताएँगे।

अब बताओ ऐसी खुशबुएँ उदास करेंगी न .... चाहे उम्मीद भरी खुशबू है ।

निविया

यह शहर

बेमुरव्वत शहर
तू लूटेरा भी है
वह भी सारे आम
कैसी कैसी पट्टियाँ पढ़ाता है
लेकिन
तेरे लबों पर ठहराव का
नामो निशां नहीं ।

सिरफिरा शहर
तू तो सँपेरा भी है
अपनी टूटी बीन पर
अच्छों अच्छों को नचाता है
घड़ी की टिक टिक करती सुई की तरह
किसी को चैन नहीं लेने देता ।

बिकाऊ शहर
तू हर रोज बिकता है
यहाँ तो हर एक चीज बिकाऊ है
बिकाऊ हैं
हर रिस्ते
दिल के रिस्ते से लेकर
जिस्म के रिस्ते तक ।

बेसरम शहर
अदद सा तेरा यह रूप
कितना घिनौना है
अपनी औकात भी नहीं जनता
लेकिन तेरा यह ख्वाब
ऐतिहासिक स्थलों मे शिरोमणि
दिवा स्वप्न ही तो है ।

फिर भी
तू लगता है
बेचारा शहर
चाँद तराश रहे प्रेमी युगल की
तस्वीर तो देखी है तुने
जवान व खूबसूरत जिस्म भी
यह क्यों भूल जाता है
सबसे अधिक टूटन भी
तुमने ही देखी है
दिलेरों को रोते भी ।

फिर भी अपने आप पर
इतराता है
यह शहर
हर राह मे एक भीत
होने पर भी
मुस्कुराता है
इसलिए तो तुम्हारा स्पर्श
फिर भी लोमहर्षक लगता है ।

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
वेव सम्पादक
हिन्दी की गूँज

विवाहिता

कैसा रिश्ता है ये
फूल सी खुशबू लिये
काँटों सा चुभ जाता है ये
रखना पड़ता है दुनिया के लिये

ओढ़नी बन मर्यादा बनता है
सिर झुकाए झूठ से जूझता है ये
बेतुकी मुस्कानों में भी पलता है
दूसरों के डर से भी पनपता है ये

बगीचे जैसा कभी खिलता है ये
आँसुओं से जो सींचा जाता इसे
बहारों जैसा बहता रहता है कभी
सुख दुःख का झूला झुलाये सभी

अदृश्य बेड़ियों सा चिपकता है ये
उधेड़ बुन करता संवरता है कभी
खुदाई को आजमाता है जब भी
खुद का बेजोड़ सहारा बन जाता है ये

सुनीता चाँदला

उपहास

आज हमारी सोसायटी में उदासी छायी हुई थी, बोर्ड का परिणाम जो निकला था। सोसायटी में नीलिमा ने पंखे से झुलकर आत्महत्या कर ली थी, कारण? पूरा साल मौज मस्ती में खर्च कर डाला,और असफल रही, तो पिता ने उसे गुस्से में आकर दो शब्द क्या कह दिये, लटक गई पंखे पर।

सब लोग आपस में बतिया रहे थेकृ 'क्या जमाना आया है?आज के बच्चों को तो कुछ कह ही नहीं सकते।' कोई कहता- 'मां-बाप तो कुछ नहीं कह सकते!' कोई कहता ----- 'रुपये क्या मुफ्त में थोड़ी न आते है? स्कूल की फीस, क्लास की फीस। अरे बाप तो फीस भरते हुए झुक जाता है, अतः कहेगा तो सही।'

नीलिमा का छोटा भाई राकेश पांचवी कक्षा में पढ़ रहा था। उसने अपनी मां को पिता के सामने दिल हलका करते सुना था --- बेटी को तो खो दिया अब बेटे को कुछ मत कहना। पढ़ना होगा तो ठीक है, वरना उसकी तकदीर। इस बात को सुनकर राकेश खुश हो गया, कि मुझे कभी कोई डांटेगा नहीं। पढ़ाई में लापरवाह हो गया।नीलिमा को खो देने के बाद माता-पिता इतने ड़र गये थे कि राकेश को कुछ नहीं कहते थे। समय गुजरता चला। राकेश को प्रमोशन मिलता रहा, परंतु बोर्ड में वह असफल हो गया, परंतु माता-पिता ने उसे कुछ नहीं कहा। राकेश के पिता जिस मील में काम करते थे वह भी बंद हो गयी। मां दो-तीन घर में खाना पकाने का काम करती थीं, पिता भी काम के लिए मेहनत कर रहे थे। बड़ी मुश्किल से संसार का पहिया चलता था। रुपये न होने से राकेश की पढ़ाई भी रुक गई।अब जाकर राकेश को पढ़ाई कीमत समझ आई और वह मन से दुःखी भी हुआ, पर क्या गुजरा जमाना-समय कभी लौटकर आता है? घर के हालात बदतर हो रहे थे अतः राकेश काम खोजने लगा। बड़ी से बड़ी डिग्री धारी बेरोजगार घूम रहे हैं, तो उसे नौकरी कहाँ से मिलेगी?

राकेश मां-बाप को रोते-बिलखते देखता, तब दुःख भी होता, मन में ही खुद को कोसने लगता, सोचता-मैंने ही मेरे माता-पिता की बेबसी का फायदा उठाया है और खुद का भविष्य बर्बाद किया है।वाकई में मुझे उनका आधार बनना चाहिए, उसकी अपेक्षा पीड़ा-दुःख ही दिया है। मां-बाप तो बच्चों के लिए जान न्योछावर करते....... .... ।

डॉ.नयना डेलीवाला

चेयर पर्सन

हरीश ने जैसे ही घर में कदम रखा कि बस शुरू हो गया अहृफिस के किस्से रमा को सुनाने के लिए।

"पता है रमा आज सुनील बेहद उखड़ा हुआ था, हुआ कुछ यूँ कि सुनील की पत्नी ने दूध उबलना रखा और उसे निगरानी के लिए बोल दिया।वहीं बच्चे कैरम खेल रहे थे तो सुनील का मन भी कैरम खेलने को मचल उठा।दूध को जल्दी उबालने के लिए गैस को पूरा तेज किया और खेल देखने में इतना मस्त हुआ कि सारा दूध उबल उबल कर भगोने से बाहर फैल गया। बस इतनी सी बात पर उसकी पत्नी का चिल्लाना शुरू।एक काम भी ढंग से नही कर सकते।सारा दूध गिरा दिया।" किस्सा सुनाते हुए हरीश का मुँह व्यंग्य से टेढ़ा हो गया था और मुस्कान कटीली।

रमा निर्लिप्त भाव से बस सुन रही थी।

"अरे रमा वो एक दिन तुमने जो कपड़े सुखाने को बोला था मुझे, मैंने भी वही किस्सा सुना दिया कि किस तरह फिर तुम गुस्सा हुई थी जब मैं मशीन का स्विच ऑफ करना भूल गया था और नल ही तो बन्द नही किया था।कितनी बातें सुना डाली थी तुमने। न जाने किस ख्याल में गुम रहते हैं करन्ट लग जाता तो।कोई काम कहना ही बेकार है।भई सीधी सी बात है मैंने तो चुप रहने में ही भलाई समझी"

रमा,हरीश के कटाक्ष को समझ गयी लेकिन फिर भी चुप रही।

रमा की चुप्पी ने हरीश के हौसले और बुलन्द कर दिए।

हरीश ने फिर एक और अनुभव साझा किया एक बुजुर्ग सहयोगी का।बड़े ही चुटीले अंदाज में कहने लगे-"भाई पत्नी आती हैं तब घर की मेंबर बनती हैं। पति बेचारा मेंबर ही रह जाता है और पत्नी चेयरपर्सन बन जाती है।"

इसके साथ ही सभी सहयोगियों के ठहाके का लगा तड़का भी बताना न भूले।

अब बात रमा की बर्दाश्त से बाहर थी ।

उसने आव देखा न ताव फौरन जवाब दिया -" देखिये पतिदेव काबलियत है महिलाओं में तभी तो पुरुष मेंबर रह जाता है और नई आई पत्नी चेयरपर्सन की सीट हथिया लेती है साथ ही घर तो छोड़िए ऑफिस में भी दिलो दिमाग में छाई रहती है।क्या आपके अहृफिस का कोई किस्सा ऐसा है जिसमे पत्नी का नामो निशाँ तक न हो।"

अब बगलें झांकने की बारी हरीश की थी और मुस्कुराने की रमा की।

विनय पंवार

संवादों की अवसन्नता

शब्द आगे बढ़ते तो हैं
लेकिन संशय के साथ
जैसे उन्हें पूर्व में ही विदित हो कि
जब दो लोगों के बीच का मौन
अनसुना होने लग जाए
तब शब्द भी अबल हो जाते हैं।
यही कारण है शायद कि
बीच रास्ते में ही अब
सब संवाद भरभरा कर गिर जाते हैं।

यूँ भी शब्दों के अर्थ
कहने वाले से अधिक
सुनने वाले की मनोदशा पर
निर्भर करते हैं
पूर्व में अनेकों बार
मेरी नासमझियों पर
निष्कलुष ठहाका लगाते हुए तुमने
अंक में भर कहा-- पगली हो तुम!
तब तुम्हारे सीने से टिक कर
आँखें बंद कर दुनिया को बिसरा देना
सबसे बड़ी समझदारी लगती थी।

आज संवादों की अवसन्नता से
आहत मन सोचता है कि
काश तब खुली रखी होती आँखें
या आज तुम्हारे तंज
''अधिक समझदार हो गई हो!''
सुनकर, उसी सहजता से
तुम्हारे सीने में मुँह छुपा
महसूस कर पाती
तुम्हारे अधरों का कोमल स्पर्श,
मौन के संगीत की कोई अनुगूँज
दोनों को अब तक जाने से रोके है
इस स्वर के भी निष्प्राण होने से पूर्व
आओ मेरी आत्मा पर अंकित
अपने सभी चिह्न वापस ले लो!
राहें पृथक करने से पहले
स्मृतियों का उचित बँटवारा
आवश्यक जो है।

निधि अग्रवाल

एक सपना है मेरा

हो ये पूरी दुनिया एक फुलवारी सी,
हरी-भरी, रंग-बिरंगे फूलों से भरी,
जिनकी खुशबू से हो,
अनुभूति स्वर्ग सी, / हमारी बच्चियां,
बन के चिड़ियां,
चहक रही हों,/ बनके तितलियां,
खुले आसमां में डोल रही हों,
इधर से उधर, निडर,
बेखौफ फल-फूल रही हों,
एक बगिया की तरह....
समेटे हों अपने जीवन में,
वो तमाम रंग,/वो तमाम खुशबूएं,
जो उनके होने से ही तो हैं,
हम सबके जीवन में,/और दूर बैठे हम सब,
देख रहे हो उनकी उड़ाने,
सुन रहे हो केवल और केवल,
उनकी चहचहाटें,/बांट रहे हो केवल और केवल,
उनकी खुशियां,/एक दूसरे की ओर देखकर,
हम कह रहे हो गर्व से,
हां.....
इनके होने से ही तो है ये सृष्टि!
ये संपूर्ण सृष्टि!

क्या ये सपना कभी पूरा हो पाएगा?
क्या ये सपना कभी सच हो पाएगा?
मेरा, आपका,/हम सबका एक सुंदर,
पर अधूरा सपना.....

रुको, संभालो,
अरे अब तो ठहर जाओ,
बो लो बेटियां,/उगा लो बेटियां,
लहलहा लो बेटियां,
बचा लो बेटियां,/देर जो एक बार कर दी गर तुमने,
हो जाएगी संस्कृति की,
सभ्यता की, समाज की,
मानव की फिर इति....
इनके होने से ही तो है ये सृष्टि!
ये संपूर्ण सृष्टि!

स्मृति चौधरी
सहारनपुर, उत्तर प्रदेश
भारत

बारिश में भीगे हाइकु

पावस ऋतु
भीगे गाँव हमारे
भीगे चौबारे

*
सावन झूला
रिमझिम बुंदियाँ
झूलें गुइंयाँ

*
मेघ सींचते
प्रकृति और प्यार
राग मल्हार

*
बदरवा में
बिजुरी चमचम
धमकधम

*
रजनीगन्धा
महके रातरानी
जूही दिवानी

*
शेफाली गुच्छ
खिल उठते सुन
रागश्री धुन

- **नीलम वर्मा**

माँ

काश तू फिर लौट आती माँ,
और फिर कभी ना जाती माँ
आज तेरे आंचल में मुंह छुपाने को
तरस रही है मेरी दुनिया
तेरा साथ पाने से ज्यादा दुनिया में
कुछ और नहीं है बढ़िया
अपनी छवि मुझमें देख
फिर आज तू हरषाती माँ

काश! तू फिर लौट आती माँ
और फिर कभी कभी ना जाती माँ
देख! तेरी बनाई कृति में रंग
कितने भर दिए मैंने
आरजू तूने जो पाली थी
सारी पूरी कर दी है मैंने
अपने ही प्यारे से रूप को देख
फिर से खिलखिलाती ओ माँ
काश! तू फिर लौट आती माँ
और फिर कभी ना जाती माँ

जाने से तेरे आज मैं
कितनी अकेली पड गई
लाख चाहा मैं न रोऊँ
फिर भी रोती रही गई
एक बार आ के संजोने
आंख से मोती ओ माँ
काश! तू फिर लौट आती माँ
और फिर कभी ना जाती माँ

डा.सुनीता गौड़
अनूपशहर, बुलन्दशहर (उ.प्र.)

मॉरिशस हिंदी साहित्य पर आधारित नई पुस्तकें

१. 'मॉरिशस के लेखक रामदेव धुरंधर की जुबानी' की सार्थकता–

विश्व हिंदी दिवस 10 जनवरी को डॉ. दीपक पाण्डेय की नवीनतम पुस्तक 'मॉरिशस के लेखक रामदेव धुरंधर की जुबानी' पुस्तक का लोकार्पण मुंबई के मुक्ति फाउंडेशन, अंधेरी वेस्ट के सभागार में हुआ। मॉरीशस में हिंदी भाषा और साहित्य की समृद्ध परंपरा है जो भारतीय मजदूरों के मॉरीशस पहुँचने के साथ रोपी गई थी। आज मॉरीशस में हिंदी साहित्य की सभी विधाओं में लेखन हो रहा है और वैश्विक हिंदी जगत में इसकी विशिष्ट पहचान है। मॉरीशस के कथा–साहित्य में रामदेव धुरंधर अग्रणी पंक्ति के रचनाकार हैं। डॉ.पाण्डेय ने रामदेव धुरंधर के साथ उनकी रचनाधर्मिता पर आधारित जो संवाद किया, वह इस पुस्तक में शामिल है। धुरंधर जी ने दीपक पाण्डेय के प्रश्नों का पूरी सहृदयता और गंभीरता से उत्तर दिए हैं। इस संवाद से प्रख्यात लेखक धुरंधर जी की लेखनी के वैशिष्ट को पहचाना जा सकता है।

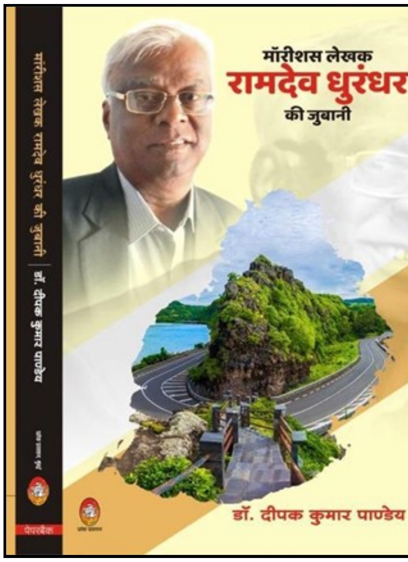

इस संवादों को पढ़ने के बाद मैं डॉ. पाण्डेय द्वारा भूमिका में लिखी बात से सहमति रखता हूँ कि धुरंधर जी का छह खंडों में प्रकाशित उपन्यास 'पथरीला सोना' हिंदी साहित्य की अनुपम निधि है जिसकी कथा लगभग 3000 पृष्ठों की है और उसमें 600 के करीब पात्र हैं। धुरंधर जी ने अपनी इस विशालतम कृति के संबंध में जो व्यखात्मक उत्तर दिए हैं वे इस बात को प्रमाणित करते हैं कि यह उपन्यास भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के जीवन की छोटी–बड़ी घटनाओं का दिग्दर्शन कराते हुए मॉरीशस के इतिहास को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया दस्तावेज बन गया है। धुरंधर जी की स्वीकारोक्ति है कि ' मेरे अतीत ने मेरे लेखन का पिटारा मुझे थमा दिया । ऐसा न हुआ होता तो मैं आज कहने की स्थिति में न होता कि मेरे लेखन का सफर मेरे अतीत से शुरू होकर मेरे वर्तमान में पहुंचा है । उम्र के हिसाब से मेरा जीवन जिस पड़ाव पर है उसमें मेरे लेखन में विशेष रूप से मेरा देश हावी रहा है। मैंने उसी के चित्रण में अपने को तपाया है ।' वास्तव में इस पुस्तक का संवाद जहाँ लेखक के साहित्यकर्म को समझने का अवसर देता है वहीं लेखक के साहित्य के माध्यम से मॉरीशस और भारत–भारतीयता के संबंधों की गहराई में उतरने का द्वार भी खोलता है। डॉ। दीपक का यह प्रयास सराहनीय है और मॉरिशस हिंदी साहित्य के बारे में जानने वालों की इच्छा को अवश्य पूरित करेगा ।

इस पुस्तक में हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार और व्यंग्य विधा को समर्पित विद्वान डॉ.प्रेम जनमेजय का प्राक्कथन पुस्तक की सार्थकता को रेखांकित करता है।

समीक्ष्य कृति : मॉरीशस के लेखक रामदेव धुरंधर की जुबानी
लेखक : डॉ. दीपक कुमार पांडेय
प्रकाशक : प्रलेक प्रकाशन, मुंबई,
पृष्ठ –152, मूल्य –पेपरबैक रु 250/–

२. 'नींव से निर्माण तक' की सतत प्रक्रिया से साक्षात्कार-

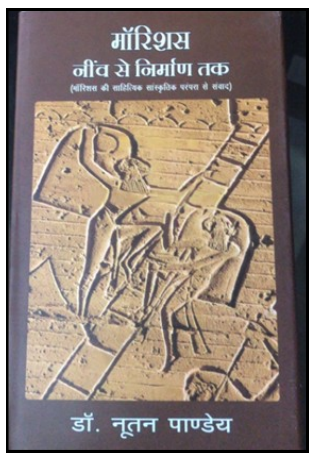

'नींव से निर्माण तक' पुस्तक डॉ. नूतन पाण्डेय की अभिनव कृति है । इस पुस्तक के बहाने डॉ.पाण्डेय ने मॉरिशस के लगभग सभी महत्त्वपूर्ण साहित्यकारों से बातचीत करते हुए, उनके जीवन और साहित्य कर्म के साथ–साथ उनके अन्य विषयों पर केन्द्रित कुछ विचारों को भी इस पुस्तक में समाहित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया हैद्यलेखिका ने भूमिका में मॉरिशस के इतिहास, साहित्य और लेखन सभी पर विस्तार से लिखा है, जो उनकी अध्ययनशीलता का प्रमाण हैद्य इस दृष्टि से यह प्रयास सार्थक प्रतीत होता है।

नवीनतम सर्वेक्षणों, गिरमिटिया के संक्षिप्त परिचय, 1834–1924 तक के 90 वर्षों के कालखंड में लगभग साढ़े चार लाख भारतीय मजदूरों की व्यथा–कथा, सारा जहाज, 39 यात्रियों के दल,पोर्टलुईस के इमीग्रेशन स्क्वायर, कुली घाट (अब आप्रवासी घाट) के प्रसंग को जिस रोचक अंदाज में लेखिका ने पाठकों के समक्ष रखा है, वह अद्भुत है। इसमें मजदूरों का जीवन–संघर्ष है तो जीवन–संघर्षों के पार निकलने की उनकी अदम्य जिजीविषा भी। "भारतवंशियों के प्रवासन की इस सम्पूर्ण प्रक्रिया को समेकित रूप से विश्लेषित करने पर कहा जा सकता है कि भारतीय मूल

के ये लोग न तो विश्व विजय करने निकले थे, न जबरन धर्म–प्रचार के लिए और न ही अपनी भाषा और संस्कृति के किसी अन्य पर आरोपण के लिए। लेकिन यह भी आश्चर्यजनक और सुखद संयोग से कम नहीं है कि जहां–जहां ये गए वहाँ–वहाँ अत्यंत सहज और स्वाभाविक ढंग से अपनी भाषा और संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन करते गए। "

इस कृति में मॉरिशस के कुल 21 प्रमुख साहित्यकारों के साक्षात्कारों में पहला साक्षात्कार मॉरिशस के प्रख्यात साहित्यकार अभिमन्यु अनत का है। इस पुस्तक में सम्मिलित मॉरीशस के प्रतिष्ठित साहित्यकारों को अकारादिक्रम में अभिमन्यु अनत, इंद्रदेव भोला,कल्पना लालजी, प्रह्लाद रामशरण, ब्रजलालधनपत, राज हीरामन, रामदेव धुरंधर, विनोद बाला अरुण, सरिता बुद्धु, हनुमान दूबे गिरधारी,हेमराज सुंदर आदि साहित्यकारों के सा क्षात्कारों से पाठकों को निश्चय ही अपनी दृष्टि समृद्ध करने में मदद मिलेगी। कुल मिलाकर यह कृति डॉ. नूतन पांडेय के श्रम–संवेदना–समर्पण का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

समीक्ष्य कृति : मॉरिशस नींव से निर्माण तक
(मॉरिशस की साहित्यिक सांस्कृतिक परंपरा से संवाद)
लेखिका : डॉ. नूतन पांडेय
प्रकाशक : स्टार पब्लिकेशन्स प्रा.लि.,
4ध्5–बी,आसफ अली रोड, नई दिल्ली –110002
पृष्ठ–397, मूल्य – रु 500/–

3. मॉरीशस हिंदी नाट्य साहित्य में बखोरी जी का योगदान -

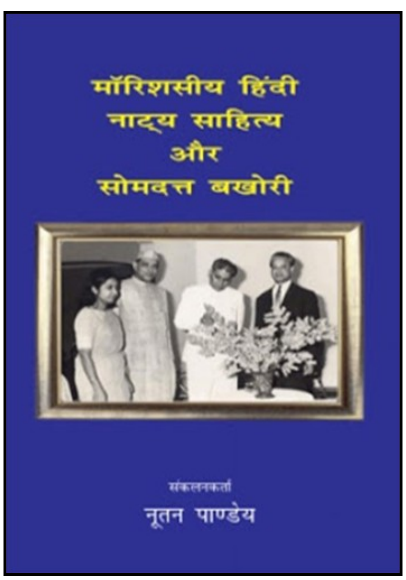

मॉरीशस में हिंदी साहित्य की सभी विधाओं में साहित्य का सृजन हो रहा है । मॉरीशस के साहित्य का हिंदी–जगत में स्वागत भी हो रहा है। इसी समृद्ध साहित्यिक परंपरा में सोमदत्त बखोरी की रचनाधर्मिता भी महत्वपूर्ण है। बखोरी जी ने 'मुझे कुछ कहना है', 'बीच में बहती धारा', 'सांप भी सपेरा भी', 'नशे की खोज' काव्य संग्रह, यात्रा वृतांत– 'गंगा की पुकार', नाटक– 'सीता स्वयंवर', 'पांडव वनवास' एवं अनेक रेडियो नाटक, एकांकी व रुपक लिखे हैं। उनका नाट्य साहित्य अप्रकाशित रह गया है । डॉ. नूतन पाण्डेय ने मॉरीशस प्रवास के दौरान उनके दस नाटकों की पांडुलिपियों को खोजकर अपेक्षित संशोधन के साथ उनका संकलन तैयार किया है जो 'मॉरीशसीय हिंदी नाट्य साहित्य और सोमदत्त बखोरी' नाम से प्रकाशित हुआ है। इसमें लेखिका ने मॉरीशसीय हिंदी नाट्य साहित्य की बहती धारा के अंतर्गत मॉरीशस में लिखे गए नाटकों पर शोध ापरक जानकारी दी है और सोमदत्त बखोरी के नाट्यकर्म पर विस्तार से चर्चा की है और बखोरी जी के नाटकों दृ बहू, सीता स्वयंवर, बहाना, घर और घरनी, निराश प्रेमी, वसंत बहार, कुर्बानी की रह पर, बिसुनी की सगाई, गुमान की गोली, जंग में रंग, गांधी बलिदान का संपादन किया है। यह साहित्य की सच्ची सेवा है जो अप्रकाशित साहित्य हिंदी संसार को मिला। मॉरीशस हिंदी साहित्य में रुचि लेने वालों और प्रवासी साहित्य पर अनुसंधान करने वालों के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी और संदर्भ के रूप में सहायक सिद्ध होगी ।

समीक्ष्य कृति : 'मॉरीशसीय हिंदी नाट्य हिंदी नाट्य साहित्य और सोमदत्त बखोरी
लेखिका : डॉ. नूतन पांडेय
प्रकाशक : स्टार पब्लिकेशन्स प्रा.लि.,
4/5–बी,आसफ अली रोड, नई दिल्ली –110002
पृष्ठ –142, मूल्य – रु 200/–

4. मॉरीशस लेखक : रामदेव धुरंधर साक्षात्कार के आईने में-

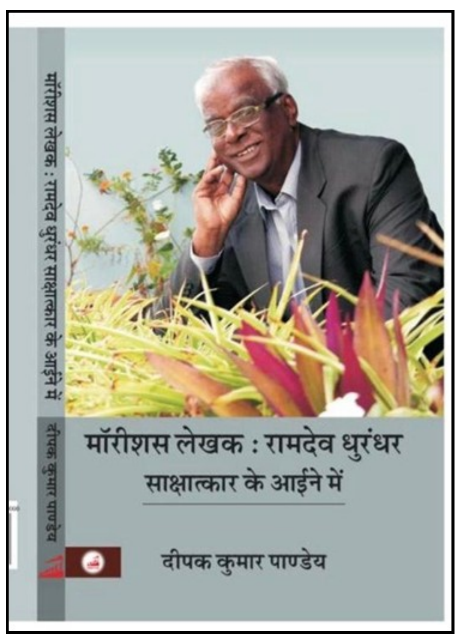

यह पुस्तक मॉरीशस के प्रख्यात लेखक रामदेव धुरंधर की साहित्यिक रचनाधर्मिता पर आधारित है। इसमें डॉ. दीपक पाण्डेय ने रामदेव धुरंधर के सात साक्षात्कारों को संपादित किया है। इन साक्षात्कारों में शामिल हैं –

डॉ.नूतन पाण्डेय– '**शब्द ब्रम्ह हैं,** जिन्हें श्रम से साधा जा सकता है'

डॉ.सुधा ओम ढींगरा–'**भारत में आलोचना को लेकर बहुत खेमेबाजी चलती है'**
डॉ.जयप्रकाश कर्दम –'**लेखक और आलोचक नदी के दो पाट हैं'**
डॉ.दीपक पाण्डेय –'**रामदेव धुरंधर के उपन्यासों के शिल्प कैमरे में कैद चित्र सदृश्य'**
गोवर्धन यादव–**'पूर्वजों की धरोहर संजोये रखता हूँ'**
सुश्री शालेहा परवीन–'**मेरा अंतस मेरे कथा–साहित्य** में अभिव्यक्त हुआ है'
डॉ. कुसुमलता सिंह – **'मानवीय ऊर्जा से भरी रचनाएं'**
सभी साक्षात्कारकर्ताओं ने धुरंधर जी से उनकी साहित्य की आधारभूमि की गंभीरता से पड़ताल की है और धुरंधर जी ने बहुत ही गंभीरता और आत्मीयता से उत्तर दिए हैं। निश्चित ही ये संवाद मॉरीशस के हिंदी साहित्य के वैशिष्ट्य को समझने और परखने में सहायक होंगे। रामदेव धुरंधर के साहित्य पर आलोचनात्मक ग्रंथों के अभाव को यह पुस्तक कुछ हद तक दूर करने में बहुत उपयोगी साबित होगी। डॉ. दीपक ने भूमिका में 'मॉरीशस का हिंदी साहित्य और रामदेव धुरंधर' पर धुरंधर जी के साहित्यिक अवदान पर बहुत ही सारगर्भित एवं विश्लेषणात्मक जानकारी दी है। पुस्तक के लिए शुभाकांक्षा संदेश में डॉ. जयप्रकाश कर्दम ने रामदेव धुरंधर के साहित्यिक वैशिष्ट्य पर गंभीर टिप्पणी करते हुए कहा है–"रामदेव धुरंधर ऐसे ही सजग रचनाकार हैं जो अपनी रचनाओं में मनुष्यता बोध की अभिव्यक्ति के साथ पाठकों के समक्ष उपस्थित होते हैं। कथा–वस्तु या कथानक का अपना महत्व होता है किन्तु उससे अधिक महत्वपूर्ण होती है रचनाकार की दृष्टि कि वह कथानक को किस रूप में ढालता है, अपने समय की सच्चाईयों, समस्याओं, चुनौतियों को किस तरह देखता है और उससे किस प्रकार जूझता है कि अंधेरे में भटकते समाज को रास्ता दिखाने के लिए मशाल का काम कर सके। यह कौशल ही किसी रचनाकार को बड़ा बनाता है। रामदेव धुरंधर इस कौशल से संपन्न लेखक हैं। 'पथरीला सोना' उपन्यास की गंभीर विषय–वस्तु से स्पष्ट हो जाता है कि कैसे वे दो सौ सालपहले भारत से बंधुआ मजदूर के रूप में मॉरीशस गए भारतीयों के शोषण और संघर्ष की कथा कहते हुए उनके जीवन की प्रतिकूलताओं और प्रश्नों को वर्तमान के साथ जोड़कर प्रस्तुत करते हैं। मुझे नहीं लगता 'चंद्रकांता संतति' के अलावा 'पथरीला सोना' जितना वृहद कोई अन्य लिखित उपन्यास हिंदी साहित्य में उपलब्ध है। यह अकेला उपन्यास रामदेव धुरंधर को हिंदी का महान लेखक सिद्ध करने में स क्षम है।"

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक जहाँ मॉरीशस के महान रचनाकार रामदेव धुरंधर साहित्यधर्मिता को समझने में सहायक होगी वहीं मॉरीशस के हिंदी साहित्य में रुचि रखने वालों के लिए उपयोगी होगी। उत्कृष्ट कार्य के लिए डॉ. दीपक पाण्डेय और प्रकाशक को बहुत बधाई और साधुवाद ।

समीक्ष्य कृति : 'मॉरीशस लेखक : रामदेव धुरंधर साक्षात्कार के आईने में
संपादक : डॉ. दीपक पाण्डेय
प्रकाशक : स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली –110002
पृष्ठ –152, मूल्य – रु 550/–

समीक्षक :
डॉ. रमेश तिवारी,
नई दिल्ली

दोहे

जीवन में संवेदना,लाती है मधुमास।
अपनाकर संवेदना,मानव बनता खास।।

संवेदित आचार तो,है करुणा का रूप।।
जिससे खिलती चाँदनी,बिखरे उजली धूप।।

संवेदित सुविचार से,मानव बने उदार।
द्वेष,कपट सब दूर हों,बिखरे नित उपकार।।

अंतर्मन में नम्रता,अधरों पर मृदु बोल।
करती है संवेदना,जीवन को अनमोल।।

रीति,नीति हमसे कहें,बनना सद् इनसान।
आएगी संवेदना,पाए जीवन मान।।

हो संवेदित पौंछ दो,आँसू,दो मुस्कान।
बिन उदारता जिन्दगी,नहिं पाती है आन।।

है विशेष संवेदना,जो लाती उजियार।
सच में बिन औदार्य के,फैले नित अँधियार।।

मानवता-उद्घोष है,रखें दया का भाव।
संवेदित हो हम रखें,परसेवा का ताव।।

जहाँ पले संवेदना,वहाँ रहें भगवान।
संवेदित इनसान का,होता नित यशगान।।

अगर संग संवेदना,तो समझो उपहार।
मानव–जीवन को मिले, कदम–कदम पर सार।।

प्रो.(डॉ.)शरद नारायण खरे
प्राचार्य
शासकीय जेएमसी महिला महाविद्यालय मंडला (मप्र)-४८१६६१

काव्यश्री दिव्या माथुर

कविता जीवन की संगनि होने के साथ-साथ विभिन्न विविधताओं की एक ऐसी अभिव्यंजना है जो रचनाकार की संपूर्ण प्रवृत्तियों से युक्त होने के साथ-साथ भाव बोध के उन्नयन में सहायक होती है, और उसके परिणाम स्वरूप रचनाकार के जीवन को एक सार्थक दिशा प्रदान करती है! कवयित्री दिव्या माथुर की काव्य यात्रा भी उनके श्री काव्य से होते हुए श्री जीवन की अनेक विविधताओं की सार्थक अभिव्यंजना प्रस्तुत करती है जो उनके भाव बोध के उन्नयन में सहायक होने के साथ-साथ उन्हें सार्थक दिशा प्रदान करती है।

दिव्या जी की कविताओं में शिल्प, बिंब, प्रतीक विशेष आग्रह संदर्भ में आप विभिन्न विभिन्न रूपों में देख सकते हैं, काव्य शब्दों के भीतर उनकी संवेदना गहरी होती है मानवीय, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि कई संदर्भों भाव बोध के सरोकार से जुड़ी उनकी कविताएं जीवन को नया संदेश देते हुए आगे बढ़ती है उनकी कविताएं प्राय सामाजिक सरोकार के उन संदर्भों को रेखांकित करती हैं जहां वर्तमान भौतिक जीवन में मानवीय एवं निजी संबंधों में संवेदनाएं शून्य हो गयी है संबंधों में खटास पिता-पुत्र जैसे रिश्तो में स्वार्थ की स्थित का स्वरूप सामने आ गया है उनकी कविता 'भाड़े के टट्टू' की कुछ पंक्तियां इसकी स्पष्ट व्याख्या करती नजर आती है:

पांच मन के शव को / कन्धा देने कोई आगे नहीं बढ़ा / मरगिल्ले बेटे ने भी अपने हाथ खड़े कर दिए / भाड़े के कन्धों के लिए /आड़े समय में जो दाम भी मांगें / मिल जाएगा (भाड़े के टट्टू)

वर्तमान समय के सांसारिक मोह में संबंधों की नियत स्वार्थ के परिधि में चक्कर लगाती हुई दिखलाई पड़ती है पिता, पुत्र, बेटी दमाद यह सांसारिक संबंधों के सबसे निकट दिखलाई पड़ते हैं परन्तु इन संबंधों ने भी समाज की शर्मिंदगी की हदें पार कर दी है दिव्या जी ने समाज को बड़े करीब से देखा और अनुभव किया, मनुष्य के विकृति रूप से भली भांति परिचित है दमाद के उपमयी रूप के बहाने प्रकृति फूल को संदर्भित करते हुए उसकी व्याख्या 'लाइलाज' कविता में उकेरा है वह आज के सामाजिक यथार्थ के काफी करीब है वह लिखती हैं:

झूठ है दामाद सा /जिसकी ख़्वाहिशें / कभी पूरी नहीं की जा सकतीं /एक दिन वह वह तुम्हें नंगा कर सकता है / झूठ है उस चश्मे सा /जो एक बार चढ़ा तो / आसानी से उतरता नहीं (लाइलाज)

उनकी कविताओं का रचना संसार सामाजिक, सांस्कृतिक संदर्भों के साथ माननीय संदर्भों के ना जाने कितने प्रतिमानो को आत्मसात किए हुए हैंय उन्होंने संसार को देखा है उसे भोगा और एहसास किया है, संवेदना के स्तर पर उसे परखा है इसलिए वह उसकी परिणति को भली-भांति समझती हैं। जीवन में ना जाने कितने गिले शिकवे, झूठे बखान जिद और जिरह करती अनेक संवेदनात्मक पक्षों को आत्मसात करती हुई सब कुछ भूल सीने से लग बस झूठी तसल्ली के सिवाय कुछ नहीं, उन्हीं संदर्भों के रूप को उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से व्यक्त किया है उनकी 'झूठी तसल्ली 'कविता की कुछ पंक्तियां इसकी गवाह है वह लिखती हैं-

मेरी आहों पर गौर न कर /मेरे जख्मों से खौफ न खा
कतरा के निकल या आंख चुरा पर झूठी तसल्ली रहने दे
नीम समझ के पी लूंगी /होंठों को अपने सी लूंगी /
बस झूठी तसल्ली रहने दे!
ना रहे कोई गिला शिकवा /कुछ ऐसे मुझे तसल्ली रहने दे
वफा का रोना बेशक रो पर झूठी तसल्ली रहने दो (झूठी तसल्ली)

प्रेमत्व के रूप को आदिकाल से लेकर आज तक की सभी रचनाकारो ने अपनी रचनाओं मे महत्वपूर्ण स्थान दिया है। यह अलग बात है कि लोगों के तरीके भिन्न-भिन्न हो पर दिव्या जी कि प्रेमा अभिव्यक्ति स्वरूप अपनत्व के भाव से गुजरती हे वह स्वयं से अपने अभिव्यक्ति रुप से जुड़ती हैं न कि वह उस के भाव संप्रेषण को संजोती है 'लहर' 'गुस्सा' 'झूठ' प्रतिक संदर्भों के सहारे उन्होंने प्रेमत्व के भाव को अपनी कविता' प्रेम 'में व्यक्त किया है वह लिखती हैं:

लहरें मुझमे है/ मै लहरों में नहीं / गुस्सा मुझ में है /मैं गुस्से में नहीं / झूठ मुझ में है / मैं झूठ में नहीं / प्रेम मुझ में है तो मैं प्रेम में क्यों नहीं (प्रेम)।

दिव्या जी की कविताओं का संदर्भ अनेक संभावनाएं लिए हुए दिखाई देता है उनके काव्य में कल्पना का रचना संसार बस वही तक सीमित है जो संसार में घट सकता है ना कि असंभव से प्रतीत होने वाली कल्पनाओ का समावेश उन्होंने ने किया है उन्होंने कविता के यथार्थ, मानव जीवन के यथार्थ संदर्भ को ही कविता के रूप में संयोजित करने का प्रयास किया है। उनके काव्य की भाषा संरचना उनके काव्य का वह आधार बिंदु है जो पाठक को पढ़ने के लिए बाध्य करती है, उर्दू के शब्दों का संयोजन हिंदी के साथ सामान्य शब्द जो समझ में आ जाए, उनका वही प्रयोग उन्हें अन्य आधुनिक कवियों से पृथक करता है!

उन्होंने समाज के उन संदर्भों को भी कविता का अभिन्न अंग बनाया है जो समाज की रीढ़ है समाज के प्रतिनिधि नही स्वयं के प्रतिनिधि बन बैठे और पक्ष और विपक्ष दोनों राजनीतिज्ञ अपने को कोई न कोई माध्यम से बचा ही लेते है बाबा नागार्जुन, रघुवीर सहाय, श्री लक्ष्मीकांत वर्मा श्रीकांत वर्मा ने अपनी कविता. ओं में इन संदर्भों को अनेकों बार प्रदर्शित किया है, दिव्या जी भी इससे अछूती नहीं रही है, अंतर बस इतना ही है कि उन्होंने उपमा प्रयोग का सहारा ना लेकर सीधे उन्हें संबोधित कर राजनीतिज्ञ स्वरूप को रेखांकित किया उनकी कविता 'राजनीतिज्ञ'

की पंक्तियां इसके ऐतिहासिक संदर्भ को प्रदर्शित करती है वह कहती हैं:

वे स्वयं सुरक्षित कमरों में
बैठे हैं जो निर्णय लेते हैं
मासूम मातहत क्यूं अपने
सीने पे गोलियां सहते हैं? (ढाल)

'कफन 'प्रेमचंद की कहानी से भी वह प्रभावित दिखती है बस अंतर इतना ही है प्रेमचंद अपनी बात कहानी के कथ्य शिल्प पर रचते है उनका सामाजिक संदर्भ आजादी के पूर्व भारत का है जहां संवेदनाएं थी पर समस्याएं संवेदना में निहित थी, परंतु आजादी के बाद ही कफन पर राजनीतिज्ञ संदर्भ बहुत हैं पर दिव्या जी ने उन्हें काव्य पर गढे है उनकी कविता में वाह्य आडंबरों से छुटकारा पाने ,वर्तमान से लड़ने की जद्दोजहद, पिता के मृत शरीर पर फटी चादर, मां की धोती खरीदने के अभिव्यक्ति की जो परिकल्. पना वक्त की है वह सचमुच इस भौतिकवादी सांसारिक लोगों के स्वार्थ परक व्यक्तित्व को व्यक्त करने का प्रयास किया है वह लिखती हैं -

पिता के मृत शरीर पर / यदि वह डाल सकता / अपनी चादर फटी / तो खरीद लाता / मां के लिए एक सस्ती धोती / ये झूठे आडंबर / दिल को क्यों देते हैं संबल (कफन)

दिव्या जी की कविताओं में प्रेम का भाव अनेक संदर्भ में व्यक्त हुआ है उनका प्रेम एहसास संवेदना के साथ कल्पनाओ में भी गोते लगाते हुए दिखलाई पड़ता है कह सकते हैं प्रेम उनका भाव है, संदर्भ नहीं है उसके कई उत्स रुप है जिसमें वह कभी चूड़ी, कभी मेहंदी, सूरमा ,कभी नाक कि नथनी के साथ स्त्री सौन्दर्य श्रृंगार के बहाने उसके ख्याल की कई बातों को अपनी कविता 'ख्याल तेरा 'में व्यक्त किया है पूरे २८ पंक्तियों में उसके संदर्भ को ऐसा व्यंजित किया है जिसमे उसके ख्यालों के सभी प्रतिमान दिखलाई पड़ जाते हैं वह लिखती हैं-

माथे पर बिंदिया सा चमके / हाथ में मेहंदी सा महके / जीवन और श्रृंगार मेरा / ख्याल तेरा / कंगन चूड़ी के संग खनके / मुदरी के नग में झलके
मुझे तंग करे निर्मोही सा / खयाल तेरा (खयाल तेरा)

खामोशी बहुत से प्रश्नों का ऐसा जवाब, जिसमें जीवन की कई विसंगतिया और समस्याएं समाहित होती है उसकी परिभाषा बस मूक (चुप) रहने में ही वह बहुत से संसय का समाधान है, दिव्या जी अपनी कविता 'मेरी खामोशी' के माध्यम से एक ऐसा कैनवास खड़ा करती है जिसमें झूठ के बावजूद रिश्तो के दरमियान गर्भाशय में पल रहे जीव के वास्तविक रूप में उसे स्वीकार न कर पाने की छटपटाहट में किसी के भेंट चढ़ जाने की बात काव्य के माध्यम से जन को आगाह करती है उनकी कविता 'मेरी खामोशी' उसी प्रतिमान को गढ़ती है वह लिखती हैं:

मेरी खामोशी /एक गर्भाशय है जिसने पनप रहा है तुम्हारा झूठ / यदि मुकर न भी पाये तो तुम उसे किसी की भी गले मढ़ दोगे२. / क्योंकि मेरी खामोशी/ एक गर्भाशय है / जिसमें पनप रहा है तुम्हारा झूठ (मेरी खामोशी)

उनकी कविता समाज के साथ उसमें व्याप्त होने वाली समस्याओं और उसके समाधान की कई उपक्रम एक साथ लेकर चलती है उनकी समझ उन्हें एक ऐसे संदर्भ की ओर ले जाती है जहां आधुनिक समाज के साथ मध्यवर्गीय की भी ऐसी समस्याएं हैं जो झूठ के रिश्तो में खामोश रहती है कविताएं हृदय में उत्स का भाव लिए हुए आगे बढ़ती है दिव्या जी की कविताओं का उत्स हृदय और जन को सुकून तो देता ही है परंतु वह उपदेशात्मक संदर्भ में भी दिखलाई देता है उनकी कविता का उत्स बड़े के साथ तो है, उन्हें बच्चों (छोटो) की परिणति भी मालूम है उन्होंने 'लोरी' कविता के बहाने मम्मी, पापा, दादी के उन संदर्भ की व्याख्या की जिसमें बड़ों का दायित्व निर्वाहन में बच्चों को कितना सकून दे जाता है इसी रुप को उन्होंने सिया के बहाने समझाने का प्रयास किया है वह लिखती हैं -

पापा बजा रहे हैं प्यानो / मम्मी सुना रही है लोरी
चंदन का है बना पालना/ रेशमी की उसमें डोरी
****
डरना नहीं सिया सपने में / दादी करती हैं रखवाली
चौकीदारी चांद कर रहा / टार्च लिए तारों वाली (लोरी)

दिव्या जी की कविताओं के शीर्षक भी बहुत कुछ आगाह करते हुए पाठक को उसका संकेत दे जाते हैं उनकी कविता 'हे राम' बहन की मृत्यु पर रची कविता है पंरतु इस कविता में उनका द्वंद्व ईश्वर से अनेक प्रश्नों में प्रतिउत्तर के बहाने धर्म ग्रंथों की दुहाई और मृत्यु के आगोश में बच्चों की गुहार मेधावी युवती की परिचर्चा धरा के सापेक्ष कर एक ऐसी लीक खींची है कि कविता का शीर्षक की अपने-उपमेय विधान में कई प्रश्नों की व्याख्या है वह लिखती हैं।

हे राम! / क्यों ऐसा अन्याय किया / क्यों उठा लिया
एक मेधावी नवयुवती को / जो शोध करती रही /तुम्हारी धरा का / दो नन्हे बच्चो की जननी / क्या एक वही बची थी /क्या तुम्हें उसकी ज़्यादा जरुरत थी / तुमसे बेहद नाराज हूँ मैं /जब तक मर नहीं जाती /मेरी हर सांस पुकारेगी तुम्हें
हे राम (हे राम)

उनकी कविताओं की पैरोडी अनेक संदर्भों, प्रसंगों को साथ साथ लेकर चलती है विषय संदर्भ के कई रुप एक साथ समय के सापेक्ष कई उपमेय और उपमान प्रदर्शित करते हैं लेकिन काव्य का अर्थ विन्यास हमेशा उपदेशात्मक या संकेतात्मक रुप मे दिखलाए देता है यह कह सकते हैं उनका काव्य संसार विविधाओ के समूह का ऐसा पुंज है जो अणुओं और परमाणु से निर्मित है इसलिए उनका कब

उनका एक दायरा पारिवारिक संदर्भों के निभानी का भी रहा है जहां उनकी दूसरी और तीसरी पीढी के कुछ संदर्भ को लेकर उन्होंने बाल गोपाल के साथ अपने काव्य संसार में भी स्थान दिया है जो अत्यंत मार्मिक होने के साथ-साथ उनके बाल मनोविज्ञान की परख को बताता है 'शैतान सिया' कविता एक ऐसी ही कविता है जिसमें सिया के बहाने उन्हें सभी छोटी बच्चों के बाल विशेषताओं को बताने का प्रयास किया है जिसमें सिया छोटी बच्ची की बिस्तर से गिरने और रोने से लेकर उसके चुप और हंसने तक की जितनी भंगिमाएं प्रस्तुत की हैं वह उनकी बाल मनोवृत्ति के सभी रुपों की जानने का प्रमाण ही है वह लिखती हैं -

नर्म गुदगुदे बिस्तर पर थी /मीठी नींद सिया सोई / नींद-नींद में गिरी पलंग से / जोर-जोर से वह रोई
हई-शा कह पापा ने / ताकत अपनी दिखलाई / जोर लगाकर हई-शा बोलीं / मम्मी भी न उठा पाईं
जोर लगा कर सारे हारे / खूब पसीना था आया / हैरानी भी हुई सभी को / किसी को समझ न कुछ आया
बुआ को कुछ शक हो बैठा / नीचे देखा फिर झुक कर / पकड़े हुए सिया लेटी थी / पलंग का पाया इक कस कर /हंस कर लो. टपोट थे सारे / वह भी रोना भूल गयी / हँसते-हँसते फिर मम्मी की / बाहों में वह झूल गयी।

सिया के बहाने उन्होंने अपना अनुभव काव्य के माध्यम से जन के समक्ष प्रस्तुत किया है वह उनके बाल मनोविज्ञान को समझने का एक संकेत भी है उनकी कविता का वैविध्य रूप अनेक संभावनाएं लिए से दिखलाई पड़ता है अप्रवासी जीवन की तीन दशक निर्वहन करनी के बावजूद वह अपनी माटी के त्योहारों को नहीं भूलती यह हो सकता है कि अपनी व्यस्तताओं के कारण उसमें कभी कभी सरीक ना हो पाती हो परंतु वह उत्सव उनके सहदय और दिमाग में हमेशा अपनत्व रूप में बना रहता है 'होली' त्यौहार हमारी अस्मिता की पहचान है दिव्या जी की जीवन में होली का पर्व विशेष महत्व रखता है इसलिए उसके आगमन से लेकर उसके उसके उत्सव प्रतिक संदर्भ तक गाथा प्रस्तुत करती है होली त्यौहार उन्हें बसंती हवा की तरह झूमने के लिए मजबूर करता है साथ ही साथ त्यौहार के की प्रतिमानों मानो का संदर्भ भी प्रस्तुत करता है होली त्यौहार पर लिखी कविता की कुछ पंक्तियां दृष्टव हैं।

नीली पीली लाल सुनहरी गलियों में छाए बादल
वायु में बह रहा धुपद / फागुन लाता है समय सुखद
****
हवा बसंती झूम उठी/ टेसू के फूलों से सिंची
****
गोबर से लिपे हैं घर आंगन / झूमीं ग्रहणी गाती होली /ढोलक पे थाप देते साजन /भांग चढ़ाए / नाचे गाएं / सूख सूख कर भीग रहे हैं

उनके काव्य संसार में प्रतिमान तो अपनी उपस्थिति दर्ज कराते है किंतु बिंब, प्रतीक स्वयं तार्किक रूप में उपस्थित हो जाते हैं दिव्या जी की कविता के संबंध में अशोक चक्रधर जी का यह वक्तव्य सटीक बैठता है 'दिव्या की कविताओं के आवेग, रुपकालंकार एवं प्रतीक भिन्न है, भाषा सीधी सरल और सुस्पष्ट है'

प्रोफेसर गंगा प्रसाद विमल जी दिव्या जी की कविता के संबंध में लिखते हैं 'दिव्या का विधान सहज व स्वानुभूत यथार्थ से अभिप्रेरित होने के साथ साथ संगीततमक लय से भी संपन्न है...'

भेजेगा वह प्यार ढेर
और खत में देगा सफाई फिर
सांझ हुई है बाँझ मेरी
और रूह मेरी बौराई फिर (हूक)

दिव्या जी के अभी तक के काव्य रचना संसार एक पैनी नजर डाली जाये तो साफ झलकता है कि उन्होंने अपने अनुभव एहसास और संवेदनाओं के साथ भोगे हुए यथार्थ पर काव्य रचा है कल्पना का प्रयोग नाम मात्र ही है उनकी प्रारंभिक काव्य संग्रह 'अतःसलिला' से लेकर '११ सितंबर सपनों की राख तले' तक में उन्होंने उन संदर्भों को रेखांकित किया है जो जन के लिए आवश्यक हो चाहे वह उपद. `शात्मक रूप में ही क्यों ना संकेत करता हो एक प्रकार से कह सकते हैं वह उनके काव्य श्री का प्रधान तत्व ही है जन को कुछ देने का, उनकी कविता मानव जीवन की संगनी तो है ही साथ ही साथ वह जीवन के उल्लास मन को भी समेट कर चलती है उनकी इसी काव्य रूप को परखते हुए डॉ कमल किशोर गोयनका ने अपनी टिप्पणी में लि खा 'दिव्या जी की कविताएं जहां एक ओर मानव जीवन की हालिया, क्षणभंगुरता, छलना असंतोष की वाणी देती है वहां जीवन के उल्लास को भी मन में समेटे चलती है।'

एक बौनी बूंद ने / मेहराब से लटक / अपना कद लम्बा करना चाहा
बाकी बूंदे भी देखा देखी / लम्बा होने की होड़ में / ६ इक्का-मुक्की लगा लटकीं
क्षण भर के लिए / लम्बी हुईं, गिरीं और आ मिलीं अन्य बून्दों में / पानी पानी होती हुई नादानी पर अपनी!
(एक बौनी बूंद)

उनकी कविताओं ने जन को हमेशा से आगाह किया है उनके सुंदर भविष्य के लिए, सामाजिक जीवन की तमाम विसंगतियों से रूबरू कराने का उनका प्रयास हमें शक्ति के साथ आत्मबल देता है, आगे बढ़ने के लिए सांसारिक जीवन के कई संदर्भों के व्याख्यान का पुंज है उनकी कविताएं!

आज के समय में उनकी कविताओं का भाषिक विश्लेषण किया जाए तो साफ नजर आता है कि उनके वाक्य प्रयोग, शब्द चयन कविता के अर्थ विन्यास को और पौढता प्रदान करते हैं उर्दू शब्दों के साथ हिंदी भाषा की खड़ी बोली और स्थानीय बोलियों का प्रयोग उनके कविता के संदर्भ मे और चार चांद लगाते हैं छोटे-छोटे वाक्य, देशज शब्दों की प्रधानता भी उनके काव्य गुण का विशेष संदर्भ रहा है काव्य शीर्षक और उसमें निहित विचारों का रस केवल एक रस स्वाद के लिए नहीं बल्कि उसे कई विविध रसो में परिवर्तित करने का रहा है अतः हम कह सकते हैं कि आने वाले वर्षों में उनके काव्य निर्माण से हम और भी लाभान्वित होंगे ऐसा हम सभी को विश्वास है।

डॉ मुकेश कुमार मिश्र
प्राचार्य
कर्मा देवी स्मृति पीजी कॉलेज
संसारपुर बस्ती उत्तर प्रदेश

परवरिश

एक सामान्य परिवार से होकर भी उद्‌भव जी ने अपने कर्मों से खूब नाम, यश, प्रतिष्ठा कमायी। क्षेत्र क्या, पूरे मंडल में कोई सामाजिक, साहित्यिक या बौद्धिक कार्य हो रहा हो, तो उसमें उद्‌भव जी निश्चित ही रहते हैं। उनकी महति भूमिका भी होती है।

उद्‌भव जी ने शहर में रहकर बेटे प्रेम और बेटी प्रभा को उच्च शि क्षा दी। बेटी को एक एन आर आई इंजीनियर से व्याह दिया। अब बेटी भी अमेरिका में अपने पति-बच्चों के साथ बस गई है। एक बैंक में मैनेजर है।

बेटा भी एम बी ए कर के ऑस्ट्रेलिया गया। जब उसने वहीं की नागरिकता ले ली और फोटो के साथ पिता को सन्देश भेजा, जब उद्‌भव जी को अपने द्वारा दी गई शिक्षा पर क्षोभ होने लगा। पत्नी बेटे की तरक्की पर प्रसन्न थी। बोलीं - 'ईश्वर करें कि सबके बेटे ऐसे ही आगे बढ़ें।'

उद्‌भव जी ने अनुभव किया कि उनकी आँखें नहाने लगीं हैं। पत्नी और आँखों को बहलाते हुए बोले - 'चलो अब गाँव चलते हैं। वहाँ कोई बोल-बतियाने वाला तो मिल जायेगा।'

ट्रेन का सफर जल्दी से समाप्त ही नहीं हो रहा था। दोनों शहर से सबकुछ लूटाकर जा रहे थे। पत्नी ने पूछा,-'एक बात बोलूँ जी? बेटे का फोटो देखकर मन खुश होने के बदले खाली लगने लगा। जैसे मेरे बेटे को दौलत-देवी ने ठग लिया।'

गाँव क्या, पूरे क्षेत्र के लोगों को उद्‌भव जी के प्रति संवेदना हो गई थी। सब उनके बेटे कोसते थे। मगर आज दो साल बाद उनका बेटा अपनों से मिलने आया तो पूरे सप्ताह उसे मिडिया वाले घेरे रहे। हर जगह उसका सम्मान होता रहा। उद्‌भव जी ने पत्नी को ओर दे खा और आँखों को नहाने दिया। कोई बहाना भी नहीं बनायें। लगा कि उन्होंने बच्चों के परवरिश में कोई कमी न की।

केशव मोहन पाण्डेय
संपादक
सर्वभाषा त्रैमासिक

बौद्ध कालीन भाषिक परिवेश एवं भाषागत विविधताएं

शोध सारांशिका-भाषा किसी भी कालखंड में किसी भी समाज के द्वारा विचारों के आदान-प्रदान का एक सशक्त साधन है । जब हम अपनी अभिव्यक्ति यों को समृद्ध करते हुए अनुभूति को उसमें समाहित कर के जनसामान्य तक अपनी बात पहुंचाना चाहते हैं, तो उसके लिए भाषा अत्यंत प्रभावशाली माध्यम माना जाता है । हमारे द्वारा अपनाए गए शब्द हमारा परिचय और हमारा पहचान देते हैं। हम यह मानते हैं कि भाषा के द्वारा ही किसी भी कालखंड की परंपराओं को रीति रिवाज को मान्यताओं को जाना जा सकता है, पहचाना जा सकता है। बहुत बेकार खंड में स्वयं गौतम बुद्ध के द्वारा अपनी शिक्षकों को जन-जन जाने के लिए उस समय प्रचलित भाषा का साधन के रूप में इस्तेमाल किया गया । भाषिक परिवेश और भाषा की विशेषताएं किसी भी काल खंड में चलने वाली समस्त क्रियाकलाप को सुनिश्चित करते हैं । इस आलेख में हम इसी विवेचन को लेकर के अपना पक्ष रखेंगे।

प्रमुख शब्द -सांस्कृतिक विविधताएं, संरचना, दृष्टिकोण, परंपरा, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, विचार -विनिमय ,प्रयोगवादी, उपादान, जागरूकता, पिटक , महावग्ग जातक कथाएं।

डॉक्टर जय शंकर शुक्ल

सामान्यतया बौद्ध काल छठी शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर के परवर्ती काल में शंकराचार्य के उदय तक माना जाता है । वास्तव में वह कालखंड भारतीय सांस्कृतिक विविधताओं एवं संरचना की दृष्टि से विलक्षण कहा जा सकता है । भाषा, भाव, विचार, संस्कृति एवं सभ्यता के दृष्टिकोण से बौद्ध काल भारत के समृद्धतम कालखंडों में से एक माना जा सकता है। ''उस समय की प्रचलित भाषाओं में पाली , प्राकृत एवं अपभ्रंस प्रमु ख थी, जिनको गौतम बुद्ध ने अपने उपदेश की भाषा के रूप में अपना करके जन सामान्य से जुड़ने के लिए एक आधार भूमि प्रस्तुत किया।''9''

जब हम यह देखते हैं कि किसी भी विचार विनिमय और विचार प्रसार के लिए कोई भी संस्था अथवा व्यक्ति जन्म भाषा को अपने प्रयोग में लाती है तो विचार न केवल दीर्घकाल तक जीवित रहते हैं बल्कि कार्य व्यवहार में बहुत लंबे समय तक प्रयोग में लाए जा रहे होते हैं। बौद्ध काल का यह प्रयोगवादी था भाषा के आधार पर उस कालखंड के विचार भावनाओं को संग्रहित करने का एक महत्वपूर्ण उपादान भी माना जा सकता है जिसे अपनी विशिष्टताओं के साथहम देखते हैं। मानव सदा से ही मानव जाति के बेहतरी के लिए काम करना चाहता है। जो लोग इस तरह का कार्य

कर युग में अमर हो जाते हैं यह अमरता हमारे यस हमारे ख्याति हमारे कर एक निश्चित आकार देते हैं। इसके माध्यम से हम समाज में सच्चाई की ध्वजा पताका को निरंतर आगे बढ़ा सकते हैं।

गौतम बुद्ध अपने जन्म स्थान के भाषा और विचार को लेकर उस के माध्यम से लोगों में जागरूकता फैलाने के साथ खून से जुड़ने की जो कवायद देखी जा सकती है। वह अपने आप में अत्यंत महत्वपूर्ण है। बौद्ध धर्म के मूल ग्रंथ पाली भाषा में है। वे तीनों पिटक हमें पाली भाषा में ही मिलते हैं शुत्त पिटक, विनय पिटक एवं अभिधम्मा पिटक इसके प्रमुख उदाहरण मारने जा सकते हैं। पिटक ग्रंथों, जातक कहानियों या महावग्गों की भाषाओं में विचारों में हम उस कालखंड की स्थितियों का आकलन एवं प्रस्तुतीकरण पाते हैं। इन ग्रंथों में किस तरह की वैचारिक और सांस्कृतिक सामग्री है इससे बढ़कर हम भी देखते हैं कि ग्रंथों के माध्यम से उस समय के भाषाई परिवेश को, भाषाई संरचना को जोड़ने का काम किया गया।

''बहुत सारे शब्द जो आज प्रचलन में है अथवा नहीं है लेकिन उनके लिए वह कालखंड और उस कालखंड में रची गई साहित्य महाकोष की तरह हमारे सामने आते हैं। बौद्ध कालीन भाषा एवं संस्कृति पर विचार करने के पूर्व हमें भौगोलिक एवं ऐतिहासिक दृष्टिकोण से उस कालखंड के सीमाओं के बारे में एक राय होना होगा। ''२'' वास्तव में किसी भी विभाग के भौगोलिक कारक उस भू-भाग में प्रचलित संस्कृति के लिए बहुत हद तक उत्तरदाई होते हैं । सांस्कृतिक विविधता मेंउसका पालन करने वाले लोगों के निष्ठा का होना अत्यंत आवश्यक होता है। जब निष्ठावान लोग अपने समर्पण के साथ किसी कार्य को करते हैं तो देर कल तक अपनी उपस्थिति को रे खांकित करता है। बौद्ध धर्म की भाषिक पृष्ठभूमि में यह बात बड़े महत्व की है कि हम भाषा के द्वारा ही अपनी परंपराओं को अ क्षुण्य रह सकते हैं।

'' वास्तव में भूगोल ही व्यक्ति को, उसके उच्चारण को, उसके द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले शब्दावली को आकार देता है। हम देखते हैं कि पूर्व में 'व' को ''भ'' कहना ''श'' को ''स'' कहना जैसे उच्चारण गत विशेषताएं या लैंगिक विषमता शब्दों के प्रयोग में हमारे लिए यह मानक से इतर हो सकती है। लेकिन यह उस कालखंड की और वहां के लोगों की प्रमुख विशेषता मानी जा सकती है। ''३'' हम इसको तिरस्कृत और तिरोहित नहीं कर सकते क्योंकि पश्चिम में भी ''न'' को ''ण'' कहा जाता है।

बहुत सारे और लोगों को बहुत सारे अक्षरों को बोलने में उनका लोप सामान्यतया देखने में आता है। यह एक ऐसी परंपरा है जो अपने समय के परिवेश धाराओं को सुनिश्चित करता है। पूर्व में भाषिक अवधारणा और पश्चिम में भाषिक अवध ारणा में जमीन आसमान का फर्क रहा है । ''प्रचलन में आने वाले शब्दों में हम यह देखते हैं वहां की उपलब्धियां, वहां के ऐश्वर्य, वहां का स्थापत्य, भवन निर्माण, खानपान, रीति-रिवाज जौर रहन-सहन के तौर तरीके उनके मूल्य ,मान्यता ,आदर्श और विश्वास सहज ध्वनित होते हैं । यह अपने आप में बहुत बड़ी बात है । जब हम परिवेश और उसकी संरचना पर बात करते हैं तो सहज ही यह बोधगम्य होता है । ''४''

हमारे द्वारा आज प्रयोग में लाए जाने वाले बहुत शब्द हो सकता है आने वाले दिनों में अपना अस्तित्व खो बैठे । लेकिन आज के लिखे गए साहित्य में वह हमेशा जीवित रहेंगे , प्रयोग में हमेशा जीवित रहेंगे । ''इसी तरह से लौकिक या धार्मिक साहित्य के अंतर्गत बहुत सारे भाषिक विविधता और विशेषता के दर्शन होते हैं ,जो उस कालखंड की प्रवृत्तियों को हमारे सामने लाते हैं। परिवेश हर तरह से विनिर्मित होता है।

''५'' यह भाषा का भी होता है , धर्म का भी होता है , संस्कृत का भी होता है तथा सभ्यता का भी होता है । परवेश सदैव शहरी और गांव से भी अलग-अलग बटा होता है जिसकी हम विवेचन अथवा व्या ख्या कर रहे हैं।

''मानवीय संचेतना में भाषा उसके व्यवहार की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। हमारी भाषा ही यह बताती है कि हमारे संस्कार किस तरह के हैं। हम किस तरह के परिवार से आते हैं। किस तरह के समाज में हमारा पालन-पोषण हुआ है। किस तरह के लोगों में हमारा उठना बैठना है। भाषा ही एक व्यक्ति को उसका सम्मान दिलवाता है।'' ६ भाषा ही एक व्यक्ति का तिरस्कार ही करवाती है । अब यह हम पर निर्भर है कि हम भाषा के द्वारा अपने आपको सम्मान के उच्च शिखर पर बैठा हुआ पाते हैं अथवा तिरस्कृत और तिरोहित हो कर के समाज में अपमान के भागीदार होते हैं।

वास्तव में सिद्धार्थ गौतम बुद्ध ने जब बुद्धत्व को प्राप्त किया तो उसके बाद उन्होंने सबसे पहले अलार कलाम को जो उनके गुरु थे , उन्हें ढूंढा और उन्होंने उनको उस सत्य के दर्शन करवाएं। उसके बारे में विवेचन किया, उस सत्य पर उनसे बातचीत की और यह कहा कि जिसे आप तक तक आपने नहीं ढूंढा वह यह है उस सत्य का मैंने अनुभव किया है।सत्य की हमेशा समय सापेक्ष होता है सत्य को शब्दों से नहीं उसकी सत्य धर्मिता के आवरण के अनुसार जाना जाता है। सत्य एकमात्र वह शेर से स्थिति है। जिसको पाने के लिए हर व्यक्ति जीवन पर्यंत प्रयास करता रहता है । हमारा प्रयास हमें हमारे सत्य से अवगत कराता है। यह सत्य ही आत्मसाक्षात्कार है यह सत्य ही जीने का मकसद है।। और इस मकसद को प्राप्त करने के लिए बहुत धर्म और इसके भाषाई पृष्ठभूमि को जानना अत्यंत आवश्यक है

''गौतम बुध के मन में आया कि मैं सारी दुनिया को सत्य बताना चाहता हूं । फिर अलार कालाम के साथ अपने चार ब्राह्मणों के पास गए और उन्हें उस सत्य को बताया। इस तरह से यह काफिला चल निकला। अपनी धार्मिक विवेचना शुरू की तो उनके सामने वैदिक संस्कृत संस्थान पहले से स्थापित थे। बुद्ध ने यह समझ लिया कि यदि उन्हें आमजन के बीच में अपनी पैठ बनानी है। ''७'' अपने धर्म की विशेषताओं को बताना है । धर्म के आचारों का प्रसार करना है और लोगों में अपने आप को स्थापित करना है। तो जरूरी है कि वह लोगों की भाषाओं में अपने विचार विनिमय और अपने भाव प्रकट करें ।उनकी

समस्याओं को सुन सके उनके सवालों को सुनकर उनका जवाब दे सके। बौद्ध धर्म इस मामले में अपने पूर्ववर्ती धर्मों से अलग है कि वहां पर संवाद की प्रचुर संभावनाएं सदैव बनी रहती हैं। यह संभावनाएं अपनी पारंपरिक सत्यता को सिद्ध करने का एक माध्यम बनती है। जिनके द्वारा मनुष्य पूर्व में मिले अर्जित ज्ञान को कुछ नया मिलाकर आने वाली पीढ़ियों हेतु से तैयार करके सौंपता है।

"संवाद की यह स्वस्थ और स्वतंत्र प्रक्रिया गौतम बुद्ध ने उस समय की प्रचलित भाषा पाली में शुरू की। यही कारण है कि वह जन आंदोलन बनकर खड़ा हुआ।वह तबका जन आंदोलन आज के वैश्विक परिवेश में अपने आप को आज भी अर्थ वान बनाए हुए हैं।"८"मानव जाति की बेहतरी के लिए जो कार्य होते हैं वह दीर्घकाल तक अपनी उपस्थिति को जन सामान्य और जन विशिष्ट में बनाए र खते हैं। बौद्ध धर्म इसी रूप में देखा समझा और जाना जाता है। इसके माध्यम से आज भी विश्व को एक सूत्र में जोड़ कर उस की परिकल्पना की जा सकती है। हम जानते हैं कि व्यक्ति का प्रथम उद्देश्य आत्म कल्याण होता है। लेकिन यह तब तक संभव नहीं है जब तक कि वह जिस भूभाग में रह रहा है उसकी सीमाएं सुरक्षित ना हो। उसके भौतिक संसाधन उसके लिए उपलब्ध ना हो तो परिकल्पना ही पूरी तरह से आधारहीन है। उसके उदर पूर्ति से लेकरउसके रहने की व्यवस्था का प्रबंध हो जाने के बाद ही आत्म कल्याण जैसी परिकल्पना को साकार रूप देना संभव हो पाता है।

दुनिया में डेढ़ सौ से अधिक देश ऐसे हैं जहां बहुतायत बौद्ध धर्म के लोग पाए जाते हैं। यह इस धर्म की ताकत है के इसने वैश्विक परिवेश में अपनी स्वीकार्यता को अब तक बनाए रखा है। यह हम भारतवंशियों के लिए बहुत विशिष्ट बात है। कि हमारे मध्य से प्रचलन में आया एक धर्म दुनिया के बड़े देशों के ज्यादातर निवासियों का धर्म बना हुआ है। जापान, कोरिया और चीन इन सारे देशों में वहां का मुख्य धर्म बौद्ध धर्म ही है। धर्म देशकाल वातावरण को एक आधार प्रदान करता है। इसकी शिक्षाएं हमें निरंतर आगे बढ़ने को प्रेरित करती हैं। जब कभी भी हम आशंका के गहरे कुएं में डूबते हुए से होते हैं तो ऐसे समय में वह धर्म ही है। जो हमें वहां से निकाल कर के सत्य से हमारा परिचय कराता है। सत्य से हमारा परिचय प्रक्रियाओं के अधीन होता है। और वह प्रक्रिया है धर्म की मूल्यों को लेकर के हमारी मदद करती हैं।

इसी तरह सिंगापुर, इंडोनेशिया, थाईलैंड इन देशों में भी बहुत धर्म अपनी पकड़ को काफी गहरे तक बनाए हुए हैं। भारत इस रूप में बौद्ध धर्म की जन्मस्थली के रूप में माना जा सकता है। गौतम बुद्ध ने अपने जीवन में जिस धर्म की परिकल्पना की थी आज वह साकार रूप से हमारे सामने उपस्थित है। यह हम सब की एक पूंजी है, जिसके माध्यम से हम अपने अस्तित्व अपने अहमियत को सारे विश्व के सामने रख सकते हैं। मनुष्य हमेशा से सत्य का अनुगामी होता है। सच्चाई उसे उसके उद्देश्य के करीब ले जाती है। उद्देश्य प्राप्ति हमारे जीवन का परम लक्ष्य होता है।

---

1 बुद्धचर्या, राहुल सांकृत्यायन, पृष्ठ 3 /37।

2 बुद्ध कालीन समाज एवं धर्म,पृष्ठ डॉक्टर मदन मोहन सिंह, पटना, 1974

3 बौद्ध संस्कृति का इतिहास, भाग चंद्र जैन, पृष्ठ 201।

4 बुद्ध कालीन समाज एवं धर्म, डॉक्टर मदन मोहन सिंह, पटना, 1974, पृष्ठ 2/ 90।

5 बुद्धचर्या, राहुल सांकृत्यायन, पृष्ठ 3 /25।

6 बौद्ध संस्कृति, राहुल सांकृत्यायन, कोलकाता, 1952, पृष्ठ– 7/14।

7 बुद्धचर्या, राहुल सांकृत्यायन, पृष्ठ 3 /26।

8 भारतीय संस्कृति व उसका इतिहास, सत्यकेतु विद्यालंकार, पृष्ठ 6/11।

शोध पत्र लेखक–

डॉक्टर जय शंकर शुक्ल

बैंक कॉलोनी, मंडोली ,

दिल्ली –११००९३

हौसलों की उडान भरने दो बेटियों को

''जो लोग पत्नी को घर की मालकिन बना देते हैं, वे अक्सर सुखी देखे जाते हैं। आप उसे मालकिन भले ही न बनाएं, पर उसकी जिन्दगी के एक हिस्से को मुक्त कर दें। उसे उस हिस्से से जुड़े निर्णय स्वयं लेने दें ।'' महान विचारक ओशो की ये पंक्तियाँ यदि व्यवहार पूर्ण होतीं तो भारत का नक्शा ही कुछ और होता। वर्तमान में बेटियों के खुलेपन, शिक्षा, विचारों की आजादी पर अनेक चर्चाएँ एवं बहस छोटे-बड़े मंचों पर आये दिन होने लगी हैं। किसी महिला विशेष के साथ कुछ भी गलत हो जाने पर उसे नसीहतें दी जाती हैं कि वो अपनी शालीनता में रहे। फैशन की होड़ में पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण न करे। एक ओर हम नारी मुक्ति , महिला सशक्तिकरण की बात करते हैं वहीं दूसरी ओर कुछ गलत घट जाने पर हम ही उसे निर्लज्ज, पापिन की संज्ञा से अभिहित कर देते हैं। यद्यपि पूरा समाज ये जानता है कि पहनावे का बलात्कार या छेड़खानी से कोई रिश्ता नहीं है। समाज का यही तुच्छ दृष्टिकोण आगे जाकर 'परदा' और 'घूंघट' का प्रतीक बन जाता है। बात पहनावे की करें तो एक मर्यादा के अन्दर महिलाओं को व्यक्तिगत आजादी तो देनी ही होगी। आंकड़ों को देखे तो वर्तमान में बलात्कार, छेड़खानी, महिलाओं पर होने वाली रोक-टोक रूपी घरेलु हिंसा का ग्राफ बढ़ता ही जा रहा है।

हमारी रूचि, मेधा, प्रतिभा, शिक्षा आदि आज तक हमें 'मानव दृजात' न बना सकी। सिर्फ और सिर्फ औरत बनाकर ही रख दिया । ऐसी कई घटनाएं रोज मेरे आस- पास घटित होती हैं जहाँ आज भी समाज नारी को पशु से तुच्छ मानकर उसे हेय दृष्टि से देखता है । प्रकृति ने कभी स्त्री-पुरुष को अलग दृष्टि से नहीं देखा, देखता है समाज । एक ओर हम स्त्री-पुरुष के समान अधिकारों, उनके कंधे से कन्धा मिलाकर चलने की बात करते हैं, पर आज भी नियम दोनों के लिए अलग- अलग हैं । लेकिन महिलायें ही क्यों ? पुरुषों पर भी ये बात क्यों न लागू हो ! यदि कोई एक नियम नहीं बनाया तो हम भी तालिबानी समाज बन जायेंगे । स्त्री के अधिकारों का हनन करने में सबसे बड़ी भूमिका धर्म ने निभाई है ।

किसी भी प्राणी के सर्वांगीण विकास के मूल में समाज द्वारा उसे दिए गए अधिकार और स्वतंत्रता सबसे एहम भूमिका निभाते हैं ।

विविधताओं से ओत-प्रोत भारतवर्ष में यद्यपि आज बेटियों को बेटों से कमतर नहीं आंका जाता तथापि उनकी परवरिश एक ऐसे माहौल, एक ऐसे परिवेश में होती है जहां कहीं ना कहीं, जाने-अंजाने उन्हें बेटी होने का एहसास समय-समय पर करा दिया जाता है। उनको लिंग विशेष का दर्जा देते हुए हम बेटी-दिवस भी मनाने लगे हैं। अगर बेटा-बेटी दोनों समान रुप हैं तो यह 'बेटी दिवस' या 'महिला दिवस' मनाने की कोरी औपचारिकता आखिर क्यों ? 'मेरी बेटी मेरा अभिमान', 'बेटी बेटों से होनहार', 'बेटी पढ़ाओ देश बचाओ', और भी ना जाने क्या-क्या स्लोगन आए दिन दोहराए जाते हैं। आखिर क्यों हम सामान्य रूप से बेटियों का पालन-पोषण करने में समर्थ नहीं हो पा रहें हैं? जन्म से ही उन्हें इस बात का एहसास करा दिया जाता है कि वह पराया धन हैं। देर सवेर उन्हें दूसरे घर ही जाना है, उन्हें अपना जीवन निर्वाह करने के लिए किसी पुरुष के सान्निध्य की आवश्यकता है जिस पर आजीवन उन्हें आश्रित रहना है। बिना पुरुष के एक सफल व साहसी लड़की की कल्पना हमारे समाज में कोई करना ही नहीं चाहता। इस सोच के प्रति कि बेटी पराया धन है, जिसका दान किया जाता है से पहले हमें यह समझना होगा कि बेटी कोई वस्तु नहीं है जिसका कि दान किया जाए । हमें अपनी सोच को पूर्णतया बदलना होगा, समाज में क्रांति लानी होगी और क्रांति की इस लहर को लाने के लिए, सामाजिक ढांचे में परिवर्तन लाने के लिए प्रत्येक बेटी के माता-पिता को इस बात की पहल करनी होगी कि हमें अपनी बेटी को अच्छी शिक्षा व संस्कार इसलिए देने हैं क्यूंकि हमें उसे आत्म. निर्भर बनाना है। प्रत्येक माँ की यह नैतिक जिम्मेदारी होनी चाहिए कि वह अपनी बेटी को आत्मनिर्भर बनाने में उसका सहयोग करे। बेटीयों को आगे बढ़ाने के लिए उनकी सोच और विचारों को गंभीरता से लें और उसी के अनुरूप उन्हें आगे बढ़ाया जाए, तभी बेटियां मानसिक रूप से अधिक मजबूत बन सकेंगी। बेटियों में अपरिमित शक्ति होती है, क्षमता होती है लेकिन जरूरत है ऐसे वातावरण व मौके की जिसमें वह अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकें। समाज के निर्माण में प्रत्येक महिला की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, बिना महिलाओं के समाज का संतुलन असंभव है। आज समाज में इस बात की आवश्यकता है कि जितनी सहजता से स्त्री-पुरुष, लड़के-लड़कियां आपस में घुलेंगे मिलेंगे,बेटियों को घर से बाहर निकलने की जितनी आजादी होगी उतनी ही ऐसी घटनाएं कम घटित होंगी। हमें इस बात को आत्मसात करना होगा कि स्त्री- पुरुष का आकर्षण कुदरती है द्य ज्यादा सख्ती करेंगे तो समाज में और भी ज्यादा विकृतियाँ उत्पन्न होंगी । हम बड़े गर्व से कहते हैं कि हम २१वीं सदी में जी रहे हैं । चाँद दृतारों को छूकर अब वहां भी एक नयी दुनिया बनाने की तैयारी कर रहे हैं लेकिन बड़े ही खेद का विषय है कि २१ वीं सदी का ये समाज स्त्री-पुरुष के बीच के अंतर को इस कदर एक गहरी खाई के रूप में पाट चुका है कि सभ्य, सुशिक्षित,समझदार प्रथम श्रेणी महिला अधिकारी भी इसी मानसिकता का शिकार हो गयी है कि समाज में इज्जत से जीने और खुद को महफूज रखने के लिए उसे किसी न किसी पुरुष के सान्निध्य की परम आवशयकता है । 'पुरुष बिना नारी का जैसे अपना कोई मोल ही नहीं!' समाज की इस सोच को बदलने के लिए बेटियों को अपने भीतर क्रांति की अलख जगानी होगी।

बतौर महिला मेरे हिसाब से महिलाओं को अपनी लड़ाई खुद ही लड़नी होगी । उसे स्वावलंबी होना चाहिए, मजबूत होना चाहिए, व्यक्तित्व प्रधान होना चाहिए ! उसे अपने रूप से नहीं, गुण के बल पर प्रतिष्ठित होना चाहिए । हमें बिना किसी डर के अपना स्वर मुखरित करना होगा। यदि हम सब मिलकर अपनी मानसिकता को बदल लें तो एक नए समाज का निर्माण देर से ही सही लेकिन होगा जरूर । आज बेटियां उस चौराहे पर खड़ी हैं, जहाँ चट्टान जैसे दुर्गम रास्ते हैं, चौराहे पर खड़ी इन बेटियों में साहस है पर आत्मविश्वास नहीं, कदम हैं पर एक विवशता है । प्रेरणा है किन्तु हृदय पाषण नहीं मोम की तरह कोमल है । यदि बेटियां समाज में सम्मान पाना चाहती हैं तो उन्हें मजबूती से कदम आगे बढ़ाना ही होगा। होंसलों की ऊँची उड़ान भरने के लिए अपनी बेटियों को आत्मनिर्भर तो बनाना ही होगा।

डा. दीप्ति जोशी गुप्ता
साहित्यकार/लेखिका बदायूँ

गीत

थी बहुत ही औपचारिक भेंट वो तो
प्रेम का आभास तुमको हो गया क्यों.
जब मिले ही थे नही नयनों से नैना.
जीत का विश्वास तुमको छू गया क्यों....२

कंठ सूखा था कहाँ बोले थे नैना.
और कुछ संवेदनाएं भी नही थी.
कब खिले थे पुष्प मन की वाटिका के.
ये ह्दय में भावनाऐं भी नहीं थी..
जब प्रणय की आहटें भी लुप्त थी तो.
रच दिया इतिहास मन में बो गया क्यों.
जब मिले ही थे नही नैनों से नैना..
प्रेम का आभास तुमको छू गया क्यो.....

कामना के पंख हलचल कर रहे अब..
कह रहे हैं उड़ चलू मैं हो जहाँ तुम .
बाँध जिससे बाँधकर ये मन रखा था
टूटकर ढूंढे तुझे अब है कहाँ तू.
अश्रु चौमासा बने बहते हैं हरपल
प्रेम मे मधुमास तुमसे खो गया क्यों..
जब मिले ही थे नही नैनों से नैना........
प्रेम का आभास तुमको हो गया क्यों.....

मानती हूं ठेस पहुँची है ह्दय को .
पा लिया है किंतु अब मैंने अभय को.
ले लिया वैराग्य तेरे साथ मैंने
शुद्ध कर दे गात के पावन निलय को
प्रेम पथ पर जब निकलकर आ गई मैं ....
फिर कहो सन्यास तुमको छू गया क्यों.....
थी बहुत ही औपचारिक भेंट वो तो
प्रेम का आभास तुमको हो गया क्यों

मनीषा जोशी मनी

मेरा अपना कमरा

लॉकडाउन की घोषणा होने पर मैं अपने कमरे में आकर बैठ गयी , स्तब्ध और हताश। मुझे उदास देखकर मेरा अपना कमरा भी हुआ उदास, हताश और निराश और फिर अचानक खिलखिला उठा। आकर धीरे से उसने मेरी पीठ थपथपायी और बोला क्यों हो इतनी उदास ,हताश और निराश। उसने मुझे मेरे सपनों से जगाया , मुझे प्यार से झकझोरते हुए बोला,अच्छा है बाहर की दुनिया से छुटकारा मिला ,बाहर की झूठी चकाचौंध से बचने के लिए , कुछ समय अपने कमरे में रहो ना। अपने कमरे में बैठो ना, मैं हूँ तुम्हारा साथी , २४ घंटे साथ बिताने वाला।

जब चाहो आओ,जब चाहो जाओ ,उठो बैठो,नाचो गाओ , प्रभु के ध्यान में तल्लीन हो जाओ।ना कोई रोक टोक, ना कोई व्यवधान। कमरा है तुम्हारा अपना साथी, कमरे में अपने इस साथी के साथ बैठो ना। कोरोना है तो कुछ करोना, व्यस्त रहने के कारण साहित्यिक गतिविधियों में अपने इस अमूल्य समय के कमरे में बैठ कर करोना।

देखो, आज मैं कितना खुश हूँ तुम्हें अपने साथ पाकर। मैं घंटों अकेला पड़ा रहता था, तुम्हारी बाट जोहता था, सूनी आँखों से ताकता था। कब आओगी तुम,दिन ढले झुरमुटे में जब तुम आती थीं ,मैं खुशी से फूला नहीं समाता था । लेकिन क्षण भंगुर, मेरी खुशी मुझे एहसास दिलाती थी किय
तुम्हें नहीं है मेरी तनिक भी परवाह
बाहर की दुनिया से है तुम्हारा लगाव
यही विचार मुझे करता था बेताब ,
देखता था संग तुम्हारे बिताने के ख्वाब।

आज मैं कितना खुश हूँ , अब हम और तुम एक साथ बोलेंगे , हँसेंगे, बतियाएँगे और एक दूसरे का साथ निभाएंगे , गुदगुदाएंगे, खिलखिलाएँगे। हम एक दूसरे के सुख दुख के साथी, हम एक दूसरे का सुख दुःख बाँट लेंगे और फिर देखो ना ये कमरे में मुरझाए हुए फूल,ये सूखे हुए पौधे , ये पुस्तकें , ये मेज , ये कलम दवात, ये सब भी तुम्हारी बाट जोहते हैं। आओ इन सब को झाड़ें , पोंछें, प्यार से सहलाएँ , इनसे बातें करें। कितने खुश हैं ये तुम्हें पाकर , आओ इनको फिर से जीवन दान दे दें ।

यह कमरा ही तो है तुम्हारा सच्चा साथी , मैंने तो तुम्हें सुख में देखा है , दुख में देखा है, तुम्हें हँसते हुए देखा है , तुम्हें रोते हुए देखा है , तुम्हें सपनों में खोए हुए देखा है ।कितनी बार मैंने तुम्हें आँसू बहाते देखा है, तुम्हारे सुख से सुखी, तुम्हारे दुख में दुखी ,मैं सदा ही तुम्हारे साथ रहा हूँ।

निराश क्यों होती हो, आओ मिलकर हम हास परिहास करें , कुछ सुनें सुनाएँ, अपना दिल बहलाएँ।मैं तुम्हारा अपना साथी , तुम्हारा अपना कमरा, मुझे याद है तुम , भोर होते ही आँखें मलती उठतीं , आपाधापी शुरु , भागदौड़ का जीवन , कुछ खातीं कुछ समेटतीं और फिर मेरी ओर देखे बिना निकल जातीं थीं।

मैं बस प्रतिक्षा ही करता रहता , शाम ढलती , तुम्हारे आने की चाहत में , मैं चौकन्ना हो जाता तुम्हारे स्वागत में पलक पाँवड़े बिछाता।तुम आतीं तनिक देर विश्राम कर , अपने काम में लग जातीं

और फिर थक कर सो जातीं।मैं अपलक तुम्हें निहारता रहता, नींद में कभी तुम सपने सुहाने देखतीं, कभी मुस्कुरातीं, कभी भय से भयभीत हो जातीं। मैं हमेशा तुम्हारी कुशल मंगल मनाता रहता । मैं तुम्हारा अपना साथी तुम्हारा अपना कमरा , तुम्हारा साथ पाकर अपने को धन्य समझता।

लॉकडाउन हुआ , अच्छा तो नहीं हुआ । बड़ी भारी विपदा आयी है, समस्त विश्व के ऊपर ।त्राहिमाम् त्राहिमाम् कर रहा है सारा संसार। वसुधैव कुटुम्बकम् की पुजारिन तुम, सर्वे भवन्तु सुखिनः की अभिलाषिणी तुम।हृदय तुम्हारा कोरोना की चपेट में आए लोगों के दुख से आहत है पर फिर भी मैं तुम्हारा अपना कमरा, तुम्हें अपने आगोश में ले कर खुश हूँ , प्रसन्न हूँ, हर्षित हूँ , पुलकित हूँ और मुदित हूँ । मेरे सुखद आगोश में आओ , तनिक सा विश्राम कर लो, तुम कुछ क्षण , कुछ पल अपने लिए भी जी लो, कुछ पल बच्चों के साथ , कुछ समय बिताओ परिवार के साथ भी। सदैव तुम्हारे वापिस आने की प्रतीक्षा करते है ये सभी तुम्हारे अपने , अक्सर कमरे में आकर झाँकते हैं तुम्हारे दीदार के लिए।तुम्हें ना पाकर निराश।उस समय मैं उनके दुःख को पढ़ता हूँ और फिर मैं , अपने को क्षमा नहीं कर पाता , काश मैं तुम्हें जाने से रोक पाता, काश मैं तुम्हारे पैरों में लोट जाता , नन्हें बच्चे की तरह बिलख बिलख कर कहता मुझे छोड़कर मत जाओ ।मैं , मैं तो बस अपनी सूनी निरीह आँखों से तुम्हें जाते ही देखता रहा।

लॉकडाउन खत्म होगा फिर तुम्हारी आपाधापी, भागदौड़ फिर से शुरू हो जाएगी ।आओ कुछ तरोताजा हो जाओ, चुस्त, दुरुस्त हो जाओ , दुनिया की बहती धार में दुनिया के साथ बहने के लिए ।क्षण भर को मिला है यह अवसर , साथ मेरे तुम रह लो। आओ मिलकर हम गुनगुनाएँगे, सब की दुखती रगों को सहलाएँगे। दूर से ही सही पर हम सब एक दूसरे के हमदर्द बन जाएँगे।

सब अपने अपने कमरों में बैठें , कोरोना को दूर भगाएँ, हम सबको ये पाठ पढ़ाएँगे, कोरोना को अपने घर में ना लाएँगें।स्वयं बाहर ना जाएँगे तभी इस कोरोना यमदूत से छुटकारा पाएँगे।

तुम्हें और हमें यह एक दुखद और सुखद क्षण मिला है जिसमें हम एक साथ मिलकर इन कठिनाइयों का सामना कर सकें।

तुम्हारा अपना कमरा, तुम्हारा साथी

नीलू गुप्ता
कैलिफोर्निया

याद तुम आए

कभी जो मेघ बरसे , याद तुम आए।
कभी जो नैन छलके , याद तुम आए।

कभी छाई जो बदरी , याद तुम आए।
कभी चमकी जो बिजुरी , याद तुम आए।

कभी चटकीं जो कलियां , याद तुम आए।
करें बातें जो सखियां , याद तुम आए।

उड़ें फूलों पे तितली , याद तुम आए।
करें भंवरे ठिठोली , याद तुम आए।

कभी खनके जो कंगन , याद तुम आए।
बजे पायल जो छम छम, याद तुम आए।

कभी महके जो गजरा , याद तुम आए।
धुले अश्रु में कजरा , याद तुम आए।

पूनम पंडित
(ग्रीन केयर सोसाइटी)

तुम्हारे नाम की माला

तुम्हारे नाम की माला / सदा जपे हर बाला,
तुम्हारे नाम की ज्योति,/है माँ हमने जलायी,

तुम्हीं हो जगदम्बा,/तुम्हीं हो मेरी अम्बा,
जगा दो अलख भवानी,/करो जग की रखवाली,

बचा लो मोह माया से,/फरेबी है जमाना ये,
अभी एहसास जागा है,/लगा दो पार भवानी,

बहुत भटकी जमाने में,/खडी हूँ तेरे द्वारे मैं,
शिकायत है न शिकवा है,/करो कृपा कल्याणी,

नित विनती है मेरी माते/इस जगत में मान मिले,
सरोवर सदा कर जोरि कहे,/आभा का नव संचार खिले.

सुनीता सिंह सरोवर
उमानगर-देवरिया
उत्तर प्रदेश

मैंने भी उनको पापा पापा कह कर खूब पुकारा था

मै उन दो सुद्रढ़ हाथों का खोज रही हूँ सम्बल आज,
जिन हाथो ने ले गोदी में मुझको दिखलाया संसार।

मुट्ठी में अंगुली ले जिन की मैंने चलना सीखा था ,
लिखना सीखा ,पढ़ना सीखा,गिर कर उठना सीखा था।

जिन हाथों ने मुझको आ जा निंदिया कह कर दी लोरी,
और कहा, चन्दन का पलना है और रेशम की डोरी।

जिन हाथों ने मेरी नन्ही सी कोमल बहिय्या को थामे,
मुझको मेले ले जा कर माटी का बबुआ दिलवाया था।

और थाम के मुझको बैठे थे ऊंचे झूले पर कस कर जो
मैंने भी उनको पापा पापा कह कर था खूब पुकारा था।

जिन हाथों ने पीठ पे थपकी दे कर मुझ को प्यार किया
पर, कोई गलती करने पर समझा के मुझे खबरदार किया।

जिन हाथों ने दे कर ताली मेरा उत्साह बढ़ाया था
और चूम लिया था मस्तक जब तो गर्व से मै मुस्काया था।

जिन हाथों ने मुझको मेरे अतिशय ही रुग्ण हो जाने पर
झट डाल के कंधे पर अपने रुग्नालय तक पहुँचाया था।

और, हर खुराक़ की गोली खा लेने पर मेरे तत्क्षण ही...
हर बार मेरे तकिये की नीचे एक नोट सरकाया था।

जिन हाथो ने मुझ को सिखलाया इस जीवन में कर्म का सार..
और बताया कर्म ही जीवन है, बाकी सब है निस्सार ।

कहाँ गए वे हाथ छुड़ा कर हाथ मेरे हाथों से आज...?
मै इस तट पर खोजूं जिन को,वे तो जा पहुंचे उस पार ।

रमा नीलदीप्ति
गीतकार

मीना अरोरा की दो लघुकथाएँ

एक्सपेरिमेंट

जूनियर डाक्टर सीनियर डाक्टर सेः-''सर,आज जो नया पेशेंट आया है।उसकी भी वही हालत है जो दो दिन पहले मरने वाले मरीज की थी।"

सीनियरः-''मतलब,इसका भी हीमोग्लोबिन कम है। इस बार तुम पिछले वाले से एक यूनिट कम ब्लड चढ़ाना। पिछली बार ब्लड की मात्रा बढ़ने से ही मरीज की मौत हुई है।"

जूनियरः-''ठीक है सर,इस बार कम ब्लड चढ़ा कर देखता हूं। अगर यह वाला मरीज बच गया तो आगे से एक साथ बहुत सारा ब्लड नहीं चढ़ाया करूंगा।"

सीनियर डाक्टर हंसते हुएः-''अपने साथ वालों से इंटेलिजेंट हो , तीन- चार को ही टपका कर सीख जाओगे।''

समाज सेवा

समाज सेवी संस्था का हेड, कर्मचारियों को समझा रहा था किः-'' हर आपदा अवसर लेकर आती है। तुम्हें बस उसी अवसर को पकड़ना हैं।चूकना नहीं है यदि वे चूके तो दूसरी संस्थाएं बाजी मार लेंगी। फिर उनके द्वारा यह कहना गलत होगा कि.....
'समाज सेवा का मेवा नहीं मिलता'।"

मीना अरोड़ा

गाय दुहाई

बरसों बाद भाई को अचानक घर आया देख नेहा चौंक गयी ।
न कोई फोन ना ही खबर ये ईद का चाँद अचानक कैसे आज ?
उसने मुस्कुरा कर तंज भरे लहजे में कहा ।
बस ऐसे ही ऑफिस के काम से तुम्हारे शहर में आया था तो सोचा मिलता चलूँ ।
नेहा अपने भाई के मोह में बंधी खटाखट रसोई में पकवान बनाने में जुट गयी ।
''ये लो बच्चों तुम्हारे गिफ्ट्स'' मामा ने बच्चों को महंगे उपहार दिए ।
बच्चों को मामा के गले से लगा देख उसकी अहृंखें खुशी से छलक गयीं । झट से फोन के कैमरे से वीडिओ बना लिया।
''तुम्हारे लिए भी दुबई से यह सोने की चेन लाया था, लो पहन लो'' कह उसने चेन नेहा के हाथ में थमा दी ।
भाई को विदा कर वह बचपन की स्मृतियों में खो गयी ।
रोजाना की तरह लहन में बैठ सर्दी की धूप सेक रही थी कि तभी कोरियर आया ।
वह पार्सल को उलट-पुलट कर देखने लगी ।
"फ्रॉम" में भाई का नाम और पता था ।
मन ही मन मुस्कुराई ''अब क्या उपहार भेजा मेरे भाई''
झट से खोला तो अपनी आँखों पर भरोसा न हुआ ।
पार्सल में कोर्ट के कागज थे ।
तभी फोन की घन्टी बजी, भाई का फोन था ''नेहा ये माता-पिता की जायदाद से सम्बंधित कागज हैं, इन पर दस्तखत कर देना कि तुम्हें उनकी जायदाद में हिस्सा नहीं चाहिए''
आँखों में आँसू भर आये और उसे बचपन की बात याद आ गयी
भाई कहता था ''गाय का दूध दुहना हो तो उसके सामने चारा रख उसकी गर्दन पर हाथ फेरो, उसकी बछिया को भी लाड़-लड़ाना होता है, वर्ना वो लात मारती है''
अब भाई के द्वारा दिए उपहारों और फोन के वीडियों में उसे गाय को दुहने की तैयारी स्पष्ट नजर आ रही थी ।

रोचिका अरुण शर्मा
चेन्नई

छप्पन व्यञ्जन

छप्पन-व्यञ्जन, छप्पन आँतें,
छप्पन सुर भरपूर।
लाल कलाम की मुगली घुट्टी,
एसी पढ़े हुजूर।।

हाथों पर मक्खन की पर्तें,
घिट्ठों के हित रोय।
दुख में डूबी उठा किसानी,
स्वारथ साधे ढोय।
गैंती का हत्था छूने से,
उल्टी आती खूब।
बहे पसीने की बकबक से,
एसी जाते ऊब।
चढ़ा मुखौटे बनो कलंदर,
एसी को मंजूर।१।
छप्पन-व्यञ्जन, छप्पन आँतें,
छप्पन सुर भरपूर।

दुख पीड़ा की कर कविताई,
पाते छप्पन स्वाद।
रटा-रटाया फिक्स अजेंडा,
बनता मुँह की गाद।
छप्पन छेदों की बनियाइन,
मुँह पर रक्खें लाद।
नेमप्लेट पर लिखें किसानी,
बाँटें लाल प्रसाद।
तलवों ने कब गर्मी सूँघी,
रेशम से मजदूर।२।
छप्पन-व्यञ्जन, छप्पन आँतें,
छप्पन सुर भरपूर।

बकर-बकर की आजादी है,
ड्रम में घोली भाँग।
संविधान के हल से जोतें,
सूखे खेत की माँग।
नहर का पानी सूखा रहता,
धरना करे कमाल।
राजनीति की अगली सीढ़ी,
पाती गजब उछाल।
बस बातों की रोटी सेंकें,
ये चश्मे बद्दूर।३।
छप्पन-व्यञ्जन, छप्पन आँतें,
छप्पन सुर भरपूर।

बातों के खेतिहर शहरों में,
रहते गाँव से दूर।
बखत जरूरत जूता घिसते,
नारों खातिर टूर।
ठंडे कमरों से अक्सर ही,
उठती चरपर खाज।
श्रमिक दिवस पर शब्द खोदते,
हमदर्दी के ताज।
अभिनय की नायाब अदाएँ,
फैशन और फितूर।४।
छप्पन-व्यञ्जन, छप्पन आँतें,
छप्पन सुर भरपूर।
लाल कलाम की मुगली घुट्टी,
एसी पढ़े हुजूर।।

- विनय विक्रम सिंह

अभिनेता सुशांत

सुशांत तेरा अचानक यूँ इसतरह चले जाना,
क्यों एक पिता की लाठी को तू तोड़ गया।

तुझे गुलशन गुलशन कहते थे सब तुझे यहां,
सबका प्यारा, दुलारा था आखों का तू तारा।

कहता सबको आई, चाचा, भइया, दादा,
नेह, आकर्षण तुझमें था कूटकर भरा हुआ।

इकलौता तू सबकी आँखों का प्यार, तारा,
क्यों चमन से उजड़ गया गुलशन तू बेचारा।

इस तरह जाना तेरा यह सिद्ध कर गया,
तेरे हृदय की अथाह पाना मुश्किल कर गया।

जीवन में उत्साह से भरपूर रहा तू हरदम,
इतनी बड़ी समस्या को क्यों खुद पी गया।

न हम जान सके , न कोई और जान सका,
यूँ जाना बेवस तेरा , हमें मजबूर कर गया।

जीवन एक बार ही, मिलता है मेरे गुलशन,
क्यों नही समझ पाए, इसको भी जरा तुम।

जीवन संघर्ष ही होता है यही जीने का सहारा,
ऐसे जाना भी कोई जाना है, ये होता है गवारा।

आखिर ऐसी क्या बात हुई , क्यों तू चला गया,
था घर का चमन, घर, गांव में तू था गुलशन।

क्यों हम सबको अनाथ कर, तू यूँ छोड़ गया,
सोचा न कभी था हमने, सपने में भी ऐसा होगा।

उम्मीद थी तुझसे सभी, बुलन्दियों को छूने में
सबके दिलों से सारे बंधन, नाता क्यों तोड़ गया।

मालूम था , थी चांद पे बसने की इच्छा तेरी,
क्यों जमी पे हमको बिलखता बेकदर छोड़ गया।

अब जिये तो जिये हम सहारे किसके बिन यहां,
जीते जी हम सबको क्यों तू हमें मार गया।

तेरे लिए हजार सपने थे , सबने मन में थे संजोए,
क्यों हम सबको रोता, बिलखता यहां छोड़ गया।

तेरी याद में अब जिंदा है, मिटेंगे भी तेरी यादों में
मर के भी अमर रहोगे तुम, रोशनी बन चमकोगे।

विनम्र श्रध्दांजलि।

डॉ दिग्विजय कुमार शर्मा
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

मन का क्या,वो तो बातें करता है

मौसम कोई भी हो
रुत कोई भी हो
दौर कोई भी हो
दर्द कोई भी हो
शब्द कोई भी हो
वक्त कोई भी हो
मन का क्या,वो तो बातें करता है
पूछता है अक्सर सवाल
क्या कसूर है मेरा
जो कभी लबों पर हंसी
तो कभी आँखों मे नमी
जो कभी प्यार के सुख की छाया
तो कभी विरह की तपती दोपहरी
जो कभी मीठे बोल बने मरहम
तो कभी तीर से कर दें छलनी
तो कभी विरह का पतझड़
मन का क्या,वो तो बातें करता है
पूछता है बार बार खुद से ये सवाल
जो कभी हो अपना /तो कैसे हो जाये पराया
जो करें बातें मीठी मुँह पर
तो कैसे पीठ पीछे घोंप दे खंजर
जो वादे लगे सच्चे से /तो कैसे हो जाएं बेमानी
जो बंधन हों प्यार से जुड़े
तो कैसे घुल जाए नफरत
जो रंग हो सच्चा वफा का
तो कैसे फरेब का चढ़ जाए रंग उस पर
मन का क्या,वो तो बातें करता है
अक्सर खुद से और पूछता रहता सवाल
जिनका मिलता नहीं जवाब कोई....जवाब कोई।।

मीनाक्षी सुकुमारन
नोएडा

पर्यावरण संरक्षण

हे मानव अब तो समझो
धरा पर अत्याचार मत करो
पेड़ों की कटाई को रोको
पेड़ों के महत्व को समझो
पेड़ इस तरह काटते रहे
तो ऑक्सीजन कहाँ से लेंगे?
पर्यावरण शुद्ध कैसे रहेगा?

प्रकृति पर अत्याचार मत करो
जल को व्यर्थ न बहाओ
नदियों के जल को दूषित न करो
प्लास्टिक का परित्याग करो
प्रकृति का संरक्षण करो
धरा की हरियाली का संरक्षण करो
अब हरित क्रांति लाएंगे
जगह-जगह वृक्ष लगाएंगे
हे मानव तुम संकल्प करो
वर्ष में पांच वृक्ष अवश्य लगाएंगे
स्वस्थ जीवन के लिए अब हम
पर्यावरण का संरक्षण करेंगे।

डॉ. शम्भू पंवार
सुगन कुटीर
चिड़ावा

मर्दों की शान में चंद शब्द

सीना तानें अग्नि पथ पर चल रहे पुरुष की जवानी से बुढ़ापे की यात्रा इंकलाब से कम नहीं
पर मर्द जिंदाबाद का हकदार नहीं...
क्या आया है पुरुष के हिस्से ?
इल्जाम, जिम्मेदारी और जद्दोजहद...
एक संवेदनशील टुकड़ा मर्द के सीने में भी मौजूद है जो आज तक किसीको महसूस हुआ ही नहीं...
रीढ़ पर असंख्य बोझ के निशान झिलमिला रहे है
मरहम की गुंजाइश नहीं, ना आश्वासन की नमी हासिल..
ढ़ोना उसके हिस्से आया है
कर्तव्य की हर कड़ी मर्द की ऊँगलियों से जुड़ी है...
फर्ज का प्रतीक, हक का हिस्सेदार नहीं......
संदेह के चक्रव्यूह से घिरा खड़ा रहता है एक आस लिए
कोई तो मुझे समझे....
साहित्य के एक भी पन्नें पर उसके विमर्श की कोई कहानी नहीं...
अपना अधिकार जताने कहाँ जाए,
जहाँ भी हाथ देता है सामने दीवार ही पाता है......?
कहाँ समझ सकती है कभी कभी अर्धांगनी भी आँखों की भाषा
नहीं पूछती कैफियत सरताज की वो भी.....
भीतर ही भीतर कुम्हलाए रहती है अकुलाहट मर्द के अहसासों से लिपटी.......
संशय होता है उसे अपनी मर्दानगी पर जब पीड़ को दबाए उम्र काट रहा होता है...
एक प्यास ठहरी होती है मर्द के चेहरे पर वो ढूँढता रहता है समुन्दर अपनत्व का, कद्र का, समझ का.....
रूठी रूठी सी हर शै बे-नूर लगती है उसे
शासक होकर भी स्वतंत्र नहीं........
स्वाभिमान की शृंगी बजती नहीं
संसार रथ का सारथी वट के नीचे खड़ा खुद को ही ढूँढता रहता है....
चट्टान नहीं वो नांहि, कोई संजीवनी बलपूँज जब निष्क्रिय होता है तब डरता है, थकता है वो भी,
व्यथित भी होता है उपवन का माली....
कलेजा फाड संघर्षों की नदीयां धधकती है उसके अंदर,
भयातित भी होता है वो........
जुगाड़ में ही बीती मर्द की जिंदगी,
खुद की आरजूओं की लाशों को दफन करते अपनों की ख़्वाहिशों का महल रचता है........
अपना पर्याय नहीं मिलता उसे
रिक्त है वो स्थान या यूँ कहें कि बिठा दिया गया है जिम्मेदारी के सिंहासन पर संसार की प्रत्यंचा हाथ में दिए......
कम नहीं पुरुष का समर्पण स्त्री से जरा भी,
फिर क्यूँ अल्फाज कम है मर्दों की शान में.....
बेटा, भाई, पिता, पति हर किरदार निभाते कर्ज चुका रहा होता है,
सुरा खोजने नहीं जाता मरहम
न घावों को खारे अश्कों से नहलाता है.......
स्वप्नों को जेब में लिए संसार का भार कंधों पर लादे, हर सुबह नव किरण का रथ सजाता है....
क्या कोई गाएगा मुग्ध होकर महिमा कोल्हू के बैल की भी।

भावना ठाकर,
बेंगुलूरु

मुक्ति का दीया

"चाची आज तो आपको मेरे साथ भागवत सुनने जरूर चलना पड़ेगा।"
"ना ना मेरी प्यारी रद्धो! वैसे भी मेरी जान के लिए उससे भी ज्यादा जरूरी बहुत से काम हैं।"
राधिका तीन महीने की थी तभी उसकी चाची ने अपनी बेटी कहकर उसकी माँ से ले लिया था। राधिका का लालन-पालन उन्होंने जी-जान लगा कर किया था। राधिका की चाची अपने मन ये सोचकर कभी भी मैला नहीं करती कि वह निपुत्री है। लेकिन टोला-पड़ोस, हेती-व्यवहारी जब-तब एक न एक सुई चुभोकर ही मानते। जिस दिन चाची का दिल कोई दुखा देताय उस दिन वे दिन-दिन भर रोया करतीं। अपने भर राधिका उनको चुपाने की कोशिश करती रहती। फिर एक दिन समय के साथ राधिका की शादी हो गयी। उसे ससुराल में भी चाची की चिंता लगी रहती। इसी लिए वह उनके मन में ज्ञान की ज्योति जलाना चाहती थी।
"थैंक्यू चाची, आप मान गयीं। आपने सुना था? कितनी अच्छी बात कही थी महाराज जी ने।" कथा से लौटते हुए राधिका बीच रास्ते में अड़कर खड़ी हो गयी और चाची का मुँह ताकने लगी।
"कौन सी बात रद्धो?" चाची ने अनभिज्ञ बनते हुए पूछा।
"अरे! आपने नहीं सुनी। वही गणिका वाली बात। वह तोते को राम राम रटवाते- रटवाते खुद मुक्त हो गयी।" राधिका ने अपनी ओर से अतिरिक्त हँसी हँसते हुए कहा ताकि चाची भी हँस पड़ें।
"अरे वाह बिटिया! तुम भी खूब भोली हो! भला इस संसार में औरत जात को कभी मुक्ति मिली भी है? चाहे वह सुआ पाले या कुछ और भी।"
राधिका की चाची ने ऊब के साथ अपनी बात कही। चुपचाप दोनों घर लौट आईं। दो-चार दिन बाद राधिका अपनी ससुराल चली गई।
"जिज्जी, रद्धो को इस दीवाली घर बुलाओगी?" राधिका की चाची ने जेठानी से पूछा।
"अभी तो गयी है। आने दो दीवाली फिर देखती हूँ।" जेठानी ने कहा।
इधर दीवाली आई उधर राधिका अपने मायके आ गयी। माँ के पास थोड़ी देर बैठकर उसने चाची वाला पैकिट उठाया और उनके घर चली आई।
"चाची, ये देखो अब की बार मैं आपके लिए क्या लाई हूँ?"
अपने दोनों हाथों में शॉल ताने हुए उसने दरवाजा खोल दिया। राधिका को अचानक आया देखा चाची विस्मित हो गयीं सो उनके मुँह से एक भी शब्द न निकल सका। राधिका जरूर आश्चर्य से चीख पड़ी।
"ये कब हुआ चाची?"
"अरे! आओ बैठो तो पहले। बहुत मन था तुमसे मिलने का। तुम ऐसे आ जाओगी मैंने सोचा ही नहीं था।"
"पहले बताओ न चाची! ये लड़की?"
"राधिका, इसका नाम मुक्ति है।"
"हाँ तो?"
"तो क्या? मैंने इसे गोद ले लिया है!"
"अरे! चाचा जी मान गये?"
"हाँ, उनको मानना ही पड़ा। याद करो, तुमने एक बार अनाथ आश्रम दिखाया था! वहीं जाकर एक दिन मैं बैठ गयी। सब ने बहुत मदद की।" उसकी चाची भावुक हो आई थी।
"फिर क्या हुआ?"
"तुम्हारे महाराज जी ने बताया था न कि राम के नाम से गणिका तर गई। तो मैंने भी इस दीवाली मुक्ति का दीया जला लिया है।" राधिका ने मुक्ति को गोद में उठा लिया और अपनी चाची से लिपट गयी।

कल्पना मनोरमा
बी.२४ ऐश्वर्यम अपार्टमेंट
द्वारका नई दिल्ली - ११००७५

अंतरराष्ट्रीय ई पत्रिका

मां भारती कविता महायज्ञ एक विश्व कीर्तिमान

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के स्वतंत्रता दिवस पर दिए गए वक्तव्य में हिंदी के प्रचार प्रसार पर दिए गए विचार से प्रेरित होकर हिंदी को विश्व के भाषाई पटल पर सुशोभित एवं गौरवान्वित करने हेतु हिंदी पखवाड़े के अवसर पर दिनांक ३१ अगस्त, २०२१ से १४ सितम्बर २०२१, हिन्दी दिवस तक मां भारती कविता महायज्ञ आयोजन- एक अंतरराष्ट्रीय अबाध हिंदी कविता पाठ, विश्व के २८ देशों के हिंदी कवियों द्वारा द मैजिक मैन एन चन्द्रा-फेसबुक पेज एवं यू ट्यूब चौनल, एक अहिंदी भाषी श्री नरेश चंद्र जोशी एवं उनकी पत्नी एवं पटल की सह निदेशक श्रीमती नीता जोशी जी द्वारा स्थापित हिंदी भाषा को समर्पित पटल ने आयोजन को मूर्त रुप देने का संकल्प लिया जिसकी प्रबंध निदेशक, शिक्षाविद् एवं कवियत्री श्रीमती पूनम सागर हैं। इस आयोजन की अध्यक्षता विश्व विख्यात व्यंग्यकार डह.हरीश नवल जी ने की। इस अयोजन के प्रतिदिन ४ स्लहट्स क्रमशः ए, रात १२ बजे से सुबह ६ बजे तक, बी, सुबह ६ बजे से दोपहर १२ बजे तक, सी, दोपहर १२ बजे से शाम ६ बजे तक, एवं डी, शाम ६ बजे से रात १२ बजे तक में बांटा गया। कविता पाठ भारत, जापान, अमरीका, ओमान, सूरीनाम, आस्ट्रेलिया, हहलैंड, महरिशस, अफगानिस्तान, कनाडा, फिलीपींस, इंग्लैंड, साउदी अरब, दुबई, सिंगापुर, जर्मनी आदि देशों के कवियों द्वारा दिन रात 24X7X14 लगभग ३६३ घंटे चला।

डॉ रामदरश मिश्र जी एवं श्री बाल स्वरूप राही जी के आशीर्वाद से इस अयोजन का उद्घाटन ३१ अगस्त को हुआ। लगभग ५२० से अधिक कवि एवं १०० से अधिक संचालक इस महायज्ञ का हिस्सा बने। इस महायज्ञ में आहुति देने वाली साहित्यिक विभूतियों में श्री दिविक रमेश, श्री प्रताप सहगल, श्री लक्ष्मी शंकर वाजपेयी, श्रीमती अलका सिंहा, पद्मश्री सुरेंद्र शर्मा जी, पद्मश्री सुरेश दुबे जी, बुद्धिनाथ मिश्र जी से लेकर देश विदेश के प्रख्यात और नवोदित कवियों ने अपनी काव्य आहुतियां समर्पित कीं। आयोजन में काव्यपाठ के लिए विभिन्न देशों से कवियों के आवेदन इतनेअधिक आने लगे कि अंतिम दो दिन १२ और १३ सितंबर को विशेष समानांतर स्ट्रीमिंग भी करनी पड़ी। इस आयोजन ने देश विदेश की हिंदी साहित्यिक दुनियाँ को एक नई दिशा प्रदान की है। इस आयेजन को विभिन्न पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, न्यूज चौनल्स, सोशल मीडिया, साहित्य प्रेमियों की निरंतर प्रशंसा प्राप्त हो रही है। इनमें सर्वाधिक उल्लेखनीय प्रशंशा पत्र लोक सभा,भारत के अध्यक्ष महोदय एवं हिंदी शिक्षण कला मण्डल, शिक्षा मंत्रालय, दिल्ली द्वारा पटल को प्रेषित पत्र हैं। यह आयोजन हिंदी दिवस के सुअवसर पर १४ सितंबर को संध्या काल सम्पन्न हुआ जिसमें अंतिम दो आहुतियां पटल की प्रबंध निदेशक, पूनम सागर एवं अध्यक्ष डॉ हरीश नवल के कविता पाठ से प्रदान की गईं। पूर्णाहुति भारत के पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री डॉ रमेश पोखरियाल निशंक जी द्वारा सायं काल ७:३० बजे संपन्न हुई। इसके तुरंत बाद मां भारती कविता महायज्ञ के समापन समारोह का आयोजन हुआ जिसमें भारत के वरिष्ट गीतकार, पत्रकार डहव धनन्जय सिंह मुख्य अतिथि रहे। विशिष्ट अतिथियों में डहव पुष्पलता अवस्थी, हहलैंड, डहव राज हीरामन, महरिशस,रमा शर्मा जापान (प्रधान सम्पादक हिंदी की गूँज) एवं श्री इंद्रजीत शर्मा, अमरीका से उपस्थित रहे।

यह विश्व में किसी भी भाषा में किया गया प्रथम अयोजन है जो शानदार तरीके से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ जिसको विश्व कीर्तिमान के रूप में वर्ल्ड बुक अहफ रेकार्ड् में दर्ज किया गया है। वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, लंदन के सौजन्य से २५ अक्तूबर को इंदौर, मध्यप्रदेश में आयोजित अभिनंदन समारोह में मां भारती कविता महायज्ञ आयोजन के अध्यक्ष डॉ हरीश नवल, प्रबंध निदेशक श्रीमती पूनम सागर, निदेशक श्री नरेश चंद्र जोशी को हिंदी को विश्व के भाषाई पटल पर स्थापित करने के लिए सम्मान पत्र, स्मृति चिन्ह इत्यादि से सम्मानित किया गया। इस शानदार कार्यक्रम में लंदन से वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, लंदन, के चेयरमैन श्री दिवाकर सुकूल, केंद्रीय मंत्री श्री रामदास अठावले, श्री अखिलेश मिश्र, भारतीय राजदूत, आयरलैंड, श्री शंकर लालवानी, सांसद, लोक सभा, इंदौर, श्री वरुण कपूर, ए डी जी, मध्य प्रदेश, मेजर जनरल अरविंद कपूर, श्री संतोष शुक्ला, सुप्रीम कोर्ट, एडवोकेट प्रेजिडेंट एवं सी ई ओ सहित बॉलीवुड से प्रख्यात गायक उदित नारायण, प्रसिद्ध गीतकार श्री समीर अंजान आदि तमाम गणमान्य हस्तियां उपस्थित थीं।

बेटी

रखती घर में चिड़ियों सी फितरत बेटी।
लेकर आती घर-घर में बरकत बेटी।।

आते ही हर लेती है हर पीड़ा को।
मौला ने दी है ऐसी दौलत बेटी।।

हरसिंगार जुही चम्पा केसर जैसी।
आँगन को कर देती है जन्नत बेटी।।

नम कर देती है सबकी ही आँखों को।
जिस दिन घर से होती है रुखसत बेटी।।

पीहर की जब याद बहुत तड़पाती है।
अश्क बहाती जब पाती फुर्सत बेटी।।

दोनों ही मेरी आँखों के तारे हैं।
बेटा चन्दन है तो है अक्षत बेटी।।

अपने अरमानों की बलि देकर 'प्रतिभा'।
पूरी करती है सबकी हसरत बेटी।।

प्रतिभा गुप्ता 'प्रबोधिनी'
गोरखपुर

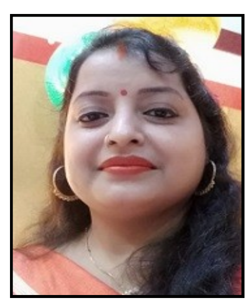

रचना खुद रचती है कवि को

कवि का भ्रम है वह रचता है,
निज भावों की अभिव्यक्ति को।
रचना खुद रचती है कवि को।।

कई बार लगता है जैसे,
कलम ही यह अवरुद्ध हो गई।
बहुत चाहता हूँ लिखना पर,
कविता जैसे क्रुद्ध हो गई।।

कभी बढ़ा देती है आकर,
स्वतः लेखनी के फिर गति को।
रचना खुद रचती है कवि को।।1।।

बस प्रयास से जो लिखते है,
तुकबन्दी है शब्द ज्ञान है।
मन तक बात कहाँ जाती है,
भले सही सारे विधान है।।

स्वयं अवतरित होती है जो,
वही निखारे सदा छवि को।
रचना खुद रचती है कवि को।।2।।

अगर बसे साहित्य किसी में,
होना फिर सम्मान है अच्छा।
मगर स्वयं उसको हो जाना,
नही कभी अभिमान है अच्छा।।

अति का होना कहाँ भला है,
है सर्वत्र वर्जते अति को।
कविता खुद रचती है कवि को।।3।।

रचनायें चुनाव करती है,
कब किससे क्या है लिखवाना ।
लिखने वाले के सिर चढ़ कर,
बुनती है फिर ताना बाना ।।

उनकी संवेदना जगा कर,
त्वरित बदल देती है मति को।
रचना खुद रचती है कवि को।।4।।

कालजयी रचनाओं से ही
रचनाकार अमर होता है।
वहीं ये सम्भव कर पाता है,
ईश हाथ जिस पर होता है।।

कहाँ रोक पाते है बादल,
भला निकलने से उस रवि को।
रचना खुद रचती है कवि को।।5।।

रचना जब आने लगती है,
हृदय में स्पंदन होता है ।
भाव भरे मकरन्द लिए फिर,
शब्द-शब्द चन्दन होता है।।

उठी 'प्रीत' की ज्वाला मन मे,
अग्नि स्वयं ले लेती हवि को।
रचना खुद रचती है कवि को।।6।।

संतोष कुमार 'प्रीत'
वाराणसी

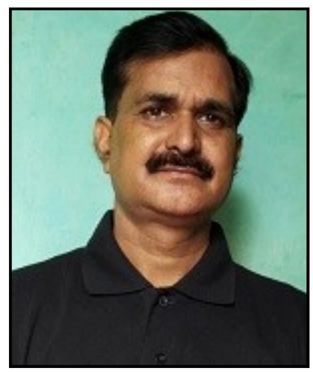

WORLD HUMAN RIGHTS ORGANIZATION
WHRO
"Freedom means the supremacy of human rights everywhere. Our support goes to those who struggle to gain those rights or keep them. Our strength is our unity of purpose. To that high concept there can be no end save victory."
WORLD HUMAN RIGHTS ORGANIZATION

अनमना

ऐ समय की वेदिकाओं
लो हृदय का दंश देखो,
गुप्त पर संवेत होते
सूर्य का विध्वंस देखो।

राधिका को देखने का
है मिला सौभाग्य तुमको,
कृष्ण का छलिया बदन
बेशक किया था त्याग तुमको।

तुम विरह को मानते हो
तुम व्यथा को जानते हो,
तुम चराचर के सुलगते
राग को पहचानते हो।

प्रेम एक है राधिका का
और मीरा चाहती है,
जो यशोदा का परम है
पुतना भी पा सकी है।

चाह कर ना पा सका
खोता गया एहसास तुमसे,
द्वेष में ब्रजधाम का फिर
क्यूं बना इतिहास तुमसे।

मैं समझता हूं उफनता
स्नेह जो देखा है कल,
मंद पड़ती रूक सी जाती
किस तरह यमुना का जल।

साक्ष्य रख अनुभूतियों को
और बींधा हंस देखो ,
ऐ समय की वेदिकाओं
लो हृदय का दंश देखो।
गुप्त पर संवेत होते
सूर्य का विध्वंस देखो।

सन्नी भारद्वाज,
पटना।

क्या भूलूं..क्या मैं याद करूँ?

आज कई दिनों बाद सोचा कि कोई व्यंग्य लिखूँ। फिर सोचा कि किस बकरे की गर्दन पर रख अपनी लेखनी की मैं धार तेज करूँ ? क्या देश की चरमराती...लड़खड़ा कर गिरती हुई अर्थव्यवस्था जैसे पुराने..थक चुके विषय पर नए सिरे से मैं भी गलिया कर कुछ तरोताजा होने की सोचूँ? या फिर जल्दबाजी में देश के शीर्ष नियंत्रणकर्ता के लिए गए अविवेकपूर्ण फैसलों पर लिख मैं बस काम निबटाने भर का कामचलाऊ प्रयास करूँ? क्या उन आने वाले पंद्रह लाख की बात करूँ या फिर शनै शनै रोज कटती जेब की बताइए मैं बात करूँ?

क्या मैं नोटबंदी से उपजी हताशा और विषाद पर त्राहिमाम कर..लाइनों में लगी आँसू टपकाती बेबस..दयनीय भीड़ की मैं बात करूँ या फिर चाय बेच अमीर हुए लोगों के महँगे.. फैशनेबल सूटों में फोटोशूट करवाते...आलीशान हवाई जहाजों में ध ड़ाधड़ विदेश यात्राएँ कर अपनी गोटियाँ बिछाते..सेट करते लोगों की मैं बात करूँ? या जी.एस.टी की चपेट से लपेटे में ले लिए गए हर छोटे बड़े व्यापारी की दिक्कतों और कन्फ्यूजन भरे असमंजस की मैं बात करूँ अथवा हवा से बातें करती पटेल की मूर्ति को ले कर हवा हवाई बातों से सर्जिकल स्ट्राइक करते डिग्रीधारी सज्जन की आज मैं बात करूँ?

या फिर बेरोजगारों की रोज बढ़ती भीड़ को देख खोखले साबित हुए सब दावों की पड़ताल कर मैं जग जाहिर नेताओं की औकात करूँ? क्या देश के गौरवशाली अतीत और स्वाभिमानी वत. 'मान की साठगांठ से कौड़ियों के मोल हुई औनी पौनी बिक्री की मैं बात करूँ? क्या अपने जमीर की आवाज पे सरकारी रेलवे स्टेशनों और हवाई अड्डों के निजिकरण की खुलेआम मैं मुखालफत करूँ या फिर मोदियाना शाह की शह पर भागे या भगाए गए नीरव, चौक्सी जैसे रणबांकुरों के विजय प्रतीकों पर अपने करकमलों से मैं माल्यार्पण करूँ?

क्या जाति, शराब और धन के लोभ और मद में अँधे मतदाताओं की बात करूँ या फिर बाहुबलियों के दम खम..प्रताप और जलवे का यशोगान कर बावले हो चुके जनमानस की बताओ मैं बात करूँ? या साम, दाम, दण्ड, भेद के जरिए दिन पर दिन उद्दंड होते विधायकों को काबू कर हर चुनाव जीतने और चुनी हुई सरकारों को जोड़ तोड़ से जोड़ने की मंशा पर सवाल उठा इस सब की मैं बात करूँ?

या अपने दायरे को संकुचित कर देश की राजधानी और उसके आधे अधूरे मगर प्रचार के भूखे नियंत्रणकर्ता की बात करूँ अथवा औने पौने मन से लिए गए उनके निर्णयों की तर्कपूर्ण ढंग से विवेचना...व्याख्या कर अपने मन की बात और संशय को जाहिर करूँ? क्या अपने व्यंग्य में मुफ्त बिजली, पानी और बस टिकट रुपी झुनझुने के फायदे और नुक्सान की कायदे से मैं बात करूँ? या अक्सर बंद रहने वाले मोहल्ला क्लीनिकों की बात कर उनके लिए किराए पर जगह उपलब्ध कराने में हुई बन्दर बाँट रूपी लूट खसोट का शिद्दत से उल्लेख करूँ? क्या सभी लैब टैस्ट फ्री में करने के नाम पर प्राइवेट अस्पतालों और पैथोलोजिकल लैब्स से हुए करार

में हुई धांधली की बात करूँ? क्या मैं उनके हर जायज..नाजायज फैसले पर, ऊपरी शह प्राप्त कोड़ा चटखाते गुलाम धुरंधर के झटपट गिरते जमीर की बात करूँ?

या देश..राजनीति छोड़ लोकल से वोकल होते हुए अपने आसपास की विसंगतियों की बताओ मैं बात करूँ? क्या कानफोड़ू संगीत और अजब गजब..आड़ी तिरछी स्पीड से ट्रैफिक सैंस की सरेआम धज्जियाँ उड़ाते उन अमीर धनाड्य लोगों की बात करूँ जिन्हें नाम मात्र की भी अक्ल नहीं है कि गाड़ी कब...कहाँ...किस स्पीड से बिना कलाबाजियां खाए या खिलाए दौड़ानी या भगानी नहीं बल्कि महज चलानी है? या मैं उन आँख के अंधों की दमदार तरीके से वकालत करूँ जिन्हें ट्रैफिक की लाल बत्ती और हरी बत्ती में रत्ती भर भी फर्क नजर नहीं आता? क्या उन ट्रैफिक पुलिस वालों की भी बात करना सही रहेगा जो लाल बत्ती पर ट्रेफिक कंट्रोल करने के बजाए, चालान कर सरकारी खजाने का उद्धार करने के बजाय स्वयं के उद्धार को जरूरी समझ अपने वांछित शिकार को अचानक से धप्पा बोल.. धप्प से आउट कर भौंचक छोड़ दिया करते हैं। क्या मैं चौराहों पर सड़क पार करती उस मुंदी आँख वाली बेलगाम भीड़ की भी बात करूँ जिसे ये तक नहीं पता की सड़क पर अपनी आँखें खोल...आगा पीछा देखते हुए उसे जेब्रा क्रासिंग से पार किया जाता है। क्या यहाँ पुलसिया शह प्राप्त उन हहकरों..हिजड़ों और भिखारियों की बात करना भी जायज होगा जिन्हें हर चौक...हर चौराहे पर खुलेआम चोरी चकारी करने...ऊधम मचाने की डंके की चोट पर खुली छूट मिली हुई है?

क्या सड़कों..बाजारों..घरों..मोहल्लों में बेवजह कान फोड़ू हहर्न..भोंपू... स्टीरियो बजाने वालों को अपने व्यंग्य की चपेट में आने से मैं मुक्त रखूँ ? या इन्हें भी उन फोन पर जोर जोर से बात कर पूरे मोहल्ले को अपना दुःख दर्द...अपनी राम कहानी गा गा सुनाने वालों की श्रेणी में खुले दिल और भरे मन के साथ झक्क मारते हुए शुमार करूँ? क्या सुरसा के मुँह के माफिक सड़कों पर बेतरतीब बढ़ती गाड़ियों और पार्किंग की दिक्कतों की भी बात करूँ या फिर इसके पीछे लोगों की दिखावट की आदत को भूल इसके मूल कारण याने के बैंकों और फाइनैंस कंपनियों की आनन फानन में ताबड़तोड़ लोन देने की मंशा से आजिज आ अपने मन की व्यथा का इजहार करूँ?

क्या उन कुसज्जनों का जिक्र करना भी जायज एवं वाजिब रहेगा जो पाँच पाँच.. छह छह गाड़ियां अपने काबू में रखने के बावजूद पार्किंग की समस्या और बढ़ते पार्किंग चार्ज का रोना सबको गा गा के सुनाते हैं? क्या उन वीर..जांबाज सपूतों का जिक्र यहाँ बेमानी होगा जो पबों, क्लबों और सहफिस्टिकेटेड कहकटेल पार्टियों में लयबद्ध तरीके से महँगाई और कुव्यवस्था की बात पर बिना किसी भेदभाव के सभी तत्कालीन सरकारों का मर्सिया अक्सर पढ़ा करते हैं?

अब कहने...सुनने और लिखने के लिए तो मुद्दे इतने हैं कि बस लिखता जाऊँ लेकिन तय शब्दों की लिमिट पहले से निर्धारित हो तो बताओ कोई क्या करे? अब आप ही ही बताइए कि अपने व्यंग्य में किन मुद्दों का मैं शुमार करूँ और किनसे मैं खुद को दरकिनार रखूँ? इसी सोच में डूबा हूँ कि..क्या भूलूँ और क्या मैं याद करूँ?

राजीव तनेजा
भारत

बूंद हूँ मैं

मेघ से निकली बूंद हूँ मैं,
अमृत सा मेरा अहसास
धरती पर जब आती हूँ तो
सब आ जाते मेरे पास ।

समझो मेरी कीमत तुम सब
सबके लिए बहुत हूँ खास
मेरे बिना जिंदगी सबकी
हो जाएगी बदहवास ।

बहती नदियां कभी एक दिन
देती थीं जीने की आस
झरते झरने, ताल तलैया
सदा बढ़ाते थे विश्वास ।

बोतल में जब से बन्द किया है
घुट घुट कर ले रही हूँ साँस
मर जाऊँगी जल्दी एक दिन
नहीं बुझेगी सबकी प्यास ।

आने वाली पीढ़ी सुन लो
तुमसे है मुझको अब आस ,
वर्षा का जल नहीं बचा तो
विश्व में होगा महाविनाश ।

विनोद शर्मा
नोएडा

थाईलैंड में हिंदी

गूंजे हिंदी विश्व में स्वप्न हो साकार ,
थाई देश की धरा से हिंदी की जय-जय कार
हिंदी भाषा का जयघोष है सात समुंदर पार,
हिंदी बने विश्व भाषा दिल करे पुकार।

वैश्वीकरण के इस युग में सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया अति सहज स्वाभाविक आवश्यक और महत्वपूर्ण हो गई है। सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की सशक्त माध्यम भाषा है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी भी भाषा है। सांस्कृतिक संबंधों को प्रगाढ़ और घनिष्ठतम बनाने में भाषा की भूमिका सर्वदा सार्थक और सकारात्मक रही है। भाषा मनुष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली साधन है। मानव के संप्रेषण एवं अभिव्यक्ति का प्रमुख आधार भाषा ही है।जो भाषा जितनी खुली होती है वह उतनी ही विकसित होती है। स्वच्छंद सी आकाश रूपी विश्व में चांद रूपी हिंदी विचरण करती है तो उसके विकसित होने का आभास स्वतः ही हो जाता है। खुले आकाश में चमकते सितारों के मध्य चांद को देखना एक अलग अनुभव देता है। विभिन्न सितारों के मध्य चांद की आभा विलक्षण होती है। ठीक उसी प्रकार विश्व रूपी आकाश मंक चांद रूपी हमारी हिंदी सुशोभित है जो विभिन्न भाषाओं रूपी सितारों के मध्य अपनी आभा फैला रही है। हमारी मातृभाषा हमारी और हमारे देश की पहचान है। आन- बान और शान है। हिंदी के बढ़ते हुए अंतरराष्ट्रीय वर्चस्व को देखते हुए हम कह सकते हैं कि विश्व फलक पर हिंदी रूपी पुष्प अपनी सुगंध चहूँ और फैला रहा है।

वर्तमान में विश्व फलक पर हिंदी भाषा का प्रचार- प्रसार बहुत तेजी से होने लगा है। यह मधुर भाषा विश्व भाषा के रूप में अग्रसर होती जा रही है। अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि दक्षिण पूर्व एशिया के सुंदर देश थाईलैंड में हिंदी भाषा का सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर विकास हो रहा है। थाईलैंड में रहने वाले भारतीय और थाई लोग देश की सभ्यता और संस्कृति के साथ-साथ हिंदी भाषा के प्रति भी सजग हो रहे हैं।इस संदर्भ में हिंदी चलचित्र, हिंदी सीरियलों की महत्ती भूमिका है। यहां के लोगों में खासतौर से युवा पीढ़ी में हिंदी चल- चित्रों के प्रभाव से हिंदी के प्रति लगाव और श्रद्धा दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। बहलीवुड सिनेमा उसके गाने नृत्य के प्रति दीवानगी चरम सीमा पर है। घर -घर में थाई लोग हिंदी चलचित्र बड़े शौक से देखते हैं जैसे अशोका, चंद्रगुप्त ,नागिन, महाभारत और रामायण सीरियल बड़े प्रसिद्ध है ।इसी तरह भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं रीति-रिवाजों, देवी-देवताओं ,मेहंदी, कुमकुम, आरती और प्रसाद आदि के बारे में उनकी जिज्ञासा पूर्ण प्रश्न बड़ी खुशी और आत्मीयता से पूछे जाते हैं। जिसका उत्तर पाकर उसमें निहित सुंदर भावों को सुनकर हिंदी भाषा के अध्ययन के प्रति उनका रुझान बढ़ जाता है।

इसी का परिणाम है कि थाईलैंड में कई विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा के अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था है जैसे सिलपाकॉर्न विश्वविद्यालय, महाचुलालोंगकोर्न राज विद्यालय बौद्ध भिक्षु विश्वविद्यालय, प्रिदीपानो मान्ग धमासास्त्र विश्वविद्यालय, चुलालोंगकोर्न विश्वविद्यालय, कसासास्त्र विश्वविद्यालय और चियांगमाई विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि लेने के बाद वे स्नातकोत्तर और पीएचडी करने के लिए भारत जाते हैं। हर वर्ष भारतीय दूतावास की सहायता से महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय ,नहर्थ ईस्टर्न हिल विश्वविद्यालय शिलांग ओर सेंट्रल इंस्टीट्यूट हिंदी आगरा आदि संस्थानो में छात्र अध्ययन के लिए जाते हैं।

थाई भारत कल्चरल लॉज ऐसा संस्थान है जो हिंदी को विश्वव्यापी बनाने की यात्रा में अपनी सक्रिय भूमिका अदा कर रहा है ।'हिंदी बने विश्व भाषा मूल मंत्र' का पालन करते हुए गत १२ वर्षों से मैं भी इस अभियान से जुड़ी हुई हूं। इसमें श्री राज माता जी का अभूतपूर्व योगदान है ।उनकी पूर्ण निष्ठा से आज विद्यार्थी ना केवल हिंदी सीखते हैं बल्कि भाषा के कौशलो में दक्ष भी बनते हैं ।यह संस्था हिंदी भाषा के माध्यम से भारत और थाईलैंड के सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करने में सेतु का काम कर रही है। यहां हिंदी भाषा की कक्षा के साथ-साथ अनेक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। उन समारोह के माध्यम से भारत की संस्कृति को मजबूत बनाने का प्रयास किया जाता है। कवि सम्मेलन, भाषण प्रतियोगिता, कविता पाठ और नाटक आदि समय-समय पर आयोजित होते हैं। हिंदी को घर-घर तक पहुंचाना ही मुख्य ध्येय हैं। इसमें थाई युवा वर्ग बढ़-चढ़कर भाग लेता है ।जिससे हिंदी के प्रति प्रेम जागृत होता है। विदेशी धरा पर थाई लोगों को हिंदी बोलते, पढ़ते देख मन बहुत प्रसन्न होता है।

स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, बैंकहक में विभिन्न राष्ट्रीयता प्राप्त विद्यार्थी हिंदी भाषा सीख रहे हैं। हिंदी के प्रति सकारात्मक रवैया मेरे लिए सुखद अनुभव है ।उन लोगों की जुबान से हिंदी सुन मैं मंत्रमुग्ध रह जाती हूं।। विद्यार्थियों के साथ केवल हिंदी में बात करती हूं। हिंदी भाषा की वैज्ञानिकता मधुरता व स्पष्टता के कारण हिंदी भाषा छात्रों के लिए सरल हो जाती है। कई भाषाई पृष्ठभूमियों के छात्रों को हिंदी सीखने में सर्वाधिक सहायक हिंदी भाषा की वैज्ञानिकता है।जैसे उच्चारण और लेखन की एकरूपता ।जैसा बोलते हैं वैसा लिखते हैं। स्वर और व्यंजनों के क्रमिक उच्चारण स्थान एक वर्ण के लिए एक ही ध्वनि और मात्राओं का तर्कसंगत प्रयोग।

भारत सरकार द्वारा हिंदी भाषा के अध्ययन के लिए भेजी गई पुस्तके सुगम और आकर्षक है ।जो हिंदी भाषा को सरलता से सिखाने में महत्वपूर्ण है। चित्र के साथ शब्द का अर्थ लिखा है जो छात्रों की शब्द संपदा बढ़ाने में सहायक है। वे हिंदी भाषा बोलने, लिखने, समझने और सामान्य वार्तालाप में सक्षम हो जाते हैं। संस्थान समय-समय पर कई प्रतियोगिताएं आयोजित करता है। जिसमें छात्र बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं ।विद्यार्थियों को भाषा कौशल दिखाने के लिए कई अवसर मिलते हैं।यह केंद्र थाई -भारत मैत्री को मजबूत करने की अटूट कड़ी है। हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक पताका को विश्व पटल पर फहराने के लिए दृढ़ संकल्प है।छात्र भारतीय दूतावास द्वारा आयोजित योग, नृत्य और वादन में रुचि रखते हैं। रंग बिरंगी होली ,प्रकाश पर्व दीपावली को हमारे साथ प्रसन्नता से मनाते है।

हिंदी दिवस तथा विश्व हिंदी दिवस क्रमशः १४ सितंबर को १० जनवरी को मनाते हैं। यह समारोह भारतीय दूतावास द्वारा बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। हिंदी के विभिन्न

कार्यक्रम किए जाते हैं। विद्यार्थी इसमें बढ़-चढ़कर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हैं। भारतीय दूतावास के द्वारा उनके उत्साहवर्धन के लिए प्रशंसा पत्र दिए जाते हैं।

थाईलैंड में विद्यालय स्तर पर कई विद्यालयों में द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी का अध्ययन अध्यापन होता है। उनमें मुख्यत सीबीएसई पाठयक्रम का विद्यालय ग्लोबल इंडियन इंटरनेशनल स्कूल, पायोनीर इंटरनेशनल स्कूल,थाई सिक्ख इंटरनेशनल स्कूल आदि ।यहां छात्र पूरे मनोयोग से हिंदी सीखते हैं।

थाईलैंड के लोगों में भारतीय संस्कृति के प्रति जिज्ञासा और आकर्षण अत्यधिक है ।वर्तमान में डिजिटल क्रांति के कारण अपने देश में रहते हुए भी यहां के निवासी भारतीय संस्कृति के सुंदर व गरिमा पहलुओं को देखते हैं।जिससे भारत दर्शन की उनकी लालसा और प्रबल हो जाती है। हिंदी भाषा दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को प्रगाढ़ बनाने तथा पर्यटन को बढ़ावा देने की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।यही संस्कृति की संवाहिका भाषा का श्रेष्ठतम पक्ष तथा महत्वपूर्ण उपलब्धि है ।

मैं उन स्वपन दर्शियों में से एक हूं जो अक्सर सपने देखते हैं। उनके साकार होने तक उन में खोए रहते हैं। मेरा सपना था कि मैं राष्ट्र की सेवा करूं। यह सपना साकार हुआ थाईलैंड में आकर। मेरे लिए बड़े गौरव की बात है कि हिंदी भाषा का प्रसार थाईलैंड में हो रहा है। थाईलैंड और भारत में सांस्कृतिक समानताएं हैं ।जिस वजह से हिंदी भाषा को सीखने की ललक युवाओं में अधिक है ।थाईलैंड में हिंदी समृद्ध है। युवाओं के लिए रोजगार का माध्यम है। पर्यटन के लिहाज से प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में पर्यटक थाईलैंड से भारत और भारत से थाईलैंड आते हैं। इस दौरान एक-दूसरे के संवाद बनाने और संस्कृति को समझने के लिए हिंदी अहम भूमिका निभाती है।

थाईलैंड में हिंदी अध्यापन करते हुए मैंने महसूस किया है कि विश्व स्तर पर विस्तृत होती हिंदी के सकारात्मक और सही विस्तार के लिए हम हिंदुस्तानियों की जिम्मेदारी है कि हम अपनी हिंदी का मान और सम्मान करें क्योंकि हिंदी केवल भाषा नहीं संस्कृति की वाहिका है।

हिंदी हमारी अस्मिता है
हिंदी हमारा मान।
हिंदी से ही होती है
हम सब की पहचान।

श्रीमती शिखा रस्तोगी
जी. आई.आई.एस.
बैंकॉक,थाईलैंड

एक लप्पड़ मार के तो देख

हर मुश्किल राह आसान हो जाएगी तेरी
धीरज रख आगे कदम बढ़ा के तो देख

बहुत हुआ तेरा अब सुनहरे ख्वाब बुनना
नींद त्याग और बाहर निकल के तो देख

कैसे-कैसे लोग वैतरणी तर गए सरपट
याद कर फिर उचक-दुबक चल के तो देख

कुछ भी हासिल न होगा बैठ किनारे तुझे
हिम्मत कर गहरे पानी उतर के तो देख

छोड़ उदासी मिलेगी तुझे तेरी मंजिल
कमर कस पूरे वेग दौड़ लगा के तो देख

सोये लोग भी जागकर साथ चल देंगे तेरे
विश्वास रख झिंझौड़-झिंझौड़ के तो देख

मुर्गे-बकरे काट तू भी बन मोटा आदमी
सोच मत लपड़- झपड़   कर के तो देख

बहुत हुआ गर गिड़गिड़ाना हाथ-पैर जोड़ना
चुप मत रह एक लप्पड़ मार के तो देख

...कविता रावत

(भूल सुधार -
पिछले अंक में यह कविता वीरेंद्र सिंह रावत के नाम से छपी थी, जिसका हमे खेद है।)

अस्पताल और थाने में बाढ़

इधर देश के पूर्वांचल में फिर बाढ़ आ गई।हर साल आती है।यह एक ऐसी महामारी है,जिसका टीका अभी तक ईजाद नहीं हो पाया है।बाढ़ का पानी सबसे पहले अस्पतालों में भरता है।बाढ़ न आए तो भी,साधारण बारिश का पानी अस्पतालों में घुस जाता है।थाने आदि का नंबर बाद में आता है।हमने एक नेताजी से कहा,आप लोग इस तरह के अस्पताल क्यों बनवाते हैं,जिनमें बरसात और बाढ़ का पानी घुस आता है।नेताजी ने बड़ी मासूमियत से कहा,असल में हम चाहते हैं कि डक्टर्स अपने स्कूली दिनों को न भूलें।डक्टरी पढ़ने से पहले वे लोग अपनी स्कूली शिक्षा में मेंढ़कों की चीर फाड़ करते रहे थे।यह पढ़ाई डक्टरी की नींव होती है।वे नींव को याद रखें,इसलिए अस्पतालों में मेंढ़कों की उपलब्धता हेतु,पानी को घुसने की सुविधा दी गई है।ब्यूरोक्रेसी कहती है,अस्पतालों में पानी भरने के बड़े फायदे हैं।एक तो उपकरणों की खरीद का घोटाला दब जाता है,दूसरे उपकरणों को चालू करने का दबाव भी समाप्त हो जाता है।आ. जकल उपकरणों के लिए ऐसे ऐसे स्पेशिलिस्ट नियुक्त हुए हैं,जिन्हें उपकरण चालू करना ही नहीं आता!अधिकारी और चिकित्सक बड़े आराम से कह सकते हैं,हम क्या करें अस्पताल में पानी आने से, दो करोड़ का आयातित उपकरण खराब हो गया।

अस्पतालों में घुसा पानी कई समस्याएं पैदा करता है,तो सरकारी अधिकारियों की कई समस्यायों का समाधान भी करता है! वेंटिलेटर खराब थे या नहीं,इसका निर्णय होने से पहले ही बाढ़ का पानी घुस आए,तो केंद्र और राज्य,दोनों सरकारें कटघरे में खड़े होने से बच जाती हैं।कई चीजें,जो पानी में खराब होने के लिए स्टोर में उपलब्ध थीं ही नहीं,उन्हें भी रिकार्ड में बाढ़ के कारण खराब दिखा दिया जाता है।अस्पताल की तमाम जांचों को समेट कर,यह बाढ़ का पानी नदी की ओर लौट जाता है।जैसे हमारे देश में ऋतुएं आती हैं,या मुंबई में हर साल जर्जर इमारतों के ढहने से लोग मरते हैं,उसी तरह हर साल कई शहरों के अस्पतालों में बरसात का पानी घुसता है।न घुसे तो लगता है,इस साल पानी बरसा ही नहीं!

एक थाने में बाढ़ का पानी घुस गया।बाढ़ का पानी क्षेत्रवाद से परे है इसलिए कभी मध्य प्रदेश के थाने में घुस जाता है,तो कभी बिहार के या फिर, कभी मुंबई के।तो जब थाने में पानी घुसा तो संतरी को हस्बेमामूल,पता ही नहीं चला।उसकी बन्दूक का निचला भाग भीग गया।नली ऊपर को थी,इसलिए बन्दूक से गोली नहीं छोड़ी जा सकती थी।संतरी ने कभी किसी को थाने में घुसने से नहीं रोका।एक बार तो इसी संतरी के गेट पर रहते, हवालात से बंदी भाग गया था।तब भी संतरी ने नहीं टोका।बड़े बड़े अपराधी थानेदार से मुलाकात कर लौटते,तो संतरी उनसे नमस्ते जरूर करता।पानी जब घुसता है,तो उसे चाहकर भी बन्दूक से नहीं रोका जा सकता।थानेदार ने जब पूरी नफरी को मेजों पर चढ़े देखा,तो संतरी को डांटा।बाढ़ के पानी को क्यों नहीं रोका?संतरी ने अपनी बन्दूक के भीगने की सूचना दी,तो थानेदार बोला, दो चार्ज बनते हैं तुम पर।एक तो पानी नहीं रोक पाए,दूसरा बन्दूक गीली कर दी।हमने हिदायत दी थी तुम्हें,भले ही पतलून गीली हो जाए, बन्दूक गीली नहीं होनी चहिए!यह पुलिस मैनुअल के खलिाफ है।

थाने में पानी इस कदर घुसा था कि छोटे मोटे अपराधों की छोड़ो,घर में पड़ी डकैती की रिपोर्ट लिखवाने के लिए पीड़ित थाने में नहीं घुस पा रहे थे!दीवान जी की चिंता यह थी कि मालखाना ऊंची जगह पर बना था।उसमें पानी नहीं घुस पा रहा था।दीवान जी हाथों से पानी उलीचकर मालखाने के चबूतरे पर बाढ़ लाने का असफल प्रयास कर रहे थे।दरअसल दीवानजी मालखाने से चुराकर एक हथियार अपने गांव पहुंचा आए थे।मालखाने में बाढ़ आ जाए,तो उस हथियार को बाढ़ में बह गया,दिखा सकते हैं।वह थाना कई बार अनहोनी को होनी में तब्दील करके दिखा चुका था।वैसे देश की पुलिस अभी भी सियासत से सीख रही है।लीपापोती में उसे अभी उतनी महारत हासिल नहीं हुई है,जितनी सियासत के पास है।कोई और जगह होती,तो दीवान जी बाढ़ का वीडियो बना लेते,पर मालखाने का वीडियो बनाना निषिद्ध था।तुरंत सस्पेंड हो सकते थे।बहरहाल थानेदार ने जब कई हिस्ट्रीशीटर गुंडों की फाइलों को बाढ़ में बहना दिखाया,तो दीवानजी ने भी खुद के द्वारा गायब किए गए हथियार का,बाढ़ में बहना दिखा दिया।रोजनामचे में लिख दिया तलाश जारी है।नेताओं और ब्यूरोक्रेसी की तरह,उस थाने ने(दीवानजी के सौजन्य से) बाढ़ को उसी रात सेलिब्रेट किया!

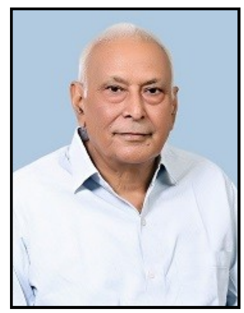

अरविंद तिवारी
मेहरा कॉलोनी शिकोहाबाद
(फिरोजाबाद) उ०प्र०

किताबों की अंतिम यात्रा

फटी, पुरानी, रद्दी अब यही मेरे नाम रह गए हैं। किसी लेखक के पुस्तक विमोचन स्थल से जब मैं पहली बार इस लेखक के घर पर आयी थी, उनका मेरा प्रति स्नेह छिपाये नहीं छिपता था। कभी वे मुझे अपनी अंगुलियों से सहलाते तो कभी थूक की नरमी से मेरे पन्ने पल. टते। अब वह बात नहीं रही। घर में प्रवेश करने के कुछ दिन तक मैं उनके हहल की शोभा बनी रही। चूँकि हहल में रखी शीशे की अलमारी में जगह सीमित थी, सो वहाँ मुझे अधिक दिन तक रहने का सुख नहीं मिला। जल्द मुझे वहाँ से घसीट बाहर किया गया। कुछ दिन तक घर की अलग-अलग मेजों पर मैंने अपना आसन जमाया। कहते हैं जब जिंदगी घुमक्कड़ बन जाती है तब अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए किसी न किसी तरह मौजूदगी दर्ज करानी पड़ती है। मैं आकार में थोड़ी मोटी थी। मेरा जिल्द रूपी लिबास मजबूत होने के कारण मैं बहुत सारे काम कर लेती थी। मसलन लेखक या उनकी पत्नी, बच्चे चाय, कहफी या दूध का कप मेरी पीठ पर रख देते थे। इससे मेरे बदन पर गोल-गोल निशान पड़ जाते थे। मैं पढ़ने में उपयोगी थी या नहीं यह तो लेखक ही बता सकते थे, लेकिन मैं मच्छर, झिंगूर, कीड़े-मकौड़े मारने के एकदम योग्य थी। मेरे अंग-अंग पर उन कीटों के खून के निशान ची ख-चीखकर गवाही देते थे। कई बार रद्दी खरीदने वाले के हाथों लेखक की पत्नी मुझे बेचने की कोशिश करती थी। वो तो लेखक थे, जो मुझे एक से दो बार उलट-पुलटकर देखते और फिर से स्टोर रूम में र ख देते थे।

यह दीन गाथा केवल मुझ जैसी एक किताब का नहीं स्टोर रूप में पड़ी कई किताबों का था। अक्सर हम सब मिलकर आपस में बात भी करते थे। हम अपने इस दुर्भाग्य पर रोते कि हमें हहल में रखी शीशे वाली अलमारी में जगह क्यों नहीं मिलती। इसका भी एक दिन पर्दाफाश हो गया। स्टोर रूम में पड़ी एक दुबली-पतली, जिसकी जिल्द फट चुकी थी और अपने जीवन की अंतिम सांसे गिन रही थी, ने बताया – ''एक दिन हॉल में मेरे सामने ही लेखक किसी से बात कर रहे थे। सामने वाले ने जब लेखक से पूछा कि आप इतनी सारी पुस्तकें उठा लाते हैं, उन्हें रखते कहाँ है? आपकी विद्वत्ता को भला यह अलमारी क्या संभाल पाएगी?'' तो लेखक मुस्कुराते हुए प्रत्युत्तर में कहते हैं- ''आप ठीक कहते हैं। अब देखिए न जहाँ कहीं भी चला जाता हूँ कोई न कोई मुझे पुस्तक थमा देता है। कोई समीक्षा लिखने के बहाने थमा देता है तो कोई सैंपल के रूप में। अब मैं आपको क्या बताऊँ किसी को न नहीं कह सकता। इसलिए सबकी किताबें उठा लाता हूँ। घर लाने पर श्रीमती जी की डाँट अलग से खानी पड़ती है। इन किताबों के चलते यह घर, घर नहीं रद्दीखाने सा लगने लगा है। चूँकि सभी किताबें अलमारी में रखी नहीं जा सकती, इसके लिए मैंने बीच का रास्ता अपनाया है। अलमारी में उपयोगी शब्दकोश और मेरी लिखी किताबों के अतिरिक्त शेष सभी किताबों को स्टोर रूम में रख दिया है (फेंक दिया है)। जब आवश्यकता पड़ती है तब ढूँढ़कर निकाल लेता हूँ।" इतना सुनना था कि स्टोर रूम मे पड़ी हम सभी किताबों का घमंड चकनाचूर हो गया। हम इस भुलावे में थे कि ले खक हमसे प्यार करते हैं। वह तो अब जाकर पता चला कि वे हमें मजबूरी में ढो रहे थे।

एक दिन हमारे बीच लेखक का फोन आ बैठा। हमने उससे पूछा कि कहीं तुम भी बेकार तो नहीं हो गए, तो इस पर उसने कहा- "मैं भला बेकार कैसे हो सकता हूँ। लेखक तो मुझे अपनी पत्नी-बच्चों से भी अधिक प्रेम करते हैं। जितना समय मुझ पर बिताते हैं, उतना समय किसी को नहीं देते। वह तो लेखक की लड़की उनसे मजाक करने के लिए मुझे यहाँ छिपा रखा है। वरना तुम्हारी इतनी हैसियत कि मेरी बराबरी कर सको। एक बात और, आजकल वे सब कुछ पढ़ने लिखने का काम मुझी पर करते हैं। पहले कभी भूल से स्टोर रूप में तुम्हारी जरूरत समझकर कदम र ख देते थे, अब तुम्हारी खैर नहीं। अभी कुछ देर पहले ही उनकी रद्दीवाले से मुझ पर बात हुई थी। वह रास्ते में ही होगा। अब इस स्टोर रूम में तुम्हारा कोई काम नहीं है। आज से तुम सबकी छुट्टी।"

इतना सुनना था कि हमारा कलेजा बैठ गया। हमें रद्दी वाले से बहुत डर लगता था। वह हमारी नजर में किसी कसाई से से कम नहीं था। जिस तरह कसाई जीव का गला काटकर उसके अंग छिन्न-भिन्न कर देता है, ठीक उसी तरह रद्दीवाला हमें थोक के भाव में खरीदकर हमारी जिल्द और पन्नों के साथ उपर्युक्त व्यवहार करेगा। चूँकि अब यह हमारी अंतिम यात्रा है, तो हम भगवान से केवल इतनी प्रार्थना करते हैं कि हमें अगले जन्म में कुछ भी बना दे, लेकिन किताब हरगिज न बनाए।

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
हिंदी अकादमी मुंबई से पुरस्कृत
नवयुवा व्यंग्यकार
चरवाणीः ७३८६५७८६५७

बारिश का मौसम

काले बादल काले बादल
क्या पानी लेकर आए
धीरे-धीरे झींसी टपके
जैसे करवट ले रहा मौसम
दिनभर बरसे घनन-घनन
घर में दुबके लोग करे मनन

पुरनिया कह गए हैं
बारिश के मौसम के बारे में
काला बादल जी डरावे
और भूरा बादल पानी लावे
गजब का मापक सिद्धांत था
गहन अनुभूति का कमाल था

सोचता हूँ मैं
भूगोल विषय पर
इन बादलों को देखकर
समुद्र से उठती हवाएं
चलती बलखाती लहराएं
पानी भरकर बादल हवा के साथ
कदमताल करते भागती
प्रकृति द्वारा नियति किए पतों पर
जमकर बरसती हैं
जिन इलाकों के ठिकाने पते में नहीं
उनको सूखा छोड़ वह आगे बढ़ जाती हैं
गजब कोरियर डिलीवरी सिस्टम है

इससे नदियों का भरना शुरू होता
कभी-कभी बाढ़ का कारण बनता
तटवर्ती इलाके के लोग
हर साल इनका कोप झेलते हैं
फिर भी हिम्मत नहीं हारते हैं
वे अडिग रहकर
बाढ़ का सामना करते हैं
यही जिंदगी है
कभी खुशी कभी गम
बारिश की तरह यह भी
आता-जाता है
जिंदगी यूं ही चलती रहती है

सूर्यदीप कुशवाहा
आवास विकास कालोनी, पाण्डेयपुर,
वाराणसी -२२१००२ उत्तर प्रदेश।

टिकने ना देंगे हम हिंदुस्तान में

कोरोना के कह दिया है कान में
टिकने ना देंगे हम हिंदुस्तान में
चीन डोल या जा तू पाकिस्तान में
'टिकनें ना देंगे हम हिंदुस्तान में'

डर- डर के ना काम कोई हम करते हैं
विपदाओं से हंसकर हम तो लड़ते हैं
हिम्मत बहुत बची है अपनी जान में
'टिकनें ना देंगे हम हिंदुस्तान में'

भाईचारा तोड़ ना अपना पाएगा
तू भी आखिर कब तक यूं लड़ पाएगा
ढूंढ ही लेंगे बसा तू जिसकी जान में
'टिकनें ना देंगे हम हिंदुस्तान में'

तेरे खातिर घर से ना निकलेंगे हम
ये ना समझना तुझसे बहुत डरते हैं हम
फैंक देंगे तुझको पीक दान में
'टिकनें ना देंगे हम हिंदुस्तान में'

तुझको गरूर तेरा ही खा जाएगा
भाग कोरोना गीत तू रो -रो गाएगा
दफना देंगे तुझको हम श्मशान में
'टिकने ना देंगे हम हिंदुस्तान में'

कुछ दिन और बाहर निकलना भारी है
जंग हमारी तुझसे घर से जारी है
घुसनें ना देंगे हम तुझे मकान में
'टिकनें ना देंगे हम हिंदुस्तान में'

आओ मिलकर ढूंढें कुछ हल इसके
काट फैंकदो उड़ने वाले पर इसके
फिर से खिलेंगे गुल "सागर" गुलदान में
'टिकनें ना देंगे हम हिंदुस्तान में'

डॉ.नरेश कुमार "सागर"
गांव- मुरादपुर, सागर कॉलोनी,
जिला -हापुड (उत्तर प्रदेश)

जीव्हा ,नैना, कर्ण चाहते हैं तखलिया

ऊई मां... मम्मी टीवी बंद कर दो ना। जो कीचड़ के तीर जो आ रहे हैं। काहे अपना बीपी बढ़ा रहे हो।

नंनदिया जी की बेटी ने अपने मां पिलपिलीबाई से कहती है.

कितना हल्ला है टीवी पर हर चैनलों पर ।लोग चिल्ला रहे हैं । हर कोई अपनी रोटी सेक रहा है।

नंनदिया जी की बेटी बोली- ''पूछता है भारत इतना चिल्लाने की जरूरत क्या है ?'' फिर जोर जोर से हंसने लगी .. कोई ट्विटर पर मैसेज कर रहा है ।यहां हर चौनल चिल्ला रहा है कितना हल्ला है हर पक्ष में ।

''फंस और थक चुका है आम आदमी''। जिसको अंदरूनी किसी भी बात की खबर नहीं ।जो सामने आ रहा है सुन लेता है ।देख लेता है। बस बोल नहीं पाता। जुबां पर ताला लगा है।''बोलेगा तो फंसेगा।

टीवी देखते देखते पिपलिबाई का बीपी हाई होता जा रहा था गया। नंनदिया जी भी समझा रहे थे बंद कर दे टीवी।सामने वो प्रश्न दाग रहा था।

पहले क्यों नहीं किया? क्यों हुआ? कैसे हुआ? ऐसा क्यों नहीं हुआ? वैसा क्यों नहीं हुआ ?अभी मानसून तो आया नहीं था छींटाकशी शुरू हो चुकी थी ।यह ऐसा मानसून है जिसके बादल काले घनियारे, मौज में, मस्ती में ,कहीं भी ,जहां दिल करे ,छीटों से, अपनी बूंदों से समाज का रोम-रोम तर कर देते हैं। फिर इस कीचड़ में गोते लगाता रहता है आम वोटर।

यह अक्सर नाश्ते के वक्त ,दिन के खाने के वक्त, रात के खाने के वक्त नमक मिर्च बढ़ाते हैं। जिससे खाने वाले को चटपटे स्वाद का एहसास होता है।

दूसरी तरफ से बरसता है तारीफों का मानसून । जिसकी तीव्रता इतनी तेज होती है तारीफों की बाढ़ आ जाती है जिसमें बांध बनाने का हक किसी भी अधिकारी को नहीं होता। अब बाढ़ आई है आपदा है। उसे समेटना, संभालना भी कठिन होता है इसमें फंसती है पब्लिक। अब तक काफी उबरना सीख चुकी जनता फिर से गोते लगाती है बाढ़ में।

जिव्हा ,नैना और कर्ण इन तीनों की स्थिति हालाते नजर बहुत खराब हो चुकी है। एक दूसरे पर तानाकशी का मुजरा देखते देखते।

कर्ण सुनने की क्षमता खोने लगते हैं ।

नैना पत्थरा जाते हैं , अपने भाव खो चुके होते हैं। ना उन्हें खुशी का एहसास होता है ना गम का । शरीर की धमनियों के मरुस्थल में दूर-दूर तक मीलों तक फैला होता है सन्नाटा।

फिर मंच पर गीत बनकर उभरने की उत्सुकता होती है भावनाओं की, जज्बातों की जिन्हें मौका नहीं मिलता।

जिव्हा कुछ कह नहीं पाती। कुछ कहेगी ,तो पकड़ने वाले बहुत हैं।

कुछ मुजरा देखने आते हैं। कुछ समाज में लुढ़कते बैगन की भूमिका व दो मुंहें सांप की भूमिका निभाते हैं। कुछ अपनी बात रखने में सक्षम नहीं है ।सबको अपनी कुर्सी का डर है।

जो सम्मानित है, वह छोटी बात करके यानी सामाजिक कुरीतियों ,राजनीतियों के मानसून पर कुछ भी कहना नहीं चाहते ।उनका मानना है जो कुर्सी पर बैठ गया उसको यह ''लक्ष्मण रेखा'' पार नहीं करनी चाहिए। ऐसे प्रश्न उठाने से वह छोटे हो सकते हैं। सबकी नजर में गिर सकते हैं। और हम साफ-सुथरे हैं ऐसे कीचड़ में भीगकर फिसलना क्यों।

हालात तो यह पैदा हो चुके हैं कि जिव्हा, नैना, कर्ण सब चाहते हैं.तखलिया... तखलिया... तखलिया

बस एक प्रश्न उठता है अगर नामी लोग प्रश्न नहीं उठाएंगे तो आम जनता की सुनेगा कौन?

सौम्या दुआ
हल्द्वानी नैनीताल

“ कुछ मैं कहूं कुछ तुम सुनो” काव्य संग्रह

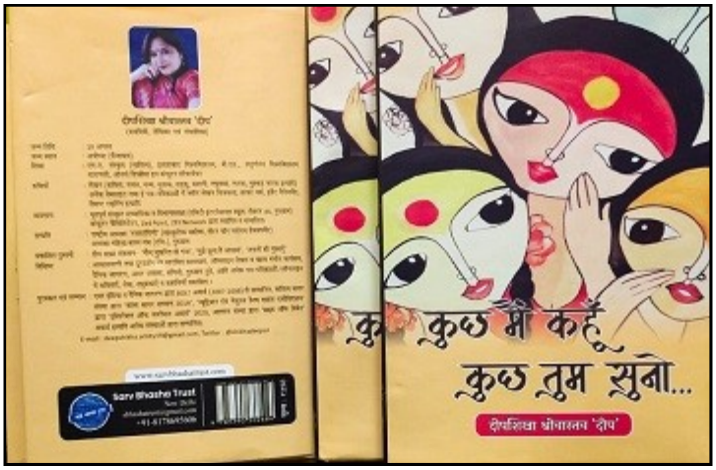

“कुछ मैं कहूं कुछ तुम सुनो” काव्य संग्रह ६० कविताओं का सतरंगी गुलदस्ता है। जिसमें काव्य के विविध रंग परिलक्षित होते हैं। जैसे ही पुस्तक मेरे हाथ में आई इसका खूबसूरत कवर मैं देखती ही रह गई, शीर्षक इतना खूबसूरत भी हो सकता है, आंखें बंद करके एक पल सोचती रही। “कुछ मैं कहूं कुछ तुम सुनो” क्या बात है! कवयित्री का अभिप्राय है कि“

मैं जो कुछ कहना चाह रही हूं उसे तो आप सुनो ही , साथ में उसके निहितार्थ को भी सुनो और गुनो ।
काश दुनिया में ऐसा होता, लोग सिर्फ कही गई बातें ही नहीं बल्कि उसके अभिप्राय को भी समझते,सुनते और गुनते। शायद इसी आशय को मन में रखकर कवयित्री ने यह इतना सुंदर शीर्षक पुस्तक को दिया है।

मैं सर्वप्रथम प्रिय बहन दीपशिखा श्रीवास्तव जी को तहे दिल से बधाई देना चाहती हूँ उनकी इस अनुपम श्रेष्ठ कृति के लिए।

प्रिय अनुजा दीपशिखा श्रीवास्तव “दीप” सहज, सरल,सौम्य आत्मविश्वास से लवरेज युवा कवियत्री हैं, वो जैसा देखती हैं हैं बिल्कुल वैसा ही लिखती हैं। मैं समझती हूँ एक सच्चे कलमकार की यही पहचान है। जिस तरह से एक चित्रकार किसी भी चित्र को अपने रंग और तूलिका से जीवंत कर देता है उसी प्रकार एक साहित्यकार भी अपनी पैनी नजर एवं हृदय की पावन भावनाओं से शब्दों के द्वारा किसी भी घटना या विचार का जीवंत चित्रण प्रस्तुत करता है।

कवयित्री दीपशिखा श्रीवास्तव “दीप” की कविताओं को जब मैंने पढ़ा तो पाया उनकी दृष्टि समग्रता लिए हुए है। रचनाओं का संसार बहुत विस्तृत है, उनकी दृष्टि से कोई विषय अछूता नहीं रहा कहीं राष्ट्रप्रेम है ,कहीं देशद्रोहियों पर आक्रोश है ,कहीं संवेदना है, कहीं वेदना है, कहीं पीड़ा है, कहीं विज्ञान तो कहीं अध्यात्म।

कहीं बलात्कार की हृदय विदारक पीड़ा है, तो कहीं अनंत असीम आत्मिक प्रेम ।इनकी कविताओं में गजब का ठहराव और परिपक्वता है जो इनके काव्य संग्रह को सबसे अलग बनाता है ।

दीपशिखा श्रीवास्तव अपनी हर बात को पूरी मजबूती के साथ, शिद्दत से रखती हैं ।
राष्ट्रप्रेम की इससे सुंदर पंक्तियां और क्या हो सकती हैं-
‘दिल के लहू से लिख दूं कुछ लफ्ज तेरी शान में,
बस चाह अब इतनी सी है, हो हर जन्म हिंदुस्तान में।’

तिरंगे का अपमान लेखिका को बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं, आक्रोश के तेवर भी देखें --
‘तिरंगे को अब बलिदान नहीं है अरिमुंड चाहिए,
शौर्य की हर बूंद को ,रिपु रक्त का कुंड चाहिए।’

अपनी राष्ट्रभाषा से प्रेम कवयित्री के प्रबल भारतीय संस्कारों का परिचायक है, कितनी खूबसूरत पंक्तियां--
‘हिंदी सिर्फ भाषा नहीं हिंदुस्तान की अभिलाषा है,
रसों की चासनी में खुली भावों का बताशा है।’

उनकी रचनाओं में जीवन दर्शन और मनोविज्ञान भी परिलक्षित होता है जीवन का कितना सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है इस रचना में-
‘एक ही जीवन में अनेकों किरदार,
जीने की तमन्ना में इंसान हर रोज-
अपेक्षाओं से अपेक्षाओं तक का सफर जीता है,
फिर भी उसकी जिंदगी का कोई न कोई पन्ना रीता है!’

कवयित्री का हृदय सागर समान प्रेम से आप्लावित है , आसमान सा असीम है ,पवन के वेग की तरह प्रवाहमान है तभी तो पूछती हैं--
‘तुम्हें जानना है ना मेरे प्रेम की हद को,
तो बताओ कौन सा पैमाना है तुम्हारी जद में।’
और भी पंक्तियां देखें प्रेम से अप्लावित-‘--
‘प्रिय क्या समझ सके तुम मेरे नैनों की भाषा,
समझे क्या , मेरे मन की अभिलाषा।’

सभी कविताएं एक से बढ़कर एक हैं गीत अब कोई नया सुनाओ ,लक्ष्य भेद, हौसला, पहचान, जय मातृभूमि, जय जय जय हिंदुस्तान, सौगंध मातृभूमि की ,हिंदुस्तान मेरी जान ,प्रेम की हद, दूसरा बसंत ,प्रेम की परिभाषा, हृदय कामना , कैसे खेलूं होली ,करवा चौथ, सफरनामा, कसूरवार कौन, तेरी खट्टी मीठी यादें, बिखर गए एहसास, माँ ,बाबुल की चिड़िया, यक्ष प्रश्न, इंतजार, बवाल, मुसाफिर ,इत्यादि सभी कविताएँ जीवन का अनुभव, जीवन का उतार-चढ़ाव बयां करती हैं। ज्यादातर रचना है उन्होंने जीवन के अनुभव से रची बुनी हैं।

अंत में मैं यही कहना चाहूँगी कि देश में अपनी एक सार्थक पहचान बना चुकी कवयित्री दीपशिखा श्रीवास्तव जी की कविताएँ पाठक को बाँधे रखती हैं, रचनाओं की भाषा शैली सरल और बोधगम्य है, संप्रेषण की सतह पर सभी कविताएँ खरी उतरती हैं, मैं तहेदिल से बधाई देना चाहती हूँ प्रिय अनुजा दीपशिखा श्रीवास्तव जी को, उनके उज्जवल भविष्य की दिल से कामना करती हूँ। मैं उन्हें कोटि-कोटि हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ कि उनका यह काव्यसंग्रह हिंदी साहित्य जगत में बहुत लोकप्रिय होगा, और एक विशेष पहचान अवश्य बनाएगा।

वीणा अग्रवाल
गुरुग्राम

विश्वनाथ त्रिपाठी विवाद : 'व्योमकेश दरवेश' और 'पाखी' का संदर्भ

हिंदी के वरिष्ठ आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी को लेकर साहित्य जगत और सोशल मीडिया में काफी हलचल पिछले दो-तीन वर्षों में रही है । इस हलचल के केंद्र में दो बातें हैं द्य पहली, उनके गुरु और हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी से सम्बन्धित विश्वनाथ जी की प्रसिद्ध संस्मरणात्मक पुस्तक 'व्योमकेश दरवेश' के सम्बन्ध में है । और दूसरी, 'पाखी' पत्रिका में छपे साक्षात्कार में उनकी सौन्दर्यविषयक स्थापनाओं के सन्दर्भ में है, जिसे चयनात्मक रूप से गलत तरीके से छापकर विश्वनाथ जी का चरित्रहनन किया गया, न सिर्फ सोशल मीडिया पर बल्कि 'दैनिक जागरण' अखबार में भी ।

बहरहाल, 'पहली बात' के सम्बन्ध में दो वर्ष पहले 'दैनिक जागरण' में अनंत विजय ने इस संबंध में एक लेख लिखा था । उन्होंने 'पाखी' पत्रिका के उपर्युक्त अंक में छपे विश्वनाथ जी के साक्षात्कार का संदर्भ देते हुए यह कहा है कि 'व्योमकेश दरवेश', जो काफी प्रशंसित और पुरस्कृत पुस्तक रही है, में बेहद तथ्यात्मक भूलें की गयी हैं इसलिए यह पुस्तक उस सम्मान योग्य नहीं है, जो इसे मिला । इस बहाने उन्होंने मार्क्सवादी विचारधारा और उससे जुड़े सभी हिंदी रचनाकारों को लपेटा और आयातित विचारधारा का आग्रही बताया ।

साक्षात्कार लेने वालों में अल्पना मिश्र भी थीं, जो हजारी प्रसाद द्विवेदी के भाई की पौत्री हैं । साक्षात्कार के आरम्भ से ही अल्पना मिश्र विश्वनाथ जी पर नाराज-सी दिखती हैं और बारम्बार 'व्योमकेश दरवेश' में हुई तथ्यात्मक भूलों की ओर ध्यान दिलाती हैं, मसलन हजारी प्रसाद द्विवेदी की माँ का नाम, द्विवेदी जी के गाँव का नाम, उनकी पुत्रियों के निधन का कारण आदि । अल्पना मिश्र ने यह शिकायत भी की कि उन्होंने विश्वनाथ जी से कई बार मिलने की असफल कोशिश की ।

अनंत विजय ने अपने लेख 'सवालों के घेरे में 'व्योमकेश दरवेश'' में यह प्रश्न उठाया है कि भले ही हिंदी के बड़े मार्क्सवादी आलोचक नामवर सिंह ने 'व्योमकेश दरवेश' को अपनी पुस्तक 'दूसरी परम्परा की खोज' से बेहतर और अप्रतिम पुस्तक बताया हो, लेकिन नामवर सिंह को हजारी प्रसाद द्विवेदी के शिष्य होने के बाद भी उपर्युक्त तथ्यात्मक भूलें क्यों नहीं दिखीं । इसके बाद अनंत विजय यशपाल के उपन्यास 'झूठा सच' को साहित्य अकादमी न मिलने का विवाद सामने रखते हैं । वे विश्वनाथ त्रिपाठी जी के हवाले से लिखते हैं कि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने 'झूठा सच' को लेकर साहित्य अकादमी के तत्कालीन संयोजक हजारी प्रसाद द्विवेदी से यह शिकायत की थी कि इसमें जवाहर लाल नेहरू, जो अकादमी के अध्यक्ष भी थे, के लिए अपशब्दों का प्रयोग किया गया है । अनंत जी ने विश्वनाथ जी का कथन उद्धृत किया है – "अगर यह सच है तो अकादमी के अध्यक्ष और हिंदी के संयोजक दोनों पर धब्बा है यह घटना और 'मेरे नगपति मेरे विशाल' के लेखक को क्या कहा जाए जो 'अपने समय का सूर्य होने' की घोषणा करता है ।" आगे इस आधार पर अनंत विजय विश्वनाथ जी पर 'दिनकर' के प्रति पूर्वाग्रही होने का आरोप लगाते हैं । वे डी. एस. राव की पुस्तक 'फाइव डिकेड्स : अ शॉर्ट हिस्ट्री ऑफ साहित्य एकेडमी' के हवाले से यह लिखते हैं कि जब नेहरू ने जानना चाहा कि यशपाल को पुरस्कार क्यों नहीं मिला, तो हजारीप्रसाद द्विवेदी ने कहा कि 'झूठा सच' में नेहरू के लिए अपशब्दों का प्रयोग हुआ है । इस पर नेहरू कहते हैं कि यह कोई वजह नहीं होनी चाहिए पुरस्कार न देने के लिए, तो द्विवेदी जी उत्तर देते हैं कि यह एकमात्र कारण नहीं था और अन्य बेहतर किताबें भी थीं । अनंत विजय लिखते हैं कि 'व्योमकेश दरवेश' के दूसरे संस्करण में 'दिनकर' का नाम और 'अपने समय का सूर्य' वाली पंक्ति हटा ली गयी है । निष्कर्ष रूप में अनंत जी लिखते हैं कि यह दुर्भावन. ावश लिखा गया था, इसलिए तथ्य सामने आने पर अगले संस्करण में इसे हटा लिया गया ।

यह देखना दिलचस्प है कि जिस पंक्ति को अगले संस्करण में संशोधित किया गया उसमें सिर्फ 'दिनकर' के उल्लेख वाले अंश को ही हटाया गया, बाकी वाक्यांश ज्यों का त्यों है – "अगर यह सच है तो अकादमी के अध्यक्ष और हिंदी के संयोजक दोनों पर धब्बा है यह घटना।" यानी एक तो लेखक उसे निर्णयात्मक नहीं मानता, उसमें संदेह और कुछ संशोधन की गुंजाइश पहले ही छोड़ा रहता है और दूसरे, अपने आत्मीय गुरु और सम्माननीय प्रधानमंत्री तक को इस आरोप के सही होने की स्थिति में दोषी ठहराने को लेकर दृढ़ है। यह उसकी निष्पक्षता और दृढ़ता का प्रमाण है।

जो भी हो, कोई भी सजग लेखक अपनी पुस्तक में भूलों और त्रुटियों के ध्यान दिलाये जाने पर संशोधन करता ही है । कई बार लेखक राजनीतिक दबाव और आलोचना से बचने के लिए भी संशोधन करने को बाध्य होता है । विश्वनाथ जी ने 'व्योमकेश दरवेश' के दूसरे संस्करण की भूमिका में लिखा भी है – "समीक्षकों ने पुस्तक में पुनरुक्तियों की आलोचना की है ।...पुनः प्रकाशन के लिए ऐसे स्थलों को भरसक सुधार लिया गया है । तथ्यात्मक त्रुटियों को भी ठीक करने का प्रयास किया गया है ।" अजय पाण्डेय नाम के एक व्यक्ति ने हाल ही में जिक्र किया है कि कैसे विश्वनाथ जी से यह बताने पर कि आचार्य द्विवेदी का गाँव बलिया से पश्चिम नहीं पूरब है, विश्वनाथ जी ने इसका परिमार्जन अगले संस्करण में कर दिया । इसके बाद संदेह की गुंजाइश नहीं रह जाती कि जब भी अगला संस्करण आएगा और लेखक सक्रिय रहेगा तो निश्चय ही नए उठे विवादों को वह शमित करेगा । अभी भी, मेरे देखे, पुस्तक में कुछ वाक्य-रचना और शब्द-रचना संबंधी दोष रह गए हैं, जिनकी सूचना लेखक तक पहुंची होगी, ऐसी आशा की जा सकती है । इसलिए अल्पना मिश्र को भी विनम्रता से अपनी बातें या तो पहले ही रखनी चाहिए थीं, यदि वे अपने कुल-सम्बन्धी बातों के बारे में इतनी संवेदनशील हैं या फिर आक्रामक होने की बजाय संशोधन के लिए विश्वनाथ जी से निवेदन कर लें । आखिर वे इतने वरिष्ठ आलोचक ठहरे । न भी मिल पाएं, तो पत्र-व्यवहार या दूरभाष-व्यवहार कर लें । वैसे भी यह संचार-क्रान्ति का युग है ।

'दिनकर' और साहित्य अकादमी विवाद के सन्दर्भ में एक और

दिलचस्प घटना का उल्लेख विश्वनाथ जी ने उपर्युक्त पुस्तक में किया है । जैनेन्द्र द्वारा 'मुक्तिबोध' उपन्यास पर साहित्य अकादमी पाने हेतु एक सुन्दरी महिला के साथ द्विवेदी जी से मुलाकात का जिक्र है । और सम्मान समारोह में जैनेन्द्र के न आने पर 'दिनकर' का व्यंग्य बाण भी उल्लिखित है- "देखा हम लोगों ने नाक बंद करके इसे पुरस्कार दे दिया और यह बाज नहीं आया ।"

'दिनकर', नरेंद्र कोहली, हरिवंश राय बच्चन आदि लेखकों के प्रति पूर्वाग्रह का निष्कर्ष निकालकर और विश्वनाथ त्रिपाठी, नामवर सिंह जैसे समान विचारधारा वाले विद्वानों को एक तरफ कठघरे में खड़ा कर देश की वर्तमान राजनीति का ही जैसे उल्था किया जा रहा है । 'व्योमकेश दरवेश' में नामवर सिंह पर ही व्यंग्य करते हुए विश्वनाथ जी ने 'रस सिद्धांत' पुस्तक के विमोचन का नामवर द्वारा मजाक उड़ाने के संबंध में लिखा है- "तब आज के सर्वाधिक व्यस्त लोकार्पक साहित्यकार डॉ. नामवर सिंह ने ग्रन्थ-विमोचन का मजाक उड़ाया था ।"

इसी प्रकार नामवर सिंह और डॉ. नगेन्द्र सम्बन्धी घटना का जिक्र भी है कि कैसे नामवर की 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' को पुरस्कार दिलाने की मंशा डॉ. नगेन्द्र के योजना-कार्यान्वयन वाले व्यक्तित्व से पीछे रह गयी और अंततः पुरस्कार मिला नगेन्द्र की पुस्तक 'रस-सिद्धांत' को । नामवर ने आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पर दबाव बनाने की भी काफी कोशिश की थी, इसका भी जिक्र है । और यह सब इसके बावजूद कि नामवर विश्वनाथ जी के सतीर्थ, आचार्य द्विवेदी के ज्येष्ठ शिष्य और विश्वनाथ जी के बेहद आत्मीय रहे हैं । जाहिर है, विश्वनाथ जी ने भले ही पुस्तक के आरम्भ में विनम्रतापूर्वक यह स्वीकार किया है कि उन्होंने तटस्थता के साथ नहीं लिखा है और कोई अपने गुरु के जीवन के बारे में कैसे तटस्थ होकर लिख सकता है, लेकिन व्यवहार में उन्होंने पर्याप्त तटस्थता और ईमानदारी बरतने का प्रयास किया है ।

रामविलास शर्मा अपनी 'ध्वंसकारी(मत्सरी) आलोचना' के लिए प्रसिद्ध रहे हैं । 'निराला की साहित्य साधना' तीन खण्डों में थी और खंड पर पुरस्कार देने का कोई नियम नहीं था । निर्णायक-मंडल के दो सदस्यों बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' और सुमित्रानंदन पन्त पर इस पुस्तक में काफी 'कुख्यात और निद्रानाशक' बातें लिखी गयी थीं । लेकिन इन दोनों सदस्यों ने महान उदारता दिखाते हुए इसी पुस्तक को पुरस्कार हेतु प्रस्तावित किया ।

बहरहाल, ऐसे कई किस्से वर्णित हैं जिस पर लोग आहत होकर सवाल उठा सकते हैं और हो सकता है कि लेखक सफाई पेश करने की बजाय संशोधन ही कर दे । निश्चय ही यह लेखक का विवेकाधिकार है । यह आश्चर्य की बात है कि क्या कुछ अनज. ानी तथ्यात्मक भूलों से एक भरी-पूरी किताब का पूरा विजन ही नष्ट हो जाता है, जैसा कि अनंत विजय प्रतिपादित कर रहे हैं ? मेरे ख्याल में, उनकी पाठ-विधि में गंभीर खामियां हैं ।किसी पुस्तक को पुरस्कार उसके द्वारा स्थापित मूल्यों के लिए दिया जाता है, कुछ नया सृजित करने के लिए दिया जता है, जिससे हमारी परम्परा समृद्ध हो, न कि इसलिए कि वह कुछ विचित्र या नया-पुराना तथ्य बयान कर रही है। साहित्य का गंभीर अध्येता यह जानता है कि रचना तथ्य में या विषय में नहीं, वस्तु में निहित है और उसी के आधार पर रचना का मूल्यांकन करने की भारतीय परम्परा रही है, जिसे बाद में पश्चिम में भी आधुनिक चिन्तकों ने स्वीकारा ।

('दूसरी बात' की बात अगली कड़ी में)

डॉ. परम प्रकाश राय,
सहायक आचार्य,
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

प्रतीक्षा

सुनंदा का गठबंधन तो दसवीं में उसके नाना ने अपने मित्र के पोते के साथ कर दिया था पर गौना बारहवीं की परीक्षा के बाद ही होना निश्चित हुआ था। बारहवीं के परिणाम आने ही वाले थे और सुनंदा का मन अनेक आशंकाओं से घिरा था। सुनंदा एक होनहार बालिका थी और आगे पढ़ना चाहती थी। परन्तु पिता के गुजर जाने के बाद से ही उसकी माँ और वह नाना जी के घर पर रह रहे थे और उन्हीं पर निर्भर थे । नाना जी की अवस्था देखते हुए वह उनसे भी कुछ नहीं कह पा रही थी। पहले ही वे उन लोगों के लिए वृद्ध ावस्था में जूझ रहे थे।अंततः वह घड़ी आ ही गई,आज उसका गौना था।माँ के चेहरे पर एक सुकून था और नानाजी भी बहुत खुश थे। ईश्वर ने अनजाने में जो उतरदायित्व उन पर डाल दिया था ,आज वह उससे मुक्त होने वाले थे। बस एक सुनंदा थी जो अपने अनिश्चित भविष्य को लेकर चिंतित थी।

खैर उदास व बोझिल मन से उसकी विदाई हुई ।ससुराल आई और तब वह हक्की-बक्की रह गई जब उसके पति ने मुँह दि खाई स्वरूप उसके हाथ में दिल्ली विश्व विद्यालय का प्रवेश पत्र थमा दिया। उसे कल ही अपनी आगे की पढ़ाई के लिए दिल्ली जाना था। वह खुश भी थी और हैरान भी जब पति राहुल ने कहा कि "तुम अपनी पढ़ाई पूरी करो और फिर अपने ज्ञान सौरभ से मेरा आँगन महकाना, मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा।"आज भी जीवन की वे रुखट्टी मीठी यादें सुनंदा को रोमांचित कर देती हैं।

तरुणा पुण्डीर 'तरुनिल'
दिल्ली भारत

आज कहूँ मैं

हवा जरा इस ओर बहो ,पवन जरा इस ओर बहो
आज कहूँ मैं अपनी तुमसे और तुम अपनी कहो
तूने प्यार की बस्ती देखी टूटे नीड भी देखे हैं
हर गुलशन हर वीराने के तेरे पास तो लेखे हैं
कहाँ कहाँ हो आयी हो गंध की बोली में कहो
आज कहूँ मैं अपनी तुमसे .....
कर्तव्यों की कहपी में लिखा गया और मिटता रहा
लोक व्यवहार की चौखट में सदा ये जीवन घुटता रहा
खोल दिए हैं सारे झरोखे निर्बाध मेरा मन गहो
आज कहूँ मैं अपनी तुमसे .....
ख्वाबों के जंगल से चुन कर टहनी एक मैं लाई थी
छील छाल कर बड़े जतन से बंसी एक बनाई थी
रूठे सुर इस बांसुरी के बन सरगम कुछ पल रहो
आज कहूँ मैं अपनी तुमसे ......
संग तेरे मैं बह न पायी गिला न इसका करना तू
देर से आयी पर हूँ आई बाहों में भर लेना तू
जिस अग्नि में अंतस जलता बन हमदम तुम भी सहो
आज कहूँ मैं अपनी तुमसे और तुम अपनी कहो

शोभना श्याम

नारी

नारी, तुम इतना क्यों सहती हो...
क्यों दो धारे में बहती हो...
तेरे आंचल में गंगा जल...
मन में तेरे अमृत है...
पावनता सी माया तेरी...
कोमल सहृदय काया तेरी...
तन - मन के इस बंधन को,
तर्पण करदो अर्पण करदो ।
नारी...
गुमसुम सी तुम सोचमयी हो...
मीरा सी तुम भक्तिमयी हो...
राधा सी तुम चहक छबीली...
मन की धारो में बहती हो...
क्यों तुम इतना सहती हो?
नारी...
पग - पग पर सब कांटे हैं...
छेत्र फूलों ने बांटे हैं...
प्यार तो बाजार नहीं है...
नहीं - नहीं व्यापार नहीं है...
मन संताप क्यों रखती हो?
नारी...

डॉ. मीरा त्रिपाठी पाण्डेय

जूही की कली

रमन बहुत देर से मीता को खिड़की के पास खड़ा हुआ देख रहा था । मीता को नहीं पता था कि रमन आ चुका है। वह बाहर पड़ोसी काकी के घर में होने वाले हंगामे को देख रही थी । काकी का संयुक्त परिवार था । सावन का महीना शुरू होने का मतलब सब ननद और बेटियों का जमघट जुड़ना । जब से शादी होकर इस घर में आई तभी से वह देखती आ रही थी । ससुराल में वह अकेली थी । सासा ससुर पति और वह । भाग्य वश उसके भी कोई संतान नहीं थी । मायेके में सब थे ।

सोचते सोचते पता ना कब अपनी जिन्दगी के उन पलों में पहुँच गयी गुजरे पल स्वर्णिम पल थे उसकी जिन्दगी के । उसका संयुक्त परिवार था । दादी दादा काका काकी बुआ उसकी बड़ी दो बहने दो भाई काका की दो बेटियां और एक बेटा । वह दादी की परी थी सब बच्चे दादी से लड़ते थे कि मीता ही तुम्हें प्यारी है। सावन के महीने में दादी आंगन में झूला डाल देती थी और उस पर छोटा खटोला अटका देती सब भाई बहन उस पर लद जाते थे । जैसे जैसे सब बड़े हो रहे थे उतने ही शरारती हो रहे थे । बुआ की शादी हो गयी । सब बच्चे खूब रोये । बुआ की जान थे सब बच्चे । पहला सावन था शादी के बाद बुआ का । पापा और काका दोनों बुआ की विदाई कराने गये पर आते समय कार दुर्घटना ग्रस्त होगयी और पापा और काका बुआ तीनों की विदाई हो गयी । जब घर में पता लगा तो हाहाकार मच गया । दादा और दादी का बुरा हाल था । समय बीत रहा था जिस सावन में मां काकी हरियाली तीजों पर सोलह श्रंगार करती थी वहाँ सफेद लिवास में आगयी । इस गम को दादा दादी सहन ना कर पाये और परलोक सिधार गये । सब बहनों की भी शादी हो गयी । बस इतना अच्छा था मां काकी का साथ नहीं छूटा । व्यापार भी मां ने संभाला । अभी पिछले दिनों उसके भाई की शादी भी होगयी । सोच रही थी पता ना इस नयी दुल्हन को हम ननदें पसंद भी होगी या नहीं ।

नमन ने आवाज दी मीता मैं कितनी देर से तुम्हें आवाज देरहा हूँ कहां खोई हो तुम्हारी नयी भाभी का फोन है। मीता ने फोन लेकर कहा हलो-- हां भाभी उधर से आवाज आयी दीदी सब दीदी तीजो पर आ रही हैं राखी तक रूकेगी आप कब आ रही हो । मीता एक दम बोली तुम अपने मायेके नहीं जाओगी । भाभी ने कहा दीदी अब मेरा घर पहले है मै आप सब लोगो के साथ झूला झूलूगी । जब और देवरानी आ जायेगी मै तब जाऊंगी अपने मायेके ।

दूर कहीं गाना बज रहा था “ अबके बरस भेज भैया को बाबुल सावन में लीजो बुलाय रे “ बाबुल तो नहीं थे पर भाई भाभी ने उस उस रिक्तता को भर दिया था । नमन ने कहा अब तो मुस्करा दो मेरी जूही की कली ।

डा.मधु आंधीवाल
अलीगढ़

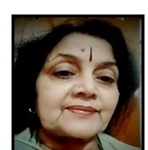

हिन्दी की गूँज

To advertise in Japan's first Hindi language magazine, read by the diaspora across the world contact our exclusive international Advertising and Marketing representatives. Special introductory incentives available to new advertisers

.

जापान की पहली हिंदी भाषा की पत्रिका के विज्ञापन के लिए, दुनिया भर में प्रवासी द्वारा पढ़ी गई कृपया हमारे विशेष अंतर्राष्ट्रीय विज्ञापन और विपणन प्रतिनिधियों से संपर्क करें। विशेष परिचय नए विज्ञापनदाताओं को उपलब्ध प्रोत्साहन

ADLINK INTERNATIONAL

(1989) MEDIA GROUP

GLOBAL PRINT, BROADCAST OUTDOOR & DIGITAL ADVERTISING

SERVING YOU SINCE 1989

16 Upper Woburn Place, London WC1H 0AF, England

www.adlinkinternational.com

Email: media@adlinkinternational.com

Contact: Mr Shamlal Puri

WORLD HUMAN RIGHTS ORGANIZATION

WHRO

"Freedom means the supremacy of human rights everywhere. Our support goes to those who struggle to gain those rights or keep them. Our strength is our unity of purpose. To that high concept there can be no end save victory."

WORLD HUMAN RIGHTS ORGANIZATION

अंतरराष्ट्रीय ई पत्रिका